आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

G20 भारत 2023 INDIA

रेशम वाणी

अंक : 57 (जून, 2023)

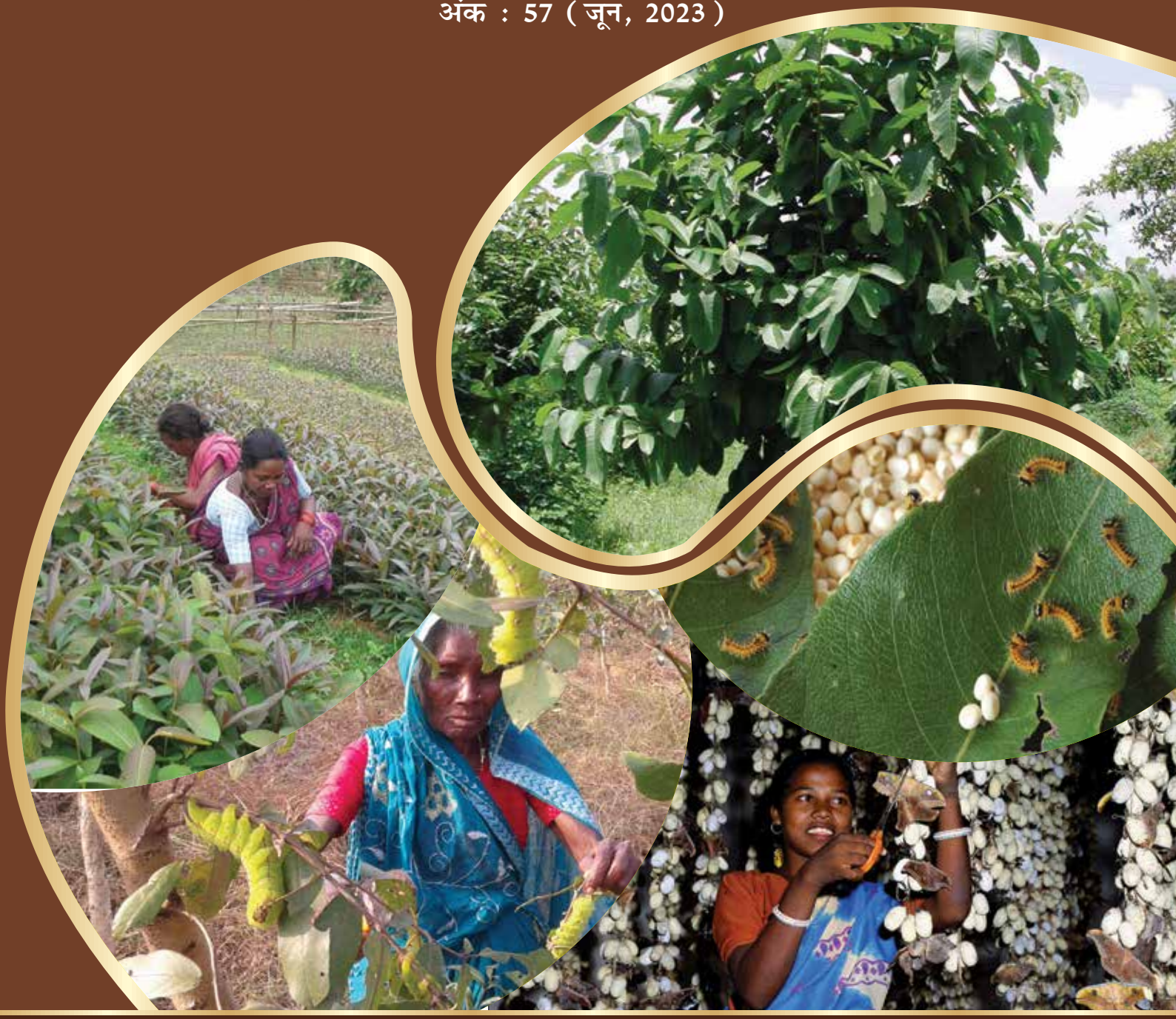

"सोंधी सुगंध, मीठी सी भाषा, गर्व से कहो हिंदी है मेरी भाषा"

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
सेंटर ऑफ एक्सीलेंस
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
पिस्का नगड़ी, राँची - 835303, झारखण्ड

प्रधान सम्पादक की कलम से...

रेशम वाणी, अंक–57 (जून, 2023) सुधी पाठकों को समर्पित करते हुए मैं अप्रतिम प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। पत्रिका के माध्यम से हम संस्थान की अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने में सफल हुए हैं।

तसर उद्योग वन आधारित है, जो देश के लाखों आदिवासी ग्रामीणों को रोजगार प्रदान करता है। यह संस्थान देश के 10 से अधिक राज्यों की तसर आधारित आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा लगभग 3.5 लाख परिवार, विशेष रूप से महिलाओं और जनजातियों की आजीविका में अभिवृद्धि करने के लिए सतत् नूतन अनुसंधान एवं विकास कार्यों का कार्यान्वयन कर रहा है।

संस्थान अपनी अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ाते हुए राजभाषा के क्षेत्र में भी अपने दायित्वों के निर्वहन के प्रति प्रतिबद्ध है। इसी प्रतिबद्धता को साकार रूप देते हुए संस्थान द्वारा 28 जनवरी, 2023 को ''समग्र रेशम उत्पादन : चुनौतियाँ एवं भावी रणनीति'' विषय पर राष्ट्रीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में हिन्दी में प्राप्त 89 शोध–पत्रों ने यह प्रत्यक्ष रूप से स्थापित किया कि विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में भी हिन्दी अपने कदम दृढ़ता के साथ बढ़ा रही है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि प्राप्त शोध–पत्रों में से लगभग 70 प्रतिशत शोध–पत्र हिन्दीतर भाषी वैज्ञानिकों/शोधार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए। यह हिन्दी के स्वर्णिम भविष्य को इंगित करता है।

रेशम वाणी में तकनीकी आलेखों का समावेश करते हुए जहाँ एक ओर हम वैज्ञानिक व तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं वहीं दूसरी ओर साहित्यिक सामग्री का समावेश भी पत्रिका की रोचकता को और अधिक बढ़ाने के उद्देश्य से करते हैं। हमें प्रसन्नता हो रही है कि रेशम वाणी के लिए हमें देश के हर भाग से रचनाएँ प्राप्त हो रही हैं। इससे प्रतीत होता है कि रेशम वाणी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। इस उपलब्धि का पूरा श्रेय हमारे प्रबुद्ध व सहृदय रचनाकारों को जाता है जिसके लिए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सभी के सहयोग से हम पत्रिका की निरंतरता को बनाये रखेंगे । पत्रिका का प्रसार अधिक–से–अधिक हो, इस उद्देश्य से रेशम वाणी पत्रिका को राजभाषा विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट (www.rajbhasha.gov.in) के ई–पत्रिका पुस्तकालय के साथ ही संस्थान की वेबसाइट (www.ctrti.res.in) पर भी अपलोड किया जाता है।

यह सर्वविदित है कि हर क्षेत्र में सुधार की गुंजाइश रहती है। रेशम वाणी भी इसका अपवाद नहीं है। अतः हमें आपके सुझावों की भी सदैव अपेक्षा रहेगी। पाठकों एवं रचनाकारों के सुझाव पत्रिका को और अधिक प्रभावी बनाने में हमारे लिए प्रेरणास्रोत होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ. के. सत्यनारायण)
निदेशक

रेशम वाणी
अंक : 57
(जून, 2023)

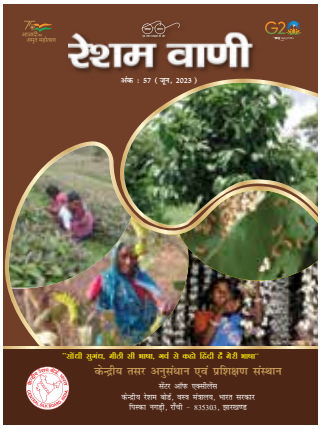

प्रधान सम्पादक
- डॉ. के. सत्यनारायण
  निदेशक

प्रबन्ध सम्पादक
- डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय
  वैज्ञानिक–डी

सम्पादक
- कमल किशोर बडोला
  सहायक निदेशक (रा.भा.)

सम्पादन सहयोग
- हिमांशु शेखर राय
  सहायक निदेशक (रा.भा.)

शब्द संसाधन
- सिकन्दर रविदास
  आशुलिपिक, ग्रेड–I

छायांकन
- तिमिर अधिकारी
  वरिष्ठ कलाकार

विभागीय पत्रिका
- निःशुल्क वितरण हेतु

सम्पर्क
सम्पादक, रेशम वाणी,
केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
पिस्का नगड़ी, राँची – 835303, झारखण्ड
ई–मेल : ctrtihindi@gmail.com
ctrtiran.csb@nic.in
वेबसाईट : www.ctrti.res.in

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार और मत रचनाकारों के निजी हैं उनसे संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय–सूची

भाषा और साहित्य

• भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श	यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी	2
• तकनीकी युग में पुस्तकों का महत्व	रंजना मिश्रा'	6

तकनीकी आलेख

• भारत में उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट बीज उत्पादन की स्थिति	ए. वेणुगोपाल	9
• तसर की सरिहन पारि–प्रजाति की वर्तमान स्थिति एवं इसके संरक्षण के उपाय	शांताकार गिरि	13
• ओक तसर रेशम कीटपालन एवं बीज उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव	ए.एस.वर्मा	15
• तसर क्षेत्र में विस्तार संचार कार्यक्रम (ईसीपी) के आयोजन हेतु दिशा–निर्देश	जगदज्योति बिकंदाकट्टी	18
• भारत में तसर संवर्धन और इसके विस्तार में कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका	विशाल मित्तल	21

विविधा

• धरती को कचरा बना रहा कचरा	रेखा शाह आरबी	17
• झारखण्ड राज्य के जल पुरुष पद्मश्री साईमन उराँव	नवीन कुमार सिन्हा	34

कहानी

• सनक	इंजी. आशा शर्मा	24
• घर वापसी	महेश कुमार केशरी'	28
• बारिश थमने के बाद	डॉ.देवांशु पाल'	29
• सौदा	राम नगीना मौर्य	31

लघु कथा

• सम्मान का पैगाम	अंकुर सिंह	8

व्यंग्य

• मंसूबा	श्यामल बिहारी महतो	36
• फेसबुक : निर्धनों का समृद्ध अखबार	ओम प्रकाश मंजुल	38
• हाय ! बेचारा पति !	गीता चौबे गूँज	40

काव्य-कोना

• मन के अंदर घना अंधेरा, बाहर तेज उजाला है।	पंकज कुमार पाण्डेय	5
• चाहता हूँ बचपन में लौट जाना...	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	30
• समय का घोड़ा	नीलोत्पल रमेश	35

भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श

यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी*

विषय बोधक शब्द (की वर्ड) : लिपि, ध्वनि, वाणी, लेखन, बोलना, समझना, लिखना, वांग्मय, नाद, भाषा, ब्राह्मी (देवनागरी हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी, डोंगरी, पंजाबी) (द्रविड़ लिपि' तेलुगू और कन्नड़) 'ग्रंथ लिपि' तमिल और मलयालम, लिपि का इतिहास क्रम, क्रमशः ब्राह्मी लिपि, सैंधव लिपि, वैदिक संस्कृत, संस्कृत, ब्राह्मी, प्राकृत, पाली, खरोष्ठी, कुटीलाक्षय और फिर कैथी आदि लिपि, दक्खिनी, देवनागरी, राजभाषा।

भारत की राजभाषा में लिपि विमर्श : भाषा हमारे विचारों, अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का मौखिक माध्यम है। भाषा की ध्वनियों को लिखने के लिए हम जिन चिह्नों का इस्तेमाल करते हैं, वही अभिव्यक्ति का लिखित स्वरूप उस भाषा की लिपि कहलाती है। लिपि का शाब्दिक अर्थ होता है–लिखित या चित्रित करना। मानव की बौद्धिक कृति लिपि मानव के प्रमुख आविष्कारों में से एक है। मानव–सभ्यता के विकास में वाणी के बाद लेखन का ही सबसे अधिक महत्व है। मानव के बोलने की शैली, एक दूसरे को समझने की समझ तथा लिखने की कला ही मानवों को पशुओं से श्रेष्ठ बना देती है। कोई भी लिपि अधिकार (शासन–सत्ता) से नहीं पनपी। दुनिया के सभी वांग्मय की समस्त लिपियां आम नागरिकों द्वारा रोपी गई हैं जिसकी फसलें उस भाषा का कल्पवृक्ष हैं आज भी। हम नाद, माहेश्वर सूत्र की परम्परा के वंशज हैं। भारत का इतिहास कहीं से भी कुरेद कर देखा जाये तो इतिहास अपने रसातल तक यही बार–बार कहेगा कि लाखों वर्षो में हजारों भाषाएं और सैकड़ों लिपियाँ बसी–उजड़ी पर किसी भी समुदाय की संपत्ति कोई भी भाषा नहीं रही कभी। कई भाषाओं की लिपि एक जैसी ही रही है पर परस्पर किसी एक भाषा ने किसी दूसरी भाषा को अस्तित्वहीन नहीं किया कभी। यूनेस्को के एक शोध के अनुसार 'जब एक लिपि विलुप्त होती है, तो उसके साथ–साथ एक पूरी संस्कृति विलुप्त हो जाती है, एक पूरा इतिहास विलुप्त हो जाता है।' भारत का पुरालेखीय इतिहास कहता है कि सभी भारतीय लिपि ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई हैं। लिपि के तीन मुख्य परिवार हैं–'देवनागरी लिपि' उत्तरी और पश्चिमी भारत जैसे हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी, डोगरी, पंजाबी आदि भाषाओं का आधार है। 'द्रविड़ लिपि' तेलुगू और कन्नड़ का आधार है। 'ग्रंथ लिपि' तमिल और मलयालम जैसी द्रविड़ भाषाओं का उपखंड है। लिपि का इतिहास क्रम क्रमशः ब्राह्मी लिपि, सैंधव लिपि, वैदिक संस्कृत, संस्कृत, ब्राह्मी, प्राकृत, पाली, खरोष्ठी, कुटीलाक्षय और फिर कैथी आदि लिपि आती है।

भारत की लिपि : विश्व की प्राचीनतम ज्ञात लिपि 'सिंधु लिपि' है। इसे 'सिंधु–सरस्वती लिपि' और 'हड़प्पा लिपि' भी कहते हैं। भारत में लिपि की उत्पत्ति हड़प्पा सभ्यता से अनुमानित की जाती है परन्तु वह लिपि पढ़ी नहीं जा सकी है अब तक। सिंधु घाटी की सभ्यता से सम्बन्धित छोटे–छोटे संकेतों के समूह को 'सिंधु लिपि' कहा गया। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि यह लिपि ब्राह्मी लिपि की पूर्ववर्ती है। यह लिपि बौस्ट्रोपफेडन शैली का एक उदाहरण है क्योंकि यह लिपि दायें से बायें ओर और बाएं से दाएं की ओर लिखी जाती थी। 'ब्राह्मी लिपि' एक प्राचीन लिपि है। भारत की समस्त वर्तमान लिपियां (अरबी–फारसी लिपि को छोड़कर) ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं। इस प्रकार भारतवंशी अधिकतर लिपियों की जननी ब्राह्मी लिपि है। तिब्बती, सिंहली, कोरियाई तथा दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों की बहुत–सी लिपियाँ ब्राह्मी से ही जन्मी हैं। धर्म की तरह लिपियाँ भी देशों और जातियों की सीमाओं को लांघती चली गईं। 5वीं सदी ईसा पूर्व से 350 ईसा पूर्व तक इसका एक ही रूप मिलता है लेकिन बाद में इसके दो विभाजन हो जाते हैं–उत्तरी धारा व दक्षिणी धारा। बायें से दायें लिखी जाने वाली ब्राह्मी लिपि की उत्तरी धारा में गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, शारदा और देवनागरी को रखा गया है और दक्षिणी धारा में तेलुगू, कन्नड़, तमिल, कलिंग, ग्रंथ, मध्य देशी और पश्चिमी लिपि शामिल हैं।

प्राचीन ब्राह्मी लिपि के उत्कृष्ट उदाहरण सम्राट अशोक द्वारा ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बनवाये गए शिलालेखों के रूप में अनेक स्थानों पर मिलते हैं। सिंधु लिपि के बाद 'खरोष्ठी लिपि' भारत की प्राचीन लिपियों में से एक है। यह दाएँ से बाएँ की तरफ लिखी जाती थी। कुल 37 वर्णों वाली इस लिपि में स्वरों का अभाव था, यहाँ तक कि मात्राएँ और संयुक्ताक्षर भी नहीं मिलते हैं। 'शाहबाजगढ़ी' और 'मानसेहरा' (पाकिस्तान) स्थित सम्राट अशोक के अभिलेख 'खरोष्ठी लिपि' में है। इसका इस्तेमाल उत्तर–पश्चिमी भारत की गांधार संस्कृति में किया जाता था और इसलिए इसको 'गांधारी लिपि' भी बोला जाता है। इस लिपि के उदाहरण 'प्रस्तर शिल्पों', 'धातु निर्मित पत्रों', 'भांडों', 'सिक्कों', 'मूर्तियों' तथा 'भूर्जपत्र' आदि पर उपलब्ध मिले हैं। 'खरोष्ठी लिपि' के प्राचीनतम लेख 'तक्षशिला' और चार (पुष्कलावती) के आसपास से मिले हैं, किंतु इसका मुख्य क्षेत्र उत्तरी पश्चिमी भारत एवं पूर्वी अफगानिस्तान था। 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के संस्थापक जेम्स प्रिंसेप (1799–1840) ने आधुनिक युग में पहली बार 'ब्राह्मी' और

'खरोष्ठी' लिपियों को पढ़ कर दुनिया को भारतीय भाषा की जड़ों की गहराई से परिचित कराया। 'गुप्त लिपि' को 'ब्राह्मी लिपि' भी बोला जाता है। यह गुप्त काल में 'संस्कृत' लिखने के लिए प्रयोग की जाती थी। 'देवनागरी', 'गुरुमुखी', 'तिब्बतन' और 'बंगाली'–'असमिया' लिपि का उद्भव इसी लिपि से हुआ है। 'गुप्त लिपि' का परिवर्तित रूप मानी जाने वाली 'कुटिल लिपि' को 'न्यूनकोणीय लिपि' तथा 'सिद्धमातृका' लिपि भी कहा जाता है। इस लिपि में अक्षरों के सिर ठोस त्रिकोण जैसे हैं लेकिन कहीं–कहीं ये आड़े–तिरछे, टेढ़े–मेढ़े या कुटिल ढंग से भी हैं। यह लिपि छठी शताब्दी से 9वीं शताब्दी तक प्रचलन में रही। आठवीं–नौवीं शताब्दी में कश्मीर में 'पश्चिमी ब्राह्मी' 'सिद्धमातृका लिपि' से 'शारदा लिपि' विकसित हुई। इसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी–पश्चिमी भाग में सीमित था। 'नागरी लिपि' की तरह 'शारदा लिपि' भी 'कुटिल लिपि' से निकली है। 'शारदा लिपि' के अनेक अभिलेख कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश आदि में मिले हैं। 'शारदा लिपि' का सबसे पहला लेख सराहा (चंबा, हिमाचल प्रदेश) से प्राप्त प्रशस्ति है और उसका समय दसवीं शताब्दी है। यह कश्मीरी और गुरुमुखी (अब पंजाबी लिखने के लिए प्रयोग किया जाता है) लिपि में विकसित हुआ। सिखों के दूसरे गुरु अंगद देव द्वारा विकसित 'गुरुमुखी लिपि' में पंजाबी भाषा में 'गुरु ग्रंथ साहिब' का संकलन हुआ है। 7वीं से 12वीं शताब्दी के दौरान कलिंग प्रदेश (ओडिशा का प्राचीन नाम) में जिस लिपि (उड़िया के प्राचीन रूप को लिखने के लिए) का प्रयोग किया गया था उसे 'कलिंग लिपि' के रूप में जाना जाता है। इस लिपि में भी तीन शैलियाँ देखने को मिलती हैं। प्रारंभिक लेखों में मध्यदेशीय और दक्षिणी प्रभाव देखने को मिलता है। अक्षरों के सिरों पर ठोस चौखटे दिखाई देते हैं। आरम्भिक अक्षर समकोणीय हैं। लेकिन बाद में कन्नड़–तेलुगू लिपि के प्रभाव के अंतर्गत अक्षर गोलाकार होते नजर आते हैं। 11वीं शताब्दी के अभिलेख नागरी लिपि के हैं। पोड़ागढ़ (आंध्र प्रदेश) से नल वंश का (एकमात्र उपलब्ध शिलालेख) अभिलेख मिला है, उसके अक्षरों के सिरे वर्गाकार हैं। दक्षिण भारत की प्राचीन लिपियों में एक 'ग्रंथ लिपि' है। 'तमिल'–'मलयालम' 'तुलु' व 'सिंहल' आदि लिपियों का विकास 'ग्रंथ लिपि' से हुआ है। दक्षिण भारत (तमिलनाडु) के पल्लव, पांडव एवं चोल शासकों ने ग्रंथ लिपि का विकास किया। इस लिपि का एक और संस्करण 'पल्लव ग्रंथ', पल्लव लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता था, इसलिए इसे 'पल्लव लिपि' भी कहा जाता था। कई दक्षिण भारतीय लिपियाँ जैसे कि बर्मा की 'मोन लिपि', इंडोनेशिया की 'जावाई लिपि' और 'मेर लिपि' इसी संस्करण से उपजी हैं। महाबलीपुरम् में धर्मराज रथ पर ग्रंथ लिपि में विवरण अंकित हैं। राजसिंह द्वारा बनवाए गए कैलाश मंदिर पर उत्कीर्ण शिलालेख, 'ग्रंथ लिपि' में ही हैं। 'तमिल' और 'मलयालम' भाषा को लिखने में 'वट्टेलुतु लिपि' का उपयोग किया जाता था। इस लिपि पर ब्राह्मी लिपि का बहुत प्रभाव है और कुछ इतिहासकारों का कहना है कि इसका विकास ब्राह्मी लिपि से ही हुआ है। 'तेलुगू' एवं 'कन्नड़' इन दोनों लिपियों का उद्गम स्रोत एक ही है और चालुक्य कालीन 'हलेबिड शिलालेख' (कर्नाटक) इसका प्राचीनतम् साक्ष्य है। बाद में यह लिपि स्वतंत्र रूप से विभाजित हो गई 'तेलुगू लिपि' एवं 'कन्नड़ लिपि' में। 'कदंब लिपि' इसे 'पूर्व–प्राचीन कन्नड़ लिपि' भी बोला जाता है। इसी लिपि से 'कन्नड़' में लेखन का आरम्भ हुआ। यह कलिंग लिपि से लगभग मिलती–जुलती है। इसका इस्तेमाल 'संस्कृत', 'कोंकणी', 'कन्नड़' और 'मराठी' लिखने के लिए किया जाता था। 'तमिल लिपि' भारत और श्रीलंका में तमिल भाषा को लिखने में प्रयोग किया जाता था। यह ग्रंथ लिपि और ब्राह्मी के दक्षिणी रूप से विकसित हुआ। यह शब्दावली की भाषा है न कि वर्णमाला वाली। इसे बाएं से दाएं लिखा जाता है। 'सौराष्ट्र', 'बडगा', 'इरुला' और 'पनिया' आदि जैसी भाषाएं तमिल में लिखी जाती हैं। 'शाहमुखी लिपि' सूफियों द्वारा चलाई गई 'ईरानी लिपि' का 'पंजाबी' संस्करण है। अक्षरों में तोड़–मोड़ कर हेमाद्रि ने 'मोडी लिपि' शुरू किया। अक्षरों में तोड़–मोड़ के कारण इसे 'मोडी लिपि' कहा गया। 1950 से पहले मराठी को इसी लिपि में लिखा जाता था।

देवनागरी लिपि : 'ब्राह्मी लिपि' से 'नागरी लिपि' का विकास हुआ। पहले इसे 'प्राकृत' और 'संस्कृत' भाषा को लिखने में उपयोग किया जाता था। इसी लिपि से ही 'नंदिनागरी', 'देवनागरी' आदि लिपियों का विकास हुआ है। कई अनुसंधान इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि इस लिपि का विकास प्राचीन भारत में पहली से चौथी शताब्दी में गुजरात में हुआ था। बायें से दायें की ओर लिखी जाने वाली 'देवनागरी लिपि' अत्यंत व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक लिपि है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खींची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) इसे 'शिरोरेखा' कहते हैं। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इसमें ध्वनि एवं अक्षरों का उत्कृष्ट समन्वय होता है। इससे वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल 'आइपीए लिपि' है। भारत के संविधान में देवनागरी लिपि को मान्यता प्रदान की गई है। 'संस्कृत', 'पालि', 'हिंदी', 'मराठी', 'कोंकणी', 'सिंधी', 'कश्मीरी', 'डोगरी', 'खस', 'नेपाली' ('अन्य नेपाली भाषाएं'), 'ताम्र भाषा', 'गढ़वाली', 'बोडो', 'अंगिका', 'मगही', 'भोजपुरी', 'मैथिली', 'संथाली' आदि भाषाएँ 'देवनागरी लिपि' में लिखी जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थितियों में 'गुजराती', 'पंजाबी', 'बिष्णुपुरिया मणिपुरी', 'रोमानी' और 'उर्दू' भाषाएं भी देवनागरी में लिखी जाती हैं। भारतीय और कुछ विदेशी भाषाओं द्वारा लिखी

जाने वाली यह विश्व की सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली लिपियों में से एक है। भारत की 'बांग्ला', 'गुजराती', 'गुरुमुखी' आदि कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती–जुलती हैं। कम्प्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों का परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है। भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं (उर्दू को छोड़कर) पर उच्चारण व वर्ण–क्रम आदि देवनागरी के ही समान हैं क्योंकि वो सभी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं। इसलिए इन लिपियों को परस्पर आसानी से लिप्यंतरित किया जा सकता है। इस लिपि में विश्व की समस्त भाषाओं की ध्वनियों को व्यक्त करने की क्षमता है। यही वह लिपि है जिसमे संसार की किसी भी भाषा को रूपांतरित किया जा सकता है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता : देवनागरी लेखन की दृष्टि से सरल, सौंदर्य की दृष्टि से सुन्दर और वाचन की दृष्टि से सुपाठ्य है। भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग 'हू–ब–हू' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है, जब तक कि उनका कोई खास मानकीकरण न किया जाये, जैसे आइट्रांस या आइएएसटी। इसमें कुल 52 अक्षर हैं, जिसमें 14 स्वर और 38 व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर–व्यंजन, कोमल–कठोर, अल्पप्राण–महाप्राण, अनुनासिक–अन्तस्थ–उष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं।

- एक ध्वनि–एक सांकेतिक चिह्न एक सांकेतिक चिह्न एक ध्वनि।
- स्वर और व्यंजन में तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक क्रम–विन्यास, वर्णों की पूर्णता एवं सम्पन्नता, उच्चारण, लेखन और मुद्रण में एकरूपता, स्पष्टता।
- रोमन, अरबी और फारसी में हस्तलिखित और मुद्रित रूप अलग–अलग हैं।
- देवनागरी लिपि सर्वाधिक ध्वनि चिह्नों को व्यक्त करती है।
- लिपि चिन्हों के नाम और ध्वनि में कोई अंतर नहीं (जैसे रोमन में अक्षर का नाम 'बी' है और ध्वनि 'ब' है)।
- मात्राओं का प्रयोग, अर्ध अक्षर के रूप की सुगमता।

कैथी लिपि : पाँचवीं–छठी शताब्दी से शुरू होने वाली और फिर प्रशासनिक गतिविधियों के लिए कैथी लिपि बीसवीं शताब्दी के पहले दशक तक अलग–अलग समयों और जगहों पर जनलिपि, व्यापारिक लिपि, राजकीय लिपि और न्याय प्रणालिक लिपि के रूप में प्रचलित, समृद्ध और व्यावहारिक रही है। नियमित लेखन, साहित्यिक रचना, वाणिज्यिक लेन–देन, पत्राचार और व्यक्तिगत रिकॉर्ड रखने के लिए इस लिपि का उपयोग किया जाता था। एक धर्मनिरपेक्ष लिपि होने के बावजूद कैथी का उपयोग साहित्यिक और धार्मिक पांडुलिपियों को लिखने के लिए किया जाता था। इसकी लोकप्रियता की एक बड़ी वजह इसकी सुगमता थी। गुप्त काल में 'कैथी लिपि' राज लिपि थी। सन् 1540 ईसवीं में शेरशाह सूरी (उत्तर भारत) ने कैथी भाषा और लिपि को अपने शासन की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया था। शेरशाह सूरी के शासन काल में व्यापारिक दृष्टिकोण से कैथी लिपि में मुद्राएं भी ढ़लवाई गई थीं। 19वीं सदी (ब्रितानिया हुकूमत तक) बिहार में आधिकारिक लिपि के रूप में यह मानित थी। सन् 1854 ईसवीं में विद्यालयों में देवनागरी के मुकाबले में तीन गुना अधिक कैथी लिपि में रचित प्रारंभिक पुस्तकें थीं। सन् 1880 ईसवी में ब्रिटिश सरकार ने बिहार के न्यायालयों में वैधानिक लिपि के रूप में इसे मान्यता दी थी। मानित अमानित होते यह भाषा अपनी लिपि के साथ भूमि निबंधन आदि में सन् 1970 ईसवीं तक उपयोग में रही। बिहार में लोक गीत, सूफी गीत और तंत्र–मंत्र की पुस्तकें भी कैथी लिपि में लिखी जा चुकी हैं। कर्ण कायस्थ की पज्जी व्यवस्था की मूल प्रति भी कैथी लिपि में ही दरभंगा महाराज के संग्रहालय में सुरक्षित है। पटना म्यूजियम में कैथी लिपि की एक स्टोन स्क्रिप्ट भी सुरक्षित है। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद अपनी पत्नी को कैथी लिपि में ही चिट्ठियां लिखा करते थे। भिखारी ठाकुर के संदर्भ 'कैथी लिपि' में ही उपलब्ध हैं। स्वतंत्रता सेनानी एवं भोजपुरी गीतों के पूर्वी धुन के रचयिता श्री महेंद्र मिश्र के संदर्भ 'कैथी लिपि' में ही उपलब्ध हैं। चम्पारण आंदोलन के लिए महात्मा गांधी को बिहार लाने वाले पंडित राजकुमार शुक्ल की डायरी भी 'कैथी लिपि' में ही मिली है। महान स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय वीर कुंवर सिंह के हस्ताक्षर भी 'कैथी लिपि' में मिले हैं। समय के साथ क्रिश्चियन मिशनरीज ने अपनी साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद इसी 'कैथी लिपि' में किया। 'कैथी लिपि' को 'सिलेटी नागरी' और कई अन्य लिपियों का पूर्वज भी माना जाता है। इसका इस्तेमाल 'देवनागरी', 'फारसी' और अन्य समकालीन लिपियों के साथ किया जाता था। महाजनों के द्वारा बही–खाते लिखने में इस्तेमाल होने के कारण यह 'महाजनी लिपि' भी कहलाई। बिहार, बंगाल का मालदा, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश तक 'कैथी लिपि' को जानने वाले लोग मौजूद थे। बंगाल के पश्चिमी क्षेत्रों समेत सम्पूर्ण उत्तर भारत में सबसे ज्यादा लोकप्रिय लिपि थी 'कैथी लिपि'। खण्ड–खण्ड भारत में महाजनपदों की भाषाओं में भोजपुर के साहित्य इतिहास का इतिहास ही भोजपुरी का इतिहास है। 'कैथी लिपि' में ही 'अवधि' (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, नेपाल), 'मगही' (बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल),

'बिहारी' (बिहार परिक्षेत्र), 'मैथिली' (बिहार, नेपाल), 'बज्जिका' (समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, वैशाली, पूर्वी चम्पारण, सारण, शिवहर, दरभंगा और नेपाल), 'राजस्थानी' (पश्चिमी क्षेत्र), मारवाड़ी (कुछ), 'भोजपुरी' (मध्य प्रदेश, नेपाल, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम और फिजी) आदि भाषाएं लिखी और व्यावहारिक हुईं।

कैथी और देवनागरी लिपि–समानता एवं असमानता : 'कैथी लिपि' का उद्‌भव पाँचवीं शताब्दी में और 'देवनागरी लिपि' का उद्‌भव दसवीं शताब्दी में हुआ। 'कैथी लिपि' केवल भारतीय भाषाओं में और 'देवनागरी लिपि' भारतीय एवं कई विदेशी भाषाओं में उपयोग हुई। 'कैथी लिपि' में शिरोरेखा नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में शिरोरेखा आवश्यक है। 'कैथी लिपि' में दो शब्दों के बीच में दूरी नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में दो शब्दों के बीच में दूरी होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में 'ऊ' की मात्रा ' ू ' नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में ऊ की मात्रा ' ू ' होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में 'इ' की मात्रा ' ि ' नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में इ की मात्रा ' ि ' होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में चंद्रबिंदु ' ँ ' की मात्रा नहीं होती और 'देवनागरी लिपि' में चंद्र बिंदु और रेफ होती है। कई भाषाओं में 'कैथी लिपि' में प्रश्नवाचक, अल्पविराम और पूर्ण विराम चिह्न नहीं होता और 'देवनागरी लिपि' में प्रश्नवाचक, अल्पविराम और पूर्ण विराम चिह्न होता है।

❐❐❐

*3/16, कबीर नगर, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

मन के अंदर घना अंधेरा, बाहर तेज उजाला है।

पंकज कुमार पाण्डेय*

मन के अंदर घना अंधेरा,
बाहर तेज उजाला है।

सुन तेरे व्यवहार ने जालिम,
दिल छलनी कर डाला है।

पतझड़–सा यह जीवन मेरा,
ना पत्ती ना फूल

तेरी कृपा समझकर मैंने,
इसको लिया कबूल

पर मेरे जीवन में आया,
कभी नहीं ऋतुराज

पहले मैं मुरझाया रहता,
पर सूखा हूँ आज

जीवन ने मधुमास न देखा,
लाख जतन कर डाला है।

मन के अंदर घना अंधेरा,
बाहर तेज उजाला है।

अपनों ने बेगाना समझा,
बेगाने ने तोड़ दिया

कहा–बताता राह तुझे मैं,
बीच राह में छोड़ दिया

अब तो जैसे–तैसे चलकर,
जीवन की दुपहरी में,
आ बैठा हूँ थककर यारों,
जान नहीं टिटहरी में

टीस रहा था तब मैं देखा,
पाँव पड़ा कई छाला है।

मन के अंदर घना अंधेरा,
बाहर तेज उजाला है।

नदियों जैसा लड़ता–पड़ता,
अपनी राह बनाया मैं,

मिला राह में जो भी उसको,
मित्र बना, अपनाया मैं,

जब भी मुश्किल राह लगी,
बढ़कर मैं आसान किया,

हुई किसी से भी जब गलती
अपने सर इल्जाम लिया,

मतलब के थे साथी सारे,
छीन लिया निवाला है।

मन के अंदर घना अंधेरा,
बाहर तेज उजाला है।

❐❐❐

*वार्ड नं–14, पंजियार टोली,
पो–रोसड़ा, समस्तीपुर–848210, बिहार

तकनीकी युग में पुस्तकों का महत्व

रंजना मिश्रा*

विश्व पुस्तक मेले में इस बार 10 लाख से ज्यादा पाठक पहुँचे। इस तकनीकी युग में पुस्तकों की कितनी अहमियत है ? इसके लिए यह जानना जरूरी है कि भारतीय पुस्तक बाजार की वार्षिक वृद्धि दर 19.3 प्रतिशत है। नौ हजार प्रकाशकों के साथ भारत अँग्रेजी भाषा का दूसरा सबसे बड़ा प्रकाशक है। अमेजन इंडिया के एक सर्वेक्षण के अनुसार, बेंगलूर भारत का सबसे ज्यादा पुस्तकें पढ़ने वाला शहर है। पुस्तकें पढ़ने में मुम्बई और दिल्ली दूसरे और तीसरे नंबर पर हैं। उत्तर पूर्वी राज्यों में सर्वाधिक 43 प्रतिशत युवा पाठक हैं। भारत और चीन में ई–बुक पढ़ने वालों की संख्या 200 फीसद बढ़ी है, लेकिन डिजिटल माध्यम किसी चीज पर ध्यान देने की क्षमता में कमी करता है। एक रिपोर्ट के अनुसार किसी चीज पर ध्यान देने की क्षमता 12 सेकेंड से घटकर 8 सेकेंड हो गई है लेकिन जिस अनुपात में विदेशों में यात्रा के दौरान पढ़ने की प्रवृत्ति देखी गई है, वो भारतीयों में कम ही पाई जाती है। हमें अपने देश के युवा वर्ग में इस प्रवृति को विकसित करना होगा। जिस प्रकार आज बच्चों से लेकर युवा वर्ग और वयस्क सभी मोबाइल और लैपटॉप की डिजिटल दुनिया में खोए रहते हैं। हमें उन्हें पुस्तकें पढ़ने का महत्व समझाना होगा। मोबाइल और लैपटॉप के माध्यम से आज देश दुनिया के बारे में जानकारी प्राप्त करना और बहुत कम मूल्य में पीडीएफ के माध्यम से बहुत सी पुस्तकों को पढ़ना आसान है, किंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि हम पढ़ने का असली आनंद उठाना चाहते हैं तो हमें छपी हुई पुस्तक को हाथ में लेना ही होगा, क्योंकि जो एहसास प्रिंट में छपी हुई पुस्तक को पढ़ने में है वह ऑनलाइन पढ़ने में कतई नहीं है। यात्रा के दौरान यदि हमारी रुचि की कोई पुस्तक हमारे साथ हो तो वो एक मित्र की भाँति यात्रा के समय हमारा साथ देती है। कहते हैं पढ़ने और ज्ञान बढ़ाने की कोई उम्र नहीं होती। मनुष्य जीवन भर पढ़ता व सीखता रहता है और इसके लिए किताबों से बढ़कर उपयोगी माध्यम और कोई नहीं हो सकता। हममें से कई लोगों को किताबें पढ़ना इतना रुचिकर लगता है कि उन्हें पढ़े बिना एक दिन भी नहीं रह सकते, जबकि कुछ लोग किताबों से दूर भागते हैं। सच पूछिए तो किताबें पढ़ने से हमारा स्वस्थ मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही हमें देश–दुनिया की नई–नई जानकारियाँ मिलती हैं और हमारा ज्ञान भी बढ़ता है। खाली वक्त गुजारने के लिए और समय का सदुपयोग करने के लिए किताबें पढ़ने से बेहतर शायद ही कुछ हो। किताबें अनेक विषयों से सम्बन्धित हो सकती हैं। वे ज्ञान–विज्ञान से भरपूर, साहित्य से भरपूर या फिर धार्मिक किताबें भी हो सकती हैं। हम अपनी–अपनी रुचि के अनुसार पढ़ने के लिए किताबें चुनते हैं, लेकिन एक बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि किताबें स्तरीय सामग्री की हों। निम्न स्तरीय सामग्री वाली किताबें हमारी सोच, हमारी मानसिकता को निम्न स्तर का ही बना देंगी। दुनिया के अधिकांश लोगों ने किताबें पढ़कर ही कामयाबी हासिल की है। जब हम किताबें पढ़ते हैं, तो हमारे मन में नए–नए विचारों की उत्पत्ति होती है। किताबें पढ़ते समय हमारा दिमाग एक जगह केंद्रित हो जाता है। हम किताबें पढ़ते–पढ़ते अक्सर उनमें इतना तन्मय हो जाते हैं कि हमें अपने आसपास की दुनिया का भी ध्यान नहीं रहता। इससे हमारी मानसिक एकाग्रता की शक्ति में वृद्धि होती है। रोजमर्रा के जीवन के तनाव से बाहर निकलने के लिए भी किताबें पढ़ना बहुत सहायक सिद्ध होता है। हमारे भीतर नई–नई चीजों को जानने की जिज्ञासा होनी चाहिए और इसके लिए पढ़ने की आदत डालना बहुत जरूरी है। किताबों में लिखे गूढ़ अर्थों को समझने में जहाँ एक ओर हमारी बुद्धि का विकास होता है, वहीं दूसरी ओर किताबें पढ़ने का शौक हमारे पूरे व्यक्तित्व को निखार देता है। अगर हमारे अंदर नियमित रूप से पढ़ने का शौक हो तो हम हर विषय पर अच्छा बोल सकते हैं, अच्छा लिख सकते हैं, लोगों को अच्छी सलाह दे सकते हैं और उन्हें प्रेरित कर सकते हैं। किताबें पढ़ने से हमारा शब्द भंडार बढ़ता है, जिससे हमारे वक्तव्य में भी निखार आता है और लेखन में भी। किताबें पढ़ने की आदत एक नशे की तरह पड़ जाती है, लेकिन यह किसी भी तरह नुकसानदायक नहीं, बल्कि हर प्रकार से लाभदायक ही सिद्ध होती है। नींद न आ रही हो तो अच्छी नींद के लिए भी किताबें बहुत उपयोगी रहती हैं। किताबें पढ़ते–पढ़ते पाठक कब सुखद नींद के आगोश में आ जाता है, उसे पता ही नहीं चलता। आजकल किताबें पढ़ने का चलन कम होने का एक कारण यह भी है कि पहले की अपेक्षा अब किताबें अधिक महँगी हो गई हैं। इसका कारण है, महँगाई के कारण किताबों की छपाई में आने वाली अधिक लागत। इसके अलावा किताबें न पढ़ने का एक कारण लोगों की अधिक व्यस्तता भी है। अब लोग समाचार चैनलों पर चलने वाली बहस देखना तथा टेलीविजन और इंटरनेट के माध्यम से अपना मनोरंजन करना अधिक पसंद करते हैं न कि किताबें पढ़कर। वास्तव में मनोरंजन के कई साधन उपलब्ध होने के कारण अब लोग किताबों पर इतना पैसा खर्च नहीं करना चाहते। पूर्व में जब टेलीविजन और इंटरनेट नहीं था तो किताबें पढ़ने के शौकीन लोगों के घरों में हर माह कम से कम 10–15 किताबें तो आनी तय रहती थीं। किताबों के शौकीन उन्हें अपने–अपने ढंग से लेकर पढ़ते थे। यानी कुछ लोग तो एकबार में इनका पूरा मूल्य चुकाकर, इन्हें खरीदकर घर ले आते थे। वहीं कुछ लोग इन्हें एक–दो दिन के किराए पर लाकर पढ़ते थे, इस तरह वे कम कीमत चुकाकर अधिक किताबें पढ़ लेते थे। किताबें अधिक बिकती थीं तो उनके स्टॉल भी बहुतायत में हर शहर के हर मोहल्ले में मौजूद रहते थे। किंतु

अब जब किताबें खरीदने वाले ही बहुत कम लोग बचे हैं, तो बाल साहित्य, महिलाओं से सम्बन्धित पुस्तकें या अन्य साहित्यिक और मनोरंजक पुस्तकें रखने वाली दुकानें भी बहुत कम हो गई हैं। ऐसे में जिन्हें आज भी पढ़ने का शौक है, उनके लिए इन्हें तलाशना और इन्हें आसानी से प्राप्त कर पाना भी थोड़ा मुश्किल हो गया है। जाहिर है दुकानदारों को लाभ की बजाय हानि उठानी पड़ रही है, इसीलिए उन्होंने अब किस्से–कहानियों, उपन्यासों व मनोरंजन की किताबें बेचनी कम कर दी हैं। ऐसे में सरकार और समाजसेवी संस्थाओं को मिलकर इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है कि इस प्रकार की व्यवस्था की जाए जिससे अच्छे स्तर की ज्ञानवर्धक, मनोरंजक और साहित्यिक पुस्तकों को आम जनता तक उचित मूल्य पर उपलब्ध कराया जा सके ताकि सभी वर्ग के लोग इन पुस्तकों को बिना परेशानी के खरीद सकें और इन्हें पढ़कर इनका लाभ उठा सकें किंतु एक दुर्भाग्य की बात यह भी है कि हमारे देश में हिंदी भाषी लोगों की संख्या अधिक होने के बावजूद भी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को अँग्रेजी से कम सम्मान प्राप्त है। हिंदी जानने वाले अधिकांश भारतीय भी अँग्रेजी साहित्य पढ़कर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं, जिसके कारण हिंदी भाषा आज भी अपना उचित स्थान और सम्मान प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही है। हमारे देश में तैयार होने वाली लगभग 55 प्रतिशत शैक्षणिक या पठनीय सामग्री अकेले एक भाषा यानी अँग्रेजी में ही तैयार होती है और बाकी की 45 प्रतिशत पठन सामग्री भारत की अन्य 22 भाषाओं में तैयार होती है। इसलिए जब तक हमारे देश में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का एक विस्तृत एवं सुव्यवस्थित बाजार नहीं तैयार होगा, तब तक भारत का युवा वर्ग पुस्तकों से नहीं जुड़ पाएगा क्योंकि देश में अँग्रेजी शिक्षा से पढ़े हुए लोग लगभग 8 से 10 फीसदी ही हैं। बाकी 90 फीसदी लोग भारतीय भाषाओं में शिक्षित हैं। इसलिए इन लोगों की पसंद और रुचि को ध्यान में रखते हुए हमें हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का एक वृहद साहित्य एकत्र करना होगा तथा संगठित व सुव्यवस्थित रूप से इनके क्रय–विक्रय की उचित व्यवस्था करते हुए एक विस्तृत बाजार तैयार करना होगा। उच्च कोटि की धार्मिक पुस्तकें जीवन की समस्याओं से जूझते हुए लोगों की चिंता और तनाव को तो कम करती ही हैं, साथ ही उन्हें निराशा की स्थिति से उबारकर, अपने अच्छे और नेक कार्यों द्वारा जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा भी देती हैं। इन पुस्तकों का अध्ययन कर व्याकुलता और बेचैनी से भरे मन को असीम शांति का अनुभव होता है और जीवन को गहराई से समझने का अवसर प्राप्त होता है। भारतीय संस्कृति में स्वाध्याय का बहुत अधिक महत्व है। कहा गया है कि स्वाध्याय के द्वारा हमारा आत्मज्ञान विकसित होता है, हमें अपने दोषों का पता चलता है और हमारे अंदर अच्छे संस्कारों का उदय होता है। उच्च कोटि की धार्मिक पुस्तकें पढ़ने से मन में दया, क्षमा, करुणा, ईमानदारी, सच्चाई, व अहिंसा के भाव उत्पन्न होते हैं, जो हमारे अंदर उच्च कोटि के मानवीय मूल्यों को स्थापित करते हैं। उच्च कोटि की धार्मिक पुस्तकें सिखाती हैं कि हमें मानव जीवन में दूसरों के साथ कैसा आचरण करना चाहिए और एक अच्छा जीवन कैसे व्यतीत करना चाहिए। इसी प्रकार जब हम किसी अच्छी राजदार कहानी या उपन्यास को पढ़ते–पढ़ते उसमें डूब जाते हैं, तो कहानी पूरी होने से पहले ही हमारे अंदर उसके अंत को जानने की इच्छा प्रबल हो जाती है और हम कहानी के अंतिम भाग के बारे में अनुमान लगाना शुरू कर देते हैं जिससे हमारी बौद्धिक तीक्ष्णता व विश्लेषण क्षमता में निखार आता है। हमें ऐसी पुस्तकें कभी नहीं पढ़नी चाहिए, जो निम्न स्तरीय हों, फूहड़ सामग्री से युक्त हों, अश्लील हों या हिंसा सिखाती हों, क्योंकि हम जैसा पढ़ते हैं, हमारे मन के भाव भी वैसे ही बनते हैं और यह भाव ही हमारे आचरण को बनाते या बिगाड़ते हैं। अक्सर देखा जाता है कि सस्ती, हिंसक व कामुकता से युक्त पुस्तकों को पढ़कर हमारी युवा पीढ़ी और बच्चे बिगड़ जाते हैं इसलिए माता–पिता को हमेशा इस ओर ध्यान देना चाहिए कि उनके बच्चे क्या पढ़ रहे हैं। कम उम्र के बच्चों को हमेशा उनकी उम्र के अनुसार बाल साहित्य ही पढ़ने को देना चाहिए। बाल साहित्य भी ऐसा हो जो उनके व्यक्तित्व का विकास करे, उनमें सोचने–समझने की शक्ति बढ़ाए और सही–गलत का निर्णय करने की क्षमता पैदा करे। अब लगभग सभी प्रकार की किताबें ऑनलाइन उपलब्ध हैं। आज की युवा पीढ़ी किताबें खरीदने की बजाय, इंटरनेट पर ही पढ़ना ज्यादा पसंद करती है लेकिन मुद्रित किताबों को पढ़ने में जो मजा है, वह नेट से पढ़ने में नहीं आता और ज्यादा देर तक मोबाइल या लैपटॉप की स्क्रीन में पढ़ने से आँखों व मस्तिष्क पर भी बुरा असर पड़ता है। ऐसे में लोगों में पुस्तकें पढ़ने की रुचि और आकर्षण पैदा करना बहुत जरूरी है। इसके लिए स्कूल कॉलेजों में सस्ते दाम पर पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएं। सार्वजनिक स्थानों पर पुस्तक प्रदर्शनी लगाई जाएं जिससे युवाओं को पढ़ने की प्रेरणा मिले। प्रत्येक शहर में कई पुस्तकालयों की स्थापना करनी चाहिए। घर के बड़ों को चाहिए कि वे बच्चों के जन्मदिन पर उन्हें उपहार में पुस्तकें देने की परम्परा कायम करें। पुस्तकों की बिक्री कम होने से उनके अस्तित्व पर भी खतरा मंडरा रहा है। परिणाम स्वरूप कई अच्छी साहित्यिक किताबें छपना बंद हो गई हैं। मुद्रित पुस्तकें खरीदने के कई फायदे हैं। हम उन्हें जीवन भर अपने पास सुरक्षित रख सकते हैं। जब चाहे उन्हें पढ़ सकते हैं और अपनी आने वाली पीढ़ी को भी उपहार स्वरूप दे सकते हैं। बशर्ते उन्हें अच्छी तरह संभाल कर रखा गया हो। हमें अपने घर में एक छोटी लाइब्रेरी या अध्ययन रूम बना लेना चाहिए और उसमें अपनी रुचि की बहुमूल्य व उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण पुस्तकों का संकलन करना चाहिए। इससे हमारे घर में विद्या देवी का वास होगा और ज्ञान की एक अलौकिक आभा सदैव विद्यमान रहेगी। वैसे तकनीक भी किताबों के प्रचार–प्रसार में सहायक ही सिद्ध हो रही है। तकनीक के कारण अच्छे साहित्य को बढ़ावा

मिल रहा है। आज तकनीकी माध्यमों के द्वारा हम अनेक प्रसिद्ध लेखकों और उनकी कृतियों के बारे में आसानी से जान पाते हैं। किसी विशेष व्यक्ति या अनेक लोगों से किसी विशेष कृति की प्रशंसा सुनकर हमारे मन में भी उस पुस्तक को पढ़ने की रुचि व जिज्ञासा उत्पन्न होती है और हम उसे मँगाकर व खरीदकर पढ़ते हैं। इस तरह किसी भी अच्छे साहित्य की प्रसिद्धि तकनीक के माध्यम से बहुत तेजी से हो जाती है। इसके अलावा यदि कोई मुद्रित पुस्तकें खरीदने में असमर्थ हों या किसी कारणवश वह पुस्तक न मिल पा रही हो तो उस पुस्तक का पीडीएफ उसे आसानी से उपलब्ध हो जाता है और पाठक की उसे पढ़ने की इच्छा पूर्ण हो जाती है। इस प्रकार तकनीक के माध्यम से लोगों में जानकारी और जागरूकता बढ़ने के कारण पुस्तकों का व्यापार बढ़ा ही है, न कि कम हुआ है।

❐❐❐

*सी–32, सर्वोदय नगर, कानपुर–208005, उत्तर प्रदेश

लघु कथा

सम्मान का पैगाम

अंकुर सिंह*

''अजहर देख, कौन आया है ? काफी देर से डोर बेल बजाए जा रहा है।'' ''अम्मी, डाकिया आया है खत लेकर।'' ''किसका खत है, अजहर ?'' ''मैं अभी लेट हो रहा हूँ अम्मी, शाम को आकार पढ़ता हूँ। मुझे अभी अस्पताल जाना है, आसिफ के खाला को भर्ती कराने फिर और उसके बाद मारवाड़ी कॉलेज की जमीन पर जो कब्जा हो रहा है सरकारी महकमों के मिलीभगत से उसके खिलाफ लोगों के लेकर डीएम साहब से मिलने जाना है। मैं अभी चलता हूँ, अम्मी। लंच बाहर कर लूँगा और आप भी समय पर लंच कर लेना।'' ''ठीक हैं बेटा, समाजसेवा के साथ खुद का भी ख्याल रखा कर। ना जाने कितने दुश्मन पाल रखे हैं तूने इस समाजसेवा से ..... !'' – इशरत ने बड़बड़ाते हुए कहा। ''अम्मी, बेकार की चिंता करती हो। रब पर भरोसा रखो सब अच्छा करेंगे और अभी के लिए मैं चलता हूँ, अम्मी।'' शाम को घर आते ही अजहर ने इशरत से कहा–''अम्मी, बहुत थक गया हूँ आज, जल्दी से डिनर लगा दो बहुत भूख लगी है।'' ''अज्जू, पहले सुबह की आई खत तो पढ़ के सुना किसका खत है ? तेरे अब्बू के इंतकाल के बाद गिने–चुने ही रिश्तेदार हैं जो खैर लेते हैं अपनी। तुम खत पढ़ लो तब तक मैं डिनर लगाती हूँ।'' ''जी अम्मी,।'' थोड़ी देर बाद इशरत ने आवाज दी ''अजहर ... अजहर ... आ जा बेटा खाना लगा दी हूँ।'' काफी आवाज देने पर कोई आवाज ना आने पर इशरत घबराकर अजहर के कमरे में जाती है और वहाँ खत के साथ उसे उदास बैठा देख पूछती है–''क्या हुआ, अजहर ? सब खैरियत तो है.. ..... किसका खत है... कोई ऐसी–वैसी खबर तो नहीं ?'' ''नहीं अम्मी, ये सरकारी खत है जिसमें अगली दस तारीख को मुझे दिल्ली बुलाया है। मेरी निष्पक्ष पत्रकारिता और समाजसेवा के कारण सरकार मुझे सम्मानित करेगी।'' अजहर ने अपनी अम्मी को बीच में रोकते हुए अपनी बात कही। ''ये तो अल्लाह की मेहरबानी है। अल्लाह तुम्हें ऐसे ही बरकत दे... ये बड़ी खुशी की बात है। रूको किचेन से मिठाई लाकर तुम्हारा मुँह मीठा कराती हूँ... !'' ''अम्मी, खुशी की बात तो है पररर..... !'' ''पर क्या, अजहर ? ....अपनी निष्पक्ष पत्रकारिता और समाजसेवा को सम्मानित होते देख तुम्हें खुशी नहीं जो खत पढ़कर इतने उदास हो गए ?''– इशरत ने अजहर के सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा। ''अम्मी, भले ही ये खत औरों की नजरों में सम्मान का पैगाम हो परंतु मेरी नजरों में मेरे घाव पर लगाए जाने वाला मलहम है। वह घाव जो मुझे बेबाक और निष्पक्ष पत्रकारिता के बदले मिले। इसी पत्रकारिता और समाजसेवा के

कारण तीस साल की उम्र में मेरे ऊपर दर्जनों मुकदमे दर्ज किए गए। माफिया और भ्रष्ट अधिकारियों के विरोध पर मुझे गुंडा–माफिया कहा गया। अम्मी, कैसे भूल सकता हूँ कि इन्ही कारणों से फरहीन के घरवालों ने मेरे और फरहीन के निकाह को मना कर दिया था और तो और इन्हीं आरोपों के कारण मेरे सही होने पर भी अब्बू मुझे रोकते–टोकते रहते थे। मेरे अनसुना करने पर अब्बू ने आखिरी कुछ सालों में मुझसे सीधी मुँह बात करना भी बंद कर दिया था। इसलिए नहीं कि मैं गलत था बल्कि इसलिए कि उन्हें डर था कि कहीं इन आरोपों के कारण वो अपने वारिस को न खो दें। इन्हीं सबकी चिंता में अब्बू को हृदय की बीमारी लग गई और इसी बीमारी की वजह से आज अब्बू..... !'' ''अब उन पुरानी बातों का क्या मलाल अजहर ?'' –इशरत ने बेटे को ममतायी आँचल में छुपाते हुए कहा। ''अम्मी, मुझे इसका मलाल नहीं है कि निष्पक्ष पत्रकारिता और समाजसेवा के बदले मुझे अपराधी, माफिया कहा गया, गलत मुकदमे दर्ज किए गए बल्कि मलाल इस बात का है कि मेरी इस सफलता के मुकाम को देखने के लिए अब्बू नहीं हैं हमारे बीच। जिनको मेरी पत्रकारिता और समाज सेवा की वजहों से मुझसे ज्यादा परेशान होना पड़ा। अम्मी, जिसके कारण मैंने अब्बू और फरहीन को खोया, आज उसके कारण मिलने वाला ये सम्मान मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता।'' –इतना कहते ही अजहर ने डाक से आए सरकारी सम्मान के पैगाम के कई टुकड़े कर जमीन पर बिखेर खुद इशरत की गोद में सिर रख दिनभर की थकान मिटाने नींद के आगोश में चला गया।

❐❐❐

*हरदासीपुर, चंदवक, जौनपुर–222129, उत्तर प्रदेश

भारत में उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट बीज उत्पादन की स्थिति

ए. वेणुगोपाल' एवं एन. बी. चौधरी

सार : उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट, *एन्थीरिया माइलिट्टा* ड्रूरी (लेपिडोप्टेरा : सैटर्नीड) आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण बहुभक्षी कीट है। भारत एकमात्र देश है, जो तसर डाबा द्विप्रज एवं त्रिप्रज के नाम से प्रसिद्ध *ए.माइलिट्टा* का व्यावसायिक रूप से उत्पादन करता है। बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन (बुतरेबीसं), बिलासपुर अपनी अधीनस्थ इकाइयों, बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र (बुबीप्रवप्रके) तथा केंद्रीय तसर रेशमकीट बीज केन्द्र (केतरेकीबीके), जो भारत के विभिन्न हिस्सों में फैले हुए हैं, के माध्यम से तीन स्तरीय बीज प्रगुणन करके तथा इन बीजों की आपूर्ति राज्यों को उनके स्तर पर आगे प्रगुणन करने हेतु कार्यरत् हैं। तसर रेशम उत्पादन में बुतरेबीसं की महत्वपूर्ण भूमिका है। तसर बीज की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए समय–समय पर बीज भण्डार की पुनः पूर्ति की जाती है। वर्ष 2020–21 के दौरान चौदह बुबीप्रवप्रके में लगभग 0.24 लाख रो.मु.च. की प्रतिपूर्ति की गई तथा इन बुबीप्रवप्रके ने सिद्ध प्रौद्योगिकियों को अपनाकर 30.60 लाख रो.मु.च. का उत्पादन किया तथा जिनमें से लगभग 29.82 लाख रो.मु.च. की राज्यों को आपूर्ति की गई। बुतरेबीसं द्वारा समुदाय आधारित बुनियादी बीज उत्पादन इकाइयों (BSPUs) तथा राज्य प्रायोगिक परियोजना केंद्रो (PPCs)/तसर बीज उत्पादन एवं विस्तार केंद्रों (TSPECs) को तकनीकी सहायता देने में भी अपना योगदान दिया जा रहा है। चौदह अभिग्रहीत बीएसपीयू ने क्रमशः 4.55 लाख तथा 3.93 लाख के बुनियादी एवं नाभिकीय रो.मु.च. सहित 8.48 लाख रो.मु.च. का उत्पादन किया।

परिचय : उष्ण कटिबंधीय तसर रेशमकीट ***एन्थीरिया माइलिट्टा डी.*** (लेपिडोप्टेरा : सैटर्निडे) भारत में पूरे छोटानागपुर पठार एवं मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना जैसे निकटवर्ती राज्यों में पाया जाने वाला एक बहुभक्षी रेशम वन्य कीट है। *ए.माइलिट्टा* परपोषी विशेषज्ञता एवं जलवायु के आधार पर अलग–अलग इको–रेस में रूपात्मक रूप से भिन्न है। ऊँचाई एवं जलवायु परिस्थितियों (जॉली एवं अन्य, 1968) के आधार पर *ए.माइलिट्टा* एक बहुप्रज, द्विप्रज (बीवी) या त्रिप्रज (टीवी) की तरह व्यवहार करता है। लार्वा प्रमुख लेंगिक द्विरूपता (चंद्रशेखरैया एवं अन्य, 2020) के साथ फेनोटाइपिक रूप से परिवर्तनशील हैं। कैटरपिलर का अंतिम चरण अपने चारों ओर एक रेशमी कोसा फैलाता है तथा एक प्यूपा में बदल जाता है। वयस्क छोटे मुँह वाले एवं पाचन तंत्र वाले भारी शरीर वाले होते हैं। वे तब तक उड़ने में असमर्थ होते हैं जब तक कि उनकी वक्ष की मांसपेशियों को 35 डिग्री सेल्सियस का तापमान प्राप्त नहीं हो जाता है, जो मांसपेशियों में कंपन (ब्लेस्ट, 1960) द्वारा प्राप्त किया जाता है। तसर संवर्धन आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल राज्य में गरीब आदिवासियों को रोजगार प्रदान करता है एवं अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण संरक्षण एवं मिट्टी के सुधार में भी सहायता करता है। आदिवासी, ग्रामीण युवा एवं भूमिहीन श्रमिक तसर रेशम कीटपालन का कार्य या तो अकेले या अपने परिवार अथवा गाँव के कीटपालक समूह को शामिल करके कर रहे हैं।

तसर बीज उत्पादन की स्थिति : तसर बीज यानी कि रोग मुक्ति चकत्ते (डीएफएल) का उत्पादन वर्ष 2006–07 में 24.22 लाख था जो कि वर्ष 2015–16 के दौरान बढ़कर 42.61 लाख हो गया। 2016–17 से 2021–22 तक झारखंड, बिहार, ओडिशा एवं तेलंगाना जैसे राज्यों में आत्मनिर्भरता के साथ–साथ एमकेएसपी जैसी केरेबो प्रायोजित विशेष परियोजनाओं के हस्तक्षेप के कारण रोमुच के उत्पादन में क्रमिक वृद्धि से कमी देखी गई है। वर्ष 2021–22 के दौरान लगभग 17.20 लाख बुनियादी तथा 13. 40 लाख नाभिकीय रोमुच का उत्पादन किया गया। पिछले 10 वर्षों के आँकड़ों के विश्लेषण से यह पता चला है कि प्रथम त्रिप्रज, प्रथम द्विप्रज, द्वितीय त्रिप्रज, द्वितीय द्विप्रज एवं तृतीय त्रिप्रज फसल के दौरान प्रति रोमुच 39-61±4-00 (मीन±एसडी), 42.77±5.42, 51.67±11.04, 48.03±6.55 एवं 65.02±12.54 क्रमशः औसत कोसा उपज रही। कोसा रोमुच अनुपात भी प्रथम त्रिप्रज, प्रथम द्विप्रज, द्वितीय त्रिप्रज, द्वितीय द्विप्रज तथा तृतीय त्रिप्रज के दौरान क्रमशः 4.32±0.51, 4.48±0.95, 4.12±1.06, 3.07±0.45 तथा 3.66±0.21 क्रमशः दर्ज किया गया। चूँकि, बीडीआर–10, डाबा–द्विप्रज के पीले लार्वा प्रकार का चयन है, इसकी संतति आमतौर पर लार्वा अवस्था में पीली होती है। वर्ष 2019 से 2021 के दौरान किए गए अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बोईरदादर, सुंदरगढ़ एवं पटेल नगर में प्रति रोमुच कोसा की उपज प्रचलित डीबीवी की तुलना में अधिक थी।

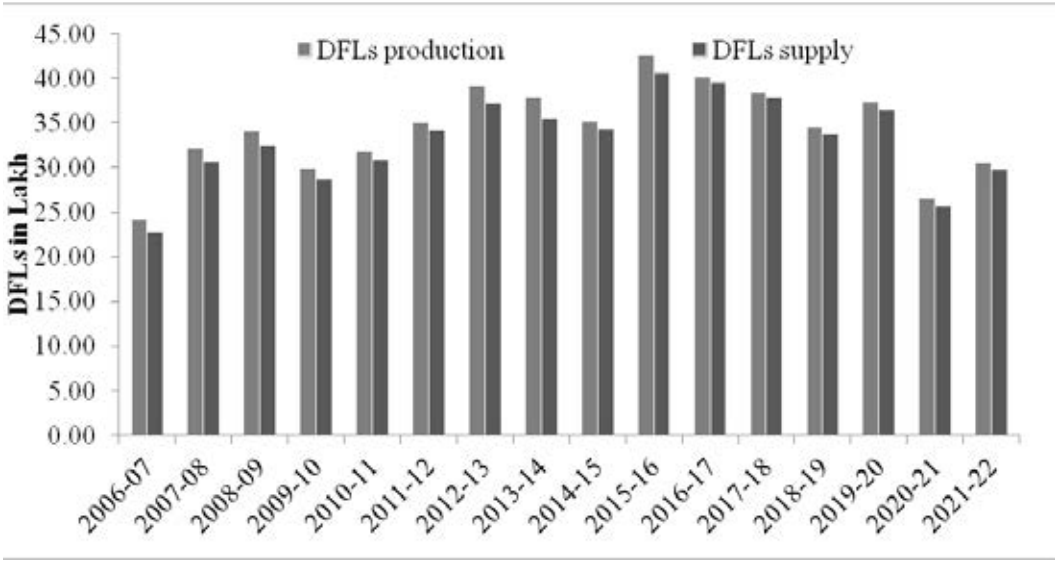

चित्र : 1–2006–07 से 2021–22 तक राज्यों, गैर–सरकारी संगठनों और सहयोगी इकाइयों को बुतरेबीसं इकाइयों से रो.मु.च. के उत्पादन एवं आपूर्ति की स्थिति।

तसर बीज आपूर्ति की स्थिति : वर्ष 2016 के बाद से राज्यों से बुनियादी एवं नाभिकीय रोमुच की माँग राज्यों में अलग–अलग थी। रो.मु.च. के लिए उच्चतम माँग छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखंड, ओडिशा एवं महाराष्ट्र से प्राप्त हुई थी। इसी तरह, रोमुच की माँग बिहार एवं तेलंगाना से शून्य या बहुत कम थी। अन्य राज्य जैसे; उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल भी अपनी वास्तविक आवश्यकताओं से अधिक माँग कर रहे हैं। अपने स्वयं के बीजों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता या बीएसपीयू जैसी अन्य एजेंसियों पर निर्भरता के कारण झारखंड, बिहार एवं ओडिशा राज्यों से रोमुच माँग में धीरे–धीरे कमी आई थी। सभी बीजागारों में कई राज्यों से रोमुच की माँग एवं फाइनल लिफ्टिंग में भारी असमानता देखी गई इसलिए, बुबीप्रवप्रके को नुकसान से बचाने के लिए, स्थानीय माँग पर नजर रखने एवं तदनुसार रोमुच उत्पादन की योजना बनाने की आवश्यकता है। विभिन्न राज्यों में पिछले छह वर्षों (2016–17 से 2021–22) के दौरान सबसे अधिक औसत रोमुच लेने वाले राज्य छत्तीसगढ़ (13.84 लाख), मध्य प्रदेश (4.74 लाख), झारखंड (3.81 लाख), महाराष्ट्र (3.19 लाख) एवं ओडिशा (2.99 लाख) रहे। 2021–22 के दौरान, बुतरेबीसं ने 16.75 लाख बुनियादी एवं 13.07 लाख नाभिकीय रोमुच की आपूर्ति की ।

2016–17 से 2021–22 के दौरान बुनियादी एवं नाभिकीय बीज की माँग एवं आपूर्ति का औसत रुझान चित्र–2 एवं 3 में दिखाया गया है।

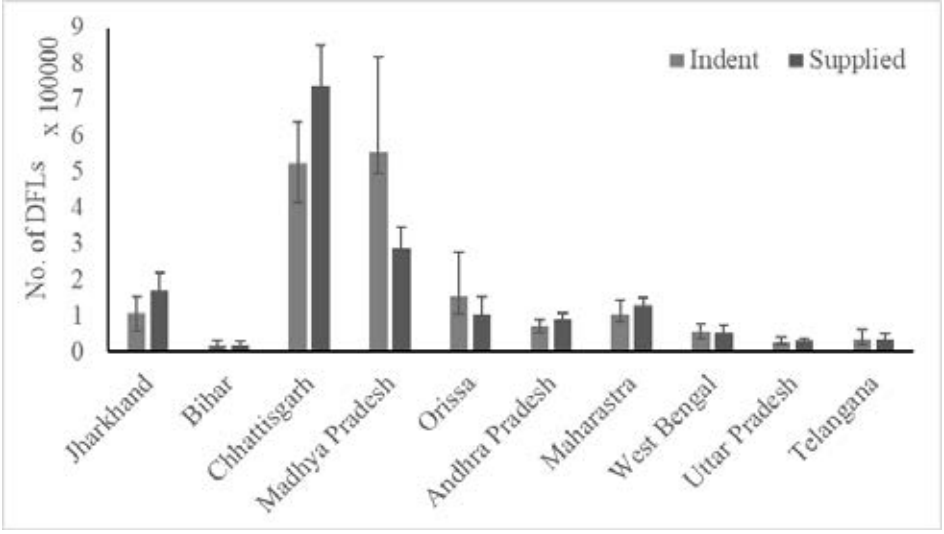

चित्र–2. बुतरेबीसं को दी गई बुनियादी रो.मु.च. की माँग एवं बुतरेबीसं इकाइयों से उठाए गए वास्तविक रो.मु.च. का विवरण।

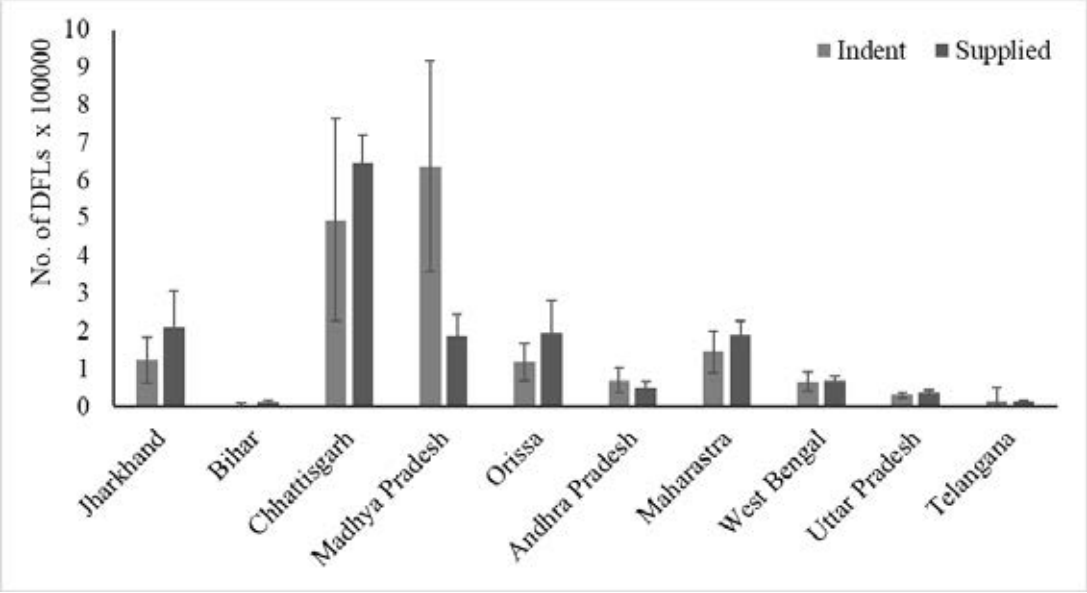

चित्र–3. बुतरेबीसं को दी गई नाभिकीय रो.मु.च. की माँग एवं बुतरेबीसं इकाइयों से उठाए गए वास्तविक रो.मु.च. का विवरण।

चित्र–4 : बीज कोसा का संरक्षण

चित्र–5 : तसर रेशमकीट द्वारा अंडे देना

एमकेएसपी परियोजना के तहत बीज की आपूर्ति : तकनीकी सहायता के अलावा बुतरेबीसं, एमकेएसपी परियोजना सहित विभिन्न विकासात्मक योजनाओं के लिए बीज की आवश्यकताओं का सहयोग करता रहा है। एमकेएसपी परियोजना को 2013–14 से 2019–20 तक कुल 1299163 रोमुच की आपूर्ति की गई जिसमें बुनियादी तथा नाभिकीय दोनों बीज शामिल थे। परियोजना के लिए प्राप्त रोमुच माँग–पत्र की मात्रा 2015–16 एवं उसके बाद के वर्षों के दौरान आवश्यक रोमुच उत्पन्न करने में आत्मनिर्भरता तथा बीज उत्पादन के मामले में परियोजना की सफलता के कारण कम हो गई थी। राज्यों में एमकेएसपी परियोजना के कार्यान्वयन के नियोजित तरीके से जमीनी स्तर पर बीज उत्पादन एवं मानव संसाधन के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का विकास हुआ है। एमकेएसपी परियोजना के कार्यान्वयन के कारण झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल एवं महाराष्ट्र जैसे राज्यों में स्थायी रूप से तसर रेशम उत्पादन गतिविधियां चल रही हैं।

बुनियादी बीज उत्पादन इकाइयों का अधिग्रहण : बुतरेबीसं अपनी अधीनस्थ इकाइयों के माध्यम से समुदाय–आधारित उत्पादन संगठनों (तसर विकास समिति), जो केंद्रीय रेशम बोर्ड की तकनीकी सहायता एवं नीतियों के साथ स्थापित हैं, बुनियादी बीज उत्पादन इकाइयों (बीएसपीयू) के माध्यम से बुनियादी तथा नाभिकीय तसर बीज उत्पादन में सम्मिलित हैं। बुबीप्रवप्रके द्वारा बीएसपीयू को अभिग्रहीत किया गया तथा अभिग्रहण के दौरान रोगों की निगरानी के अलावा लगातार दौरों के माध्यम से सभी तकनीकी सहायता प्रदान की गई ताकि केवल गुणवत्ता वाले रोमुच का उत्पादन सुनिश्चित किया जा सके। वर्ष 2021–22 के दौरान चौदह बीएसपीयू ने 8.48 लाख रोमुच का उत्पादन

किया जिसमें क्रमशः 4.55 लाख एवं 3.93 लाख के बुनियादी एवं नाभिकीय रोमुच शामिल थे।

चित्र–6 : तसर शलभ का प्राकृतिक संगम

चित्र–7 : तसर रेशमकीट बीज

चुनौतियाँ : तसर उद्योग में गुणवत्तापूर्ण बीज का उत्पादन सबसे चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक है। रेशमकीट बीज उत्पादन के लिए एक व्यवस्थित एवं पद्धतिगत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है ताकि उन समस्याओं को हल किया जा सके जिससे कोसा को उच्च उत्पादकता की ओर ले जाया जा सकता है। विभिन्न कारक उपज, लाभ, श्रम, प्रौद्योगिकियों एवं सरकारी नीतियों जैसे संभावित क्षेत्र तसर रेशम उत्पादन की प्रगति को सीमित करते हैं। शहरीकरण एवं उच्च प्रतिफल की ओर कृषकों की रुचि के स्थानांतरण ने भी हाल ही में युवा लोगों के साथ–साथ तसर रेशम उत्पादन में लगे किसानों को आकर्षित किया है । इसके अलावा, राज्य सरकारों से प्रोत्साहन एवं समर्थन की कमी भी रेशम कीटपालन गतिविधियों को शुरू करने के लिए रेशम कीटपालक किसानों के हित को प्रभावित करती है। इसके अलावा इस प्रक्रिया में अनुभव की जाने वाली कुछ बाधाएं जैसे रो.मु.च. की आवश्यकता, राज्यों द्वारा माँग एवं उठाने में भिन्नता, बीज प्रगुणन प्रणाली को राज्य स्तर पर मजबूत करना आदि हैं।

भविष्य की रणनीतियाँ : तसर रेशम उत्पादन की सतत प्रगति के लिए निम्नलिखित उपचारात्मक उपायों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है–

- कुछ राज्य आत्मनिर्भर रो.मु.च. की आवश्यकता के लिए पहले से विकसित सफल बीज उत्पादन मॉडल जैसे बुनियादी बीज उत्पादन इकाइयों का उपयोग करने में असमर्थ रहे हैं। इसलिए तसर रेशम उत्पादन को बढ़ाने के लिए अन्य राज्यों में प्रभावी उपयोग, प्रचार एवं आगे की प्रतिकृति की आवश्यकता होगी।
- प्रभावी उपयोग के लिए कीटपालन एवं बीज उत्पादन गतिविधियों की अग्रिम योजना बीज क्षेत्र अवधारणा के माध्यम से संभव हो सकती है।
- कई कीटपालक अभी भी कई राज्यों में पारम्परिक कीटपालन पद्धति का अनुपालन कर रहे हैं। इसलिए उन्हें कीटपालन एवं बीजागार की प्रक्रिया के दौरान भारी नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए पीपीसी स्तर पर पद्धतियों, प्रौद्योगिकियों एवं रोग निगरानी कार्यक्रम के केतअवप्रसं, रांची के पैकेज का पालन उत्पादकता में वृद्धि के लिए जरूरी है।
- विशेष परियोजनाओं/प्रशिक्षित जनशक्ति के अंतर्गत बीज उत्पादन क्षमता का उपयोग एवं बीज उत्पादन पर आत्मनिर्भरता के लिए परपोषी वृक्षारोपण एवं पहले से विकसित क्षमता का उपयोग करना।
- केंद्रीय बीज अधिनियम का प्रभावी कार्यान्वयन एवं अभिग्रहीत तथा निजी बीजागारकों का इस अधिनियम के अंतर्गत पंजीकरण कराना।

निष्कर्ष : बुतरेबीसं एवं इसकी अधीनस्थ इकाइयाँ भारत में तसर रेशमकीट बीज उत्पादन के विकास के लिए जागरूकता एवं अन्य कार्यक्रमों के साथ–साथ विभिन्न मानव संसाधन विकास कार्यक्रमों के अलावा अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित तकनीकों को अपनाने एवं तसर बीज उत्पादन की प्रक्रिया में गुणवत्ता प्रबंधन के माध्यम से गुणवत्ता रो.मु.च. तैयार कर रही हैं।

❐❐❐

'निदेशक, बु.त.रे.बी.सं., बिलासपुर, छत्तीसगढ़

हिन्दी के द्वारा ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है
स्वामी दयानन्द सरस्वती

तसर की सरिहन पारि–प्रजाति की वर्तमान स्थिति एवं इसके संरक्षण के उपाय

शांताकार गिरि*, दशरथ गोप, प्रबीर कुमार गोराईं, शिवनंदन शर्मा व के.सत्यनारायण

प्रस्तावना : भारत के उष्णकटिबंधीय वनों में तसर की भिन्न–भिन्न प्रकार की पारि–प्रजातियां यथा मोदल, रैली, लरिया, सरिहन, आन्ध्रा लोकल, भंडारा लोकल, सुकिंदा, टीरा, मोदिया, बार्फ आदि पायी जाती हैं। वन संरक्षण जितना प्रभावी होता है तसर की जंगली पारि–प्रजातियों का स्वस्थाने प्रगुणन उतना ही सुगमता और अच्छे से होता है। तीन–चार दशक पहले कई प्रजातियां बहुतायत मात्रा में पाई जाती थीं किन्तु जंगलों की अवैध कटाई, मानवीय हस्तक्षेप, शहरीकरण व औद्योगिकीकरण से पर्यावरण की स्थिति बिगड़ने के कारण इनकी कई प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। सरिहन तसर एक जंगली पारि–प्रजाति है जिसका स्वस्थाने प्रगुणन मुख्यतः झारखंड के संथाल परगना और बिहार के जमुई जिला के वन क्षेत्रों में होता है। पिछले कई सालों के अध्ययन से पता चला है कि सरिहन प्रजाति के तसर कोसों की संख्या दिनोदिन तेजी से घटती जा रही है। सरिहन प्रजाति की यह स्थिति उत्पन्न होने के पीछे मानवीय हस्तक्षेप एक मुख्य कारण है जो अच्छा संकेत नहीं है। यदि समय रहते इसके संरक्षण के उपाय न अपनाए जाएँ तो वो दिन दूर नहीं जब सरिहन पारि–प्रजाति विलुप्त हो जायेगी। वन संरक्षण के साथ–साथ तसर की सरिहन पारि–प्रजाति का स्वस्थाने संरक्षण के उचित क्रियान्वयन के फलस्वरूप ही इस प्रजाति को विलुप्त होने के कगार से बचाया जा सकता है।

भौगोलिक क्षेत्र : सरिहन की तसर पारि–प्रजाति झारखण्ड राज्य के संथाल परगना में मुख्यतः दुमका जिला के अन्तर्गत काठीकुंड, अमरापाड़ा, मसलिया, पाकुड़ जिला के अन्तर्गत लिट्टीपाड़ा, गोड्डा जिला के अन्तर्गत सुन्दर पहाड़ी आदि के

वन क्षेत्रों में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त देवघर जिला से सटे बिहार राज्य के जमुई जिला अन्तर्गत सरसबेदिया एवं झारखण्ड के गिरिडीह जिला के वन क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं। आज भी ये प्रजाति अपने अनुकूल भौगोलिक एवं पारिस्थितिकी अवस्थाओं की मौजूदगी के कारण जीवंत है।

सरिहन तसर रेशमकीट का व्यवहार : इसकी प्रकृति जंगली होने के कारण इसका बीज उत्पादन तथा प्रगुणन आसानी से नहीं हो पाता। इस रेशमकीट का व्यवहार निम्न बिंदुओं पर उल्लेखित है–

- सरिहन पारि–प्रजाति के शलभों का निर्गमन साल भर अनियमित रूप से होता रहता हैं।
- मानवीय हस्तक्षेप से इसके प्रगुणन में बाधाएं उत्पन्न होती हैं।
- प्राकृतिक वास स्थान से हटाकर अन्यत्र कीटपालन तथा बीजागार करने से तसर कीट एवं इसके कोसा कवच भार में कमी परिलक्षित होती है। साथ ही आशानुरूप फसल उत्पादन नहीं हो पाता।
- इस प्रजाति को घरेलू बनाना कठिन है।

सरिहन पारि–प्रजाति की विशेषताएं :

➢ सरिहन के रेशम के धागों में अन्य प्रजातियों के रेशम के धागों की तुलना में चमकीलापन, चिकनापन, पतलापन और लचीलापन अधिक होता है। इन्ही गुणों के कारण इसकी एक विशिष्ट पहचान है और बाजार में माँग है।

➢ यह वन्य क्षेत्र में रहने वाले कीटपालकों के लिए भी वरदान है और उनकी जीविकोपार्जन का एक अच्छा साधन है।

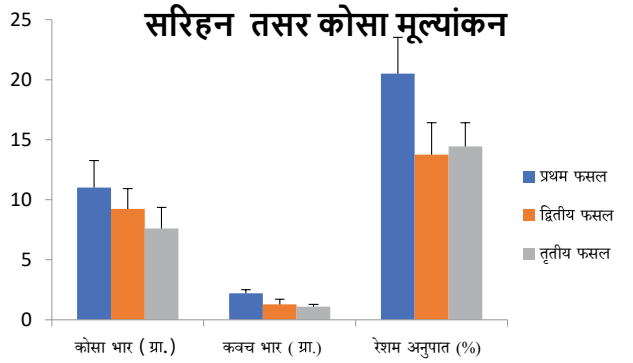

सरिहन तसर पारि–प्रजाति की वर्तमान स्थिति : तसर की डाबा प्रजाति का वाणिज्यिक बीजागार एवं कीटपालन सुगमता से संभव होने के फलस्वरूप राज्य सरकार और स्वयं सेवी सस्थाओं द्वारा विगत दो–तीन दशकों से विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से डाबा प्रजाति के कीटपालन एवं प्रगुणन पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है किन्तु जंगली पारि–प्रजातियों की महत्ता के मद्देनजर तसर की सरिहन प्रजाति को बचाए रखना वर्तमान समय की प्राथमिकताओं में से एक है। हाल के वर्षों में सरिहन कोकून के उत्पादन में काफी गिरावट आई है और आनुवंशिक रूप से इसका अस्तित्व खतरे में है। सरिहन कोकून के उत्पादन में गिरावट के कारण इस प्रकार हैं–

- तसर की विभिन्न विकास परियोजनाओं के तहत बड़े पैमाने पर डाबा प्रजाति (द्विप्रज) को लोकप्रिय बनाने के कार्य पर बल देना।
- डाबा प्रजाति बेहतर आर्थिक मुनाफा देने के कारण सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों द्वारा विशेष कर डाबा तसर कीटपालकों को मूलभूत सुविधा मुहैया कराना।
- डाबा प्रजाति (द्विप्रज) को संथाल परगना क्षेत्र और झारखण्ड के निकटवर्ती बिहार वन क्षेत्र के लगभग सभी प्रान्तों में समावेश करना।
- इस प्रजाति के लिए वनों का उचित संरक्षण की व्यापक व्यवस्था न हो पाना।
- ग्लोबल वार्मिंग व जलवायु में भारी परिवर्तन से इसके अनुकूलन पर प्रभाव पड़ना।
- जंगली सरिहन तसर कोकून के कम संग्रहण के कारण राज्य एजेंसियों और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा कोई विशेष कार्यक्रम प्रारंभ न किये जाना।
- चूहे, गिलहरी और अन्य शिकारी जीवों द्वारा सरिहन के जीवित कोकून व इसके प्यूपा को खाकर कोकून को नष्ट कर देना।
- वनवासी और चरवाहों द्वारा जंगली कोकून को एकत्र कर स्थानीय व्यवसायी को सीधे बेच देने के कारण जीवित कोकून का प्रगुणन नहीं हो पाना ।
- जंगली कोकून उत्पादन पर वास्तविक आँकड़ा प्राप्त करना बेहद मुश्किल होना।

सरिहन के पारि–प्रजाति के संरक्षण के कुछ सुझाव व रणनीतियां :

- झारखण्ड के संथाल परगना व गिरिडीह और बिहार के जमुई जिला के वन वासियों व चरवाहों द्वारा एकत्रित किये गये सरिहन कोसों की जंगली पारि–प्रजाति को स्वस्थाने संरक्षित करने हेतु सरकारी एजेंसियों द्वारा खरीदा जाना चाहिए।
- किसी भी स्थिति में जीवित जंगली कोसों को स्टाईफल कर रीलिंग के लिए उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। इसके लिए राज्य रेशम विभाग, केंद्रीय रेशम बोर्ड एवं सम्बंधित वन विभाग के संयुक्त उद्यम की आवश्यकता है।
- सरिहन कोकून संग्राहकों और कीटपालकों को जागरूक करने के साथ–साथ वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
- जिस क्षेत्र में सरिहन संरक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा हो उस क्षेत्र में डाबा प्रजाति के व्यावसायिक तसर कीटपालन पर रोक लगनी चाहिए।
- जंगलों की रक्षा स्थानीय ग्रामीणों और वन विभाग के संयुक्त प्रयास से सुनिश्चित होनी चाहिए।
- सरिहन तसर का कीटपालन हमेशा स्वस्थाने (प्राकृतिक वास स्थान) में ही होना चाहिए।

उपसंहार : सरिहन तसर पारि–प्राजाति को प्रकृति में बचाये रखना अत्यंत आवश्यक है ताकि विशिष्ट गुण वाले आनुवंशिकी तथा जैव विविधता को बनाये रखा जा सके।

❐❐❐

*वैज्ञानिक–डी, क्षे.रे.उ.अ.के., दुमका, झारखण्ड

ओक तसर रेशम कीटपालन एवं बीज उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

ए.एस.वर्मा*, शेख एजाज अहमद, वी.सी.फुलोरिया, जगदज्योति बिंकदाकट्टी एवं के. सत्यनारायण

परिचय : ओक तसर कीटपालन उत्तर–पश्चिम भारत के शीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में किया जाता है जो दूसरे रेशम कीटपालन की तुलना में काफी कठिन एवं जटिल है। इसे शीतोष्ण तसर रेशम के नाम से भी जाना जाता है। ओक तसर रेशम कीट की *एन्थीरिया प्रॉयली* प्रजाति को भारत के उप–हिमालियी क्षेत्र पश्मिोत्तर में कश्मीर से पूर्वोत्तर में मणिपुर तक विभिन्न ओक प्रजातियों पर पाला जाता है। इसका विस्तार उत्तर–पश्चिम में जम्मू व कश्मीर से उत्तर–पूर्व में मणिपुर तक किया गया है। ओक तसर कीटपालन जो खाद्य पौधे प्राकृतिक रूप से उत्तराखण्ड राज्य के वन क्षेत्र में उपलब्ध हैं, उनकी पत्तियों का दोहन कर कीटपालन किया जाता है। समुद्र तल से ऊँचाई की दृष्टि से निम्न ऊँचाई–500 मी. से 1100 मी. पर *क्वै. ल्यूकोट्राइकोफोरा* (बाँज) एवं *क्वै. सेरेटा* (मणीपुरी बाँज) मध्य ऊँचाई–1100–2100 मी. ऊँचाई पर भी *क्वै. ल्यूकोट्राइकोफोरा* (बाँज) एवं *क्वै. सेरेटा* (मणिपुरी बाँज) तथा 2100–2700 मी. एवं 2400–3700 मीटर की ऊँचाई पर उपलब्ध *क्वै. हिमालियाना* (मोरू, तिलौज) अथवा *सेमीकापीफोलिया* (खरसू) प्राकृतिक रूप से उत्तराखण्ड में उपलब्ध हैं, के पौधों पर कोंपलों पर कीटपालन कार्य किया जाता है। खाद्य पौधे जिनकी ऊँचाई काफी अधिक होती है, उनसे कीटपालन हेतु पत्तियों का दोहन करना काफी जोखिम भरा होता है। निम्न ऊँचाई पर मणिपुरी बाँज के आर्थिक वृक्षारोपण का भी अभाव है। विगत कुछ वर्षों से जलवायु परिवर्तन के कारण ओक तसर रेशम कीटपालन एवं बीज उत्पादन पर काफी असर पड़ा है। चूँकि ओक तसर रेशम कीटपालन समुद्र तल से ऊँचाई के अनुसार अलग–अलग समय पर सर्दी समाप्ति के बाद तापमान बढ़ने से खाद्य पौधों पर कोंपलें आने पर निर्भर करता है। कीटपालन के समय आर्द्रता एवं तापमान में अचानक अधिक उतार–चढ़ाव होने से कीटों में बीमारी लगने की सम्भावनाएं बहुत अधिक बढ़ जातीं हैं जिसके कारण कभी–कभी कीटपालन में काफी कीटों की क्षति हो जाती है जिससे बीज कोसों का उत्पादन आवश्यकता के अनुरूप नहीं हो पाता है।

विधि : क्षे.रे.उ.अ.कें., भीमताल द्वारा पूर्व वसंत फसल कीटपालन निम्न ऊँचाई पूर्व वसंत फरवरी–मार्च एवं मध्य ऊँचाई पर वसंत फसल कीटपालन अगस्त–सितम्बर स्थानीय बाँज (*क्वैरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*), अथवा मणिपुरी बाँज (*क्वैरकस सेरेटा*) व मई–जून में उच्च ऊँचाई पर मोरू, तिलौज (*क्वैरकस हिमालियाना*) अथवा खरसू (*क्वैरकस सेमीकापीफोलिया*) की पत्तियों का दोहन कर किया जाता है। जलवायु परिवर्तन के कारण विगत कुछ वर्षों से सर्दी देर तक पड़ने देर से अथवा पहले समाप्त होने से पहले खाद्य पौधों पर कोंपलें आती हैं ऐसे में पूर्व वसंत, वसंत एवं उच्च ऊँचाई कीटपालन प्रारम्भ होने में एक सप्ताह का भी ब्रशिंग कार्य में अन्तर हो जाने से बीजोत्पादन हेतु क्रियाकलाप निर्धारित समय पर नहीं हो पाते हैं। आगे–पीछे होने से कोसा उत्पादन भी प्रभावित हेता है।

परिणाम एवं परिचर्चा : विगत 4–5 वर्षों से क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल द्वारा निम्न ऊँचाई पर रानीबाग क्षेत्र में पूर्व वसंत में कराये गये कीटपालन के ब्रशिंग कार्य तिथि एवं कोसा उत्पादन में जलवायु परिवर्तन के कारण जो उतार–चढ़ाव आया उससे सम्बन्धित विवरण तालिका–01 तथा वर्ष 2018 से 2021 के मध्य हुई वर्षा के आँकड़े तालिका–02 में दर्शाये गये हैं–

तलिका–01

क्रम सं.	कीटपालन वर्ष	प्रजाति	ब्रशिंग तिथि	पालित रो. मु.च. की संख्या	कोकून उत्पादन			
					सीड कोकून	नॉन सीड कोकून	कुल	कोसा उत्पादन प्रति रो.मु.च.
1.	2017–18	*ए.प्रॉयली*	28.02.2017	200	11,220	960	12,180	60.90
2.	2018–19	*ए.प्रॉयली*	06.03.2018	200	12,546	1210	13,756	68.78
3.	2019–20	*ए.प्रॉयली*	05.03.2019	200	12,000	230	12,230	61.15
4.	2020–21	*ए.प्रॉयली*	08.03.2021	200	5,000	1600	6,600	33.00
5.	2021–22	*ए.प्रॉयली*	01.03.2021	450	7550	5760	14310	31.80

तलिका–02

क्र.	वर्ष	जनवरी	जून	सितम्बर	दिसम्बर
1.	2018–19	0.1	122	271	––
2.	2019–20	445	1467	2454	––
3.	2020–21	1200	620	2675	––
4.	2021–22	150	2800	1735	3400

पूर्व वसंत फसल हेतु बीज उत्पादन : प्राकृतिक रूप से उपलब्ध खाद्य पौधों पर कोंपलें आने की सम्भावनाओं के आधार पर कीटपालन हेतु कीटाण्डों की माँग के अनुरूप उत्पादन के लिए बीज कोसों को शलभ निर्गमन के पूर्व बीजागार के अन्दर धीरे–धीरे हाईग्रो–फोटो–थर्मिक; आर्द्रता–75.85% ± 5 प्रतिशत एवं तापमान 24 ± 2°C डिग्री सेंटीग्रेड, साथ ही 16 घण्टे 60 वाट के बल्व अथवा ट्यूब लाइट द्वारा प्रकाश) वातावरण बिजली के हीटर, गनी बैग, फोम पैड, पानी, लकड़ी का कोयला आदि के माध्यम से तैयार कर उपचारित किया जाता है ताकि प्यूपों की सुसुप्तावस्था को 1 माह पूर्व समाप्त किया जा सके एवं कीटाण्ड तैयार कर कीटपालन हेतु आपूर्ति किया जा सके। जलवायु परिवर्तन के कारण यह देखा गया कि कीटाण्डों का उत्पादन एवं कीटपालन हेतु ब्रशिंग कार्य निर्धारित समय पर नही हों पा रहा है और हर वर्ष कीटपालन में समयान्तर हो रहा है।

कीटाण्डों का प्रस्फुटन

कीटपालन हेतु मणिपुरी बाँज की कोपलों पर ब्रशिंग कार्य

सामान्यतः *क्वै. सेरेटा* (मणिपुरी बाँज) में पतझड़ एवं कोपलों का उद्‌गम :

1. पूर्व वसंत कीटपालन के समय : यह कीटपालन निम्न ऊँचाई पर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध खाद्य पौधों पर ही निर्भर करता है। इसलिए सामान्यतः प्रचलन में नहीं है। ग्रीष्म फसल के कीटाण्डों की आपूर्ति में सहयोग प्रदान करने के प्रयोजन से वसंत फसल से 10 से 15 दिन पूर्व फरवरी माह में कीटाण्ड तैयार कर इसे कीटपालन हेतु निम्न ऊँचाई पर 25 फरवरी से 02 मार्च के बीच पौधों पर कोंपलें पर ब्रशिंग कार्य किया जाता है। जो अप्रैल माह के तृतीय सप्ताह में पूर्ण हो जाता है।

2. वसंत फसल कीटपालन : सामान्यतः मध्य ऊँचाई पर स्थानीय बाँज (*क्वैरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*), अथवा मणिपुरी बाँज (*क्वैरकस सेरेटा*) पर 05 से 15 मार्च के अन्दर कोंपलें आने पर ब्रशिंग कार्य किया जाता है जो अप्रैल माह के अन्त तक पूर्ण हो जाता है।

3. उच्च ऊँचाई या ग्रीष्म फसल कीटपालन : सामान्यतः उच्च ऊँचाई पर मई के अन्त अथवा जून के शुरू में मोरू, तिलौज (*क्वैरकस हिमालियाना*) अथवा खरसू (*क्वैरकस सेमीकार्पीफोलिया*) पर कोंपलें आनी प्रारम्भ होती हैं। अतः उच्च ऊँचाई पर कीटपालन मई माह में शुरू किया जाता जो जुलाई माह में पूर्ण हो जाता है। इस कीटपालन को वाणिज्यिक फसल कीटपालन भी कहा जाता है।

4. शरद फसल कीटपालन : पुनः मध्य ऊँचाई पर स्थानीय बाँज (*क्वैरकस ल्यूकोट्राईकाफोरा*), अथवा मणिपुरी वॉज (*क्वैरकस सेरेटा*) के पौधों की शाखाओं को जुलाई माह में हल्के रूप में काटने से अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में कोंपलें आने से शरद फसल कीटपालन अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में प्रारम्भ किया जाता है जो अक्टूबर माह के अन्त तक पूर्ण हो जाता है।

निष्कर्ष : चूँकि पहाड़ों में विभिन्न ऊँचाइयों पर फरवरी–मार्च से नबम्बर माह के मध्य अलग–अलग तापमान पाया जाता है। सामान्यतः जलवायु एवं तापमान के अनुसार जिस ऊँचाई पर ओक तसर खाद्य पौधों पर कोंपलें आनी प्रारम्भ होती हैं उस ऊँचाई पर खाद्य पौधों की पत्तियों का दोहन कर कीटपालन कार्य किया जाता है जिससे तीनों ऊँचाई पर निवास करने वाले ओक तसर कीटपालकों को कीटपालन कार्य करने का मौका मिल जाता है। निम्न ऊँचाई पर प्राकृतिक रूप से उपलब्ध लोकल बाँज (*क्वैरकस ल्यूकोटाईकाफोरा*) तथा *क्वै. सिराटा* (मणिपुरी बाँज), जिसकी पत्तियों का उपयोग कर पूर्व वसंत कीटपालन, मध्य ऊँचाई पर वसंत एवं शरद फसल कीटपालन एवं मोरू, तिलौज (*क्वैरकस हिमालियाना*) अथवा खरसू (*क्वैरकस सेमीकापीफोलिया*) पर कोंपलें आने पर उच्च ऊँचाई पर वाणिज्यिक फसल कीटपालन किया जाता है। विगत 4–5 वर्षों से सर्दी देर तक पड़ने से अथवा पहले समाप्त होने से खाद्य पौधों पर कोंपलें आने में समयान्तर हो गया है, ऐसे में पूर्व वसंत, वसंत एवं उच्च ऊँचाई कीटपालन प्रारम्भ होने में 5 से 10 दिन के ब्रशिंग कार्य में भी समयान्तर हो जाता है एवं निर्धारित तिथियों में ब्रशिंग कार्य पूर्ण नहीं हो पाता है। उच्च ऊँचाई पर विगत चार वर्षों में ओक तसर विकास परियोजना के अन्तर्गत आर्थिक पौधारोपण किया गया है। निम्न एवं मध्य ऊँचाई पर ओक तसर उत्पादित क्षेत्रों में मणिपुरी बाँज (*क्वैरकस सिराटा*) के आर्थिक पौधारोपण की आवश्यकता है ताकि मौसम के अनुसार आर्थिक पौधा रोपण में विकसित तकनीकियों का उपयोग कर निर्धारित तिथियों में ब्रशिंग कर कीटपालन कार्य समय पर किया जा सके एवं ओक तसर रेशम के उत्पादन को बढ़ाया जा सके।

❐❐❐

*वैज्ञानिक–डी, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल, उत्तराखण्ड

धरती को कचरा बना रहा कचरा

रेखा शाह आरबी*

विकास के साथ उपभोक्तावादी प्रवृति बढ़ी है और इसके साथ बढ़ा है घरों में बिजली और इलेक्ट्रॉनिक संयंत्रों तथा प्लास्टिक की चीजों का इस्तेमाल। इन चीजों का हम इस्तेमाल करते हैं और फिर फेंक देते हैं। वही ई–कचरा बन जाता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दिसंबर, 2020 की रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई थी। भारत के बहुत से गाँव में बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद अभी पहुँचे भी नहीं हैं फिर भी दस लाख टन से अधिक कचरा हर साल हम हिंदुस्तानी पैदा कर रहे हैं। धीरे–धीरे हम सभी लोग एक कचरे के ढेर पर बैठते जा रहे हैं। ई–कचरे से नई–नई बीमारियाँ भी उत्पन्न होती हैं जो प्रतिदिन लाखों लोगों की जान ले रही है। इस समस्या से केवल दुनिया के गरीब देश ही नहीं बल्कि विकसित देश भी जूझ रहे हैं। विश्व का सबसे विकसित देश अमेरिका सालाना 277 मिलियन टन से ज्यादा कचरा उत्पन्न करता है। हमारे देश में सबसे ज्यादा कचरा उत्पन्न करने वाले शहरों में दिल्ली, मुम्बई, बेंगलूर, कोलकाता, चेन्नई और हैदराबाद हैं। भारत में कचरे के निपटान की कोई खास व्यवस्था भी नहीं है, इसके चलते हमें और नुकसान होता है। वहाँ से आ रहे ई–कचरे को रोकने के लिए भारत सरकार ने कचरा प्रबंधन और निगरानी कानून 1989 में बना दिया था परंतु कुछ लोग इसकी अवहेलना करते रहते हैं जिसके चलते देश में समस्या गंभीर रूप धारण करती जा रही है। अगर हम इस समस्या को सही तरीके से दूर करना चाहते हैं तो इसके लिए सबसे पहले रिफर्बिशिंग करना होगा यानी उपयोगी कचरे की मरम्मत करके उनका पुनर्निर्माण करना। इससे बहुत हद तक हम कचरे का प्रबंधन कर सकते हैं। हम अपने देश में पैदा होने वाले कचरे में से सिर्फ 2.5% का ही निपटान कर पाते हैं। ऊपर से अमेरिका जैसे देश अपना 80% ई–कचरा हमारे जैसे देशों को भेज देते हैं। ई–कचरे का निस्तारण एक बेहद जटिल प्रक्रिया है। महज 5 फीसदी कचरा का निस्तारण पुनर्चक्रण केंद्रों द्वारा किया जाता है। बाकी बचा 95 प्रतिशत ई–कचरा का निस्तारण अनौपचारिक क्षेत्र के द्वारा किया जाता है जो भगवान भरोसे है। भारत में ई–अपशिष्ट प्रबंधन

नीति 2011 से उपलब्ध है पर जमीनी स्तर पर ई–अपशिष्ट प्रबंधन नीति का भी वही हाल है, जो अन्य सरकारी नियमों का है। 2008 में जब सरकार ने कचरा प्रबंधन नीति लागू की उस समय यह समस्या बहुत ही छोटे रूप में थी। लोग उतने उपभोक्तावादी नहीं थे, न इतनी वस्तुएँ उनकी पहुँच में थीं, पर आज समस्या अपने विकराल और चरम रूप पर है और कचरे के निपटान का मूल्य भी बहुत ज्यादा आता है, कचरे के निपटान में यह भी एक समस्या है। औपचारिक केंद्रों के पुनर्चक्रण की अपेक्षा असंगठित क्षेत्र में लोगों द्वारा कचरे के निपटान में कम खर्च आता है लेकिन इसको मजबूती प्रदान करने की जरूरत है और बिना इसको मजबूत किए ही कचरे के निपटान की कल्पना असंभव है। कचरे के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार है... हद से ज्यादा लोगों की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति। अगर दुनिया को कचरे का ढेर बनाने से बचाना है तो कहीं–ना–कहीं अपनी उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को जरूरत वादी प्रवृत्ति बनाने की दरकार है। धरती से लेकर स्पेस तक सब जगह कचरा एक बड़ी समस्या बन चुका है।

निष्कर्ष : हमारे लिए उचित यही है कि हम इस समस्या को कदापि हल्के में ना लें और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहें। सिर्फ सरकार के भरोसे ना रह कर हम भी अपनी जिम्मेदारी निभाएँ ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए एक साफ–सुथरा संसार छोड़कर जाएँ। इंसानों को नहीं भूलना चाहिए कि धरती, वायु, जल इत्यादि प्रकृति प्रदत्त निःशुल्क सुविधाएं सिर्फ मनुष्य के लिए नहीं हैं अपितु संपूर्ण जीव जगत का इस पर अधिकार है और हम उनके अधिकारों का हनन कर रहे हैं जिससे प्रकृति का जीव जगत चक्र बुरी तरह प्रभावित हो जाएगा जो इंसानों के लिए भी बेहद हानिकारक सिद्ध होगा और प्रकोप स्वरूप महामारी, भूकंप, बाढ़ इत्यादि को आमंत्रण देंगे।

❐❐❐

*भीमसेन, गिरजा इलेक्ट्रॉनिस काशीपुर, बलिया–बैरिया राजमार्ग, बलिया–277001, उत्तर प्रदेश

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा।

महादेवी वर्मा

तसर क्षेत्र में विस्तार संचार कार्यक्रम (ईसीपी) के आयोजन हेतु दिशा–निर्देश

जगदज्योति बिकंदाकट्टी*, विशाल मित्तल एवं के. सत्यनारायण

परिचय : कें.त.अ. व प्र.सं., राँची नियमित रूप से रेशम उत्पादन के क्षेत्र में अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए प्रौद्योगिकियों के प्रसार हेतु अनिवार्य गतिविधियों के क्रम में वार्षिक कार्य योजना के अंतर्गत विभिन्न विस्तार संचार कार्यक्रमों का आयोजन करता है जैसे–रेशम कृषि मेला/रीलर्स मेला, सह प्रदर्शनी, किसान दिवस, क्षेत्र दिवस, जागरूकता कार्यक्रम, प्रौद्योगिकी प्रदर्शन, कार्यशालाएं/संगोष्ठी/सम्मेलन, समूह चर्चा आदि। यद्यपि प्रत्येक कार्यक्रम में प्रतिभागियों की संख्या के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है फिर भी कार्यक्रमवार बजट प्रावधानों के साथ प्रतिभागियों की न्यूनतम्/सीमा निर्धारित है, जिसे विस्तार कार्यक्रम आयोजित करने के लिए बेंचमार्क के रूप में माना जा सकता है। कें.त.अ.व प्र.सं., राँची द्वारा निम्नलिखित ईसीपी कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं–

1. रेशम कृषि मेला सह प्रदर्शनी : कृषि मेला के आयोजन का उद्देश्य एक समय में बड़ी संख्या में किसानों को रेशम उत्पादन (तसर) प्रौद्योगिकी की उपलब्धता और उपयोगिता के बारे में जानकारी प्रदान करना और तसर संवर्धन की समस्याओं से सम्बन्धित चल रही अनुसंधान गतिविधियों के बारे में जानकारी देना भी है। ''देखकर विश्वास करना'' कृषि मेला की मुख्य अवधारणा होनी चाहिए। इसमें जानकारी का व्यवस्थित प्रदर्शन, सजीव नमूने, मॉडल, पोस्टर, फोटोग्राफ, चार्ट आदि तार्किक क्रम में शामिल हो सकते हैं और हितधारक प्रदर्शनी प्रदर्शित कर सकते हैं जैसे–कपड़ा, मशीनें, रसायन, उर्वरक और अन्य प्रासंगिक उत्पाद। कार्यक्रम के दौरान साथी किसानों को प्रेरित करने के लिए प्रगतिशील किसानों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है। रेशम कृषि मेला वर्ष में एकबार फसल के दौरान या उसके पूरा होने के बाद आयोजित किया जाता है ।

2. किसान/क्षेत्र दिवस : इस कार्यक्रम में आमतौर पर विशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं और उपकरणों के प्रदर्शन और/या अनुसंधान विधियों और परिणामों को उजागर करना शामिल होता है। इसमें प्रस्तुतिकरण, पोस्टर, सामग्री और खेतों में घुमना शामिल होता है। 50–100 किसानों को प्रदर्शन स्थल पर जाने का अवसर प्रदान किया जाता है और उन्हें अपने स्वयं के खेतों पर नए विचारों को आजमाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। निर्धारित दिनों में अतिथियों (राज्य रेशम विभाग, स्टाफ, वन विभाग, गैर–सरकारी संगठन आदि) की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है। किसान के खेत या सरकारी क्षेत्र में 'क्षेत्र दिवस' आयोजित किया जाना चाहिए। फसल की कटाई से ठीक पहले यह खेत और 'देखने से विश्वास होता है' के सिद्धांत पर काम करेगा। जबकि 'किसान दिवस' का आयोजन सार्वजनिक स्थान पर फसल की कटाई के दौरान या उसके बाद किया जा सकता है। किसान दिवस में किसानों को अन्य कीटपालकों को तसर संवर्धन के बारे में अपने अनुभव साझा करने की अनुमति देनी चाहिए।

3. जागरूकता कार्यक्रम : इस कार्यक्रम का मूल उद्देश्य नवीनतम् रेशम उत्पादन (तसर) प्रौद्योगिकियों के बारे में किसानों

के बीच जागरूकता पैदा करना है। जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का उद्देश्य किसानों को संस्थान द्वारा विकसित तसर प्रौद्योगिकी, इसके संचालन/कार्य, उपयोग और लागत प्रभावशीलता के बारे में जानकारी प्रदान करना है। यह किसानों को इन तकनीकों के लाभों के बारे में शिक्षित करके विभिन्न उन्नत तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करने में मदद करता है। जब भी नई तकनीकों को पेश/हस्तांतरित किया जाना हो तो मौजूदा किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

यह कार्यक्रम नई रेशम उत्पादन (तसर) प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए अधिमानतः नए किसानों या/और गैर–पारंपरिक रेशम उत्पादन (तसर) क्षेत्र के लिए भी आयोजित किया जाता है। यह कार्यक्रम फसल के मौसम से पहले/तसर गतिविधियों की शुरुआत से ठीक पहले आयोजित किया जाना चाहिए।

4. प्रौद्योगिकी प्रदर्शन/प्रबोधन कार्यक्रम :

- **विधि प्रदर्शन** : इसमें एक विशिष्ट कौशल को चरण दर चरण प्रदर्शित करने और अभ्यास करने के लिए विधि प्रदर्शन आयोजित किए जाते हैं। यह सहभागी, आवश्यकता आधारित और 'करके सीखने वाला दृष्टिकोण' है। इसके अंतर्गत प्रतिभागियों की आदर्श संख्या 20 किसान होती है। इस पद्धति में किसान नई तकनीक (कार्य प्रणाली) का उपयोग करना सीखते हैं। यह कार्यक्रम तसर गतिविधियों की शुरुआत से ठीक पहले गाँव के विद्यालय या सार्वजनिक स्थान पर आयोजित किया जा सकता है। इस कार्यक्रम में किसान स्वयं प्रदर्शन करते हैं और विस्तार एजेंट उनका मार्गदर्शन करते हैं ।

- **परिणाम प्रदर्शन** : इस पद्धति का उपयोग प्रथाओं की श्रेष्ठता दिखाने के लिए किया जाता है, जैसे कि अधिक उपज देने वाले रेशमकीट और भोज्य पौधों की किस्मों/ संकरों का प्रदर्शन, पालन विधि, उर्वरकों, कीटनाशकों का उपयोग आदि। परिणाम प्रदर्शन एकल पालन मौसम, दो पालन मौसमों में या पूरे साल आयोजित किए जा सकते हैं। परिणाम प्रदर्शनों को 20 से अधिक किसानों के समूह के साथ आयोजित किया जा सकता है। तसर कोकून की कटाई से ठीक पहले यह प्रदर्शन किसानों के खेत या सरकारी क्षेत्र में आयोजित किया जाना चाहिए ।

5. कार्यशालाएं/सम्मेलन/संगोष्ठी: संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ और सम्मेलन भविष्य के अनुसंधान कार्यक्रमों/रणनीतियों को तैयार करने में मदद करते हैं। यह शोध–पत्रों की प्रस्तुति के माध्यम से विभिन्न संस्थानों/विभागों/विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक कर्मियों के साथ उपलब्धियों और भविष्य की रेशम उत्पादन रणनीतियों पर विचारों के आदान–प्रदान में सहायता करता है। यह किसानों/रीलरों/बुनकरों के प्रतिनिधियों के साथ उनकी समस्याओं और प्रौद्योगिकी आवश्यकताओं पर गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए विचारों के आदान–प्रदान में भी सहायता करता है। इसके अंतर्गत तसर किसानों द्वारा बेहतर ढंग से अपनाने के लिए विकसित नई तकनीकों की बेहतर समझ और बेहतर ट्यूनिंग के लिए कृषि परीक्षणों के तहत मौजूदा तकनीकों की उपलब्धियों पर भी चर्चा की जाती है।

निष्कर्ष : विस्तार संचार कार्यक्रम (ईसीपी) दिशा–निर्देश दोनों विस्तार एजेंटों (सार्वजनिक और निजी) के लिए रोड मैप के रूप में कार्य करते हैं जो भारत में वन्य रेशम उत्पादन क्षेत्र और/या अन्य रेशम उत्पादन क्षेत्र में काम कर रहे हैं। ये दिशा–निर्देश ईसीपी कार्यक्रम को हितधारकों के लिए अधिक प्रभावी और उपयोगी बनाने में मदद करते हैं। इससे तसर कोकून उत्पादन

तालिका : कें.त.अ.व प्र.सं., राँची द्वारा पिछले पाँच वर्षों में किए गए विस्तार संचार कार्यक्रम (ईसीपी)

#	विस्तार संचार कार्यक्रम का नाम	2018–2019 (संख्या)		2019–20 (संख्या)		2020–21 (संख्या)		2021–22 (संख्या)		2022–23 (संख्या)	
		आयोजन	किसान	आयोजन	किसान	आयोजन	किसान	आयोजन	किसान	आयोजन	किसान
1	क्षेत्र दिवस	17	1301	15	772	11	591	14	790	16	821
2	किसान दिवस	13	1033	13	735	15	742	14	760	16	844
3	प्रौद्योगिकी प्रदर्शन	0	0	0	0	10	245	16	394	33	848
4	जागरूकता कार्यक्रम	10	906	9	314	21	849	23	1277	24	908
5	सामूहिक चर्चा	33	1191	2	1225	-	-	-	-	-	-
6	किसान मिलन सह प्रदर्शनी/कृषि मेला	3	455	6	1007	2	252	-	-	03	571
7	कार्यशाला/सेमिनार और सम्मेलन	-	-	-	-	-	-	01	113	03	434
8	अन्य										
	एमकेएसपी कार्यशालाएँ	-	-	-	-	-	-	-	-	08	1020
	प्रदर्शनी (संस्था)	-	-	-	-	-	-	-	-	18	2657
	प्रदर्शनी (आमंत्रित)	-	-	-	-	-	-	-	-	11	00
	केन्द्रीय बीज अधिनियम जागरूकता कार्यक्रम	-	-	-	-	-	-	-	-	01	105
	कुल	76	4886	45	4053	59	2679	68	3334	133	8208

की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार के साथ–साथ तसर किसानों द्वारा रेशम उत्पादन की नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने से उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है ।

❐❐❐

*वैज्ञानिक–सी, के.त.अ.व प्र.सं., राँची, झारखण्ड

हर देश को किसी सम्पर्क भाषा की आवश्यकता होती है और वह भारत में केवल हिन्दी ही हो सकती है

श्रीमती इंदिरा गाँधी

जब तक इस देश का राजकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तब तक हम यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज है

मोरारजी देसाई

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची द्वारा जनवरी-जून, 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झांकियां

संकलनकर्ता : जगदज्योति बिकंदाकट्टी, विशाल मित्तल, जे.पी.पाण्डेय एवं के. सत्यनारायण

तसर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी प्रसार और अनुभव साझाकरण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19.01.2023 को रायथु वेदिका, किश्तमपेट, चिन्नूर, मनचेरियल जिला, तेलंगाना राज्य में किया गया

तसर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी प्रसार और अनुभव साझाकरण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 21.01.2023 को बोडलकासा एमटीडीसी सम्मेलन हॉल, गोंदिया, महाराष्ट्र में किया गया

तसर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी प्रसार और अनुभव साझाकरण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 25.01.2023 को पंचायत समिति हॉल, खटरा, बांकुड़ा जिला, पश्चिम बंगाल में किया गया

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची द्वारा जनवरी-जून, 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झांकियां

राज्य स्तरीय प्रौद्योगिकी प्रसार और तसर क्षेत्र में अनुभव साझाकरण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 09.02.2023 को पैदिगुडेम, अल्लूरी सीतारामाराजू जिले में किया गया

दिनांक 25.02.2023 को क्षे.रे.उ.अ.के., दुमका में तसर कृषि मेला का आयोजन किया गया

तसर रेशम के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवम् क्षमता निर्माण पर कार्यशाला का आयोजन दिनांक 24.02.2023 को लिलावरन, कटोरिया, बांका में किया गया

दिनांक 17.03.2023 को ओडिशा के सिमलीपाल बायोस्फीयर में 'मॉडल इको-रेस के संरक्षण' पर राज्य स्तरीय इकोरेस कार्यशाला का आयोजन किया गया

निदेशक के.त.अ.व.प्र. संस्थान, रांची ने दिनांक 10.03.2023 को देहरादून, उत्तराखंड में क्षे.रे.उ.अ.के., इंफाल द्वारा ओक तसर संवर्धन पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया

दिनांक 21 मार्च, 2023 को गोड्डा जिला के सुंदर पहाड़ी प्रखंड के प्रशिक्षण केंद्र में केन्द्रीय बीज अधिनियम पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन के.त.अ.व.प्र.संस्थान, रांची व राष्ट्रीय रेशम बीज संगठन, बंगलोर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया

केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची द्वारा जनवरी-जून, 2023 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झांकियां

डॉ. के. सत्यनारायण, निदेशक, के.त.अ.व.प्र.संस्थान, रांची ने दिनांक 30.03.2023 को गोरखपुर में रा.रे.वि. और अ.वि.के., केरेबो, बस्ती द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित रेशम कृषि मेले में अतिथि के रूप में भाग लिया

दिनांक 06 मई 2023 को डॉ के. सत्यनारायण, निदेशक, के.त.अ.व. प्र. संस्थान, रांची द्वारा अ.वि.के., पालमपुर हिमाचल प्रदेश में राज्य रेशम विभाग के अधिकारियो के साथ "हिमाचल प्रदेश में ओक तसर रेशम उद्योग के पुनरुद्धार" हेतु विचार-विमर्श किया एवं आगे की रणनीति तैयार करने पर विस्तार से चर्चा की

दिनांक 10 मई 2023 को डॉ के. सत्यनारायण, निदेशक, के.त.अ.व. प्र. संस्थान, रांची की अध्यक्षता में "सेंट्रल सीड एक्ट जागरूकता कार्यक्रम" का आयोजन ग्राम लिलावरन, प्रखंड कटोरिया, जिला बांका बिहार में किया गया

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित तसर रेशम कृषि मेला के मंच पर विराजमान मुख्य अतिथि श्रीमती राजेश्वरी बी., भा.प्र.से., आयुक्त, मनरेगा, झारखण्ड सरकार, विशिष्ट अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार एवं अन्य गणमान्य।

मेला के दौरान संस्थान द्वारा लगाये गये स्टॉल का उद्घाटन करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती राजेश्वरी बी., भा.प्र.से., आयुक्त, मनरेगा, झारखण्ड सरकार। साथ में है विशिष्ट अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार एवं अन्य गणमान्य।

दीप प्रज्वलित कर किसान मेला का उद्घाटन करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती राजेश्वरी बी., भा.प्र.से., आयुक्त, मनरेगा, झारखण्ड सरकार ।

किसान मेला की मुख्य अतिथि श्रीमती राजेश्वरी बी., भा.प्र.से., आयुक्त, मनरेगा, झारखण्ड सरकार का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

किसान मेला की विशिष्ट अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.के. सत्यनारायण।

तसर रेशम कृषि मेला में उपस्थित वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी/किसान एवं अन्य।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित आर.सी. बैठक का एक दृश्य।

राम किशन मिशन, राँची में आयोजित किसान मेला में इस संस्थान द्वारा लगाये स्टॉल का अवलोकन करते राम किशन मिशन के सचिव, स्वामी भवेशा नंद।

इस संस्थान द्वारा देवघर में आयोजित सामुदायिक संसाधन कर्मियों के संयुक्त प्रत्यायन कार्यक्रम का प्रमाण–पत्र वितरण समारोह का दीप जलाकर उद्घाटन करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

सामुदायिक संसाधन कर्मियों के संयुक्त प्रत्यायन कार्यक्रम में किसानों को प्रमाण–पत्र प्रदान करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

संस्थान द्वारा आयोजित बांका, बिहार में आयोजित तसर क्षेत्र में प्रौद्योगिकी पर आयोजित कार्यशाला में किसानों को प्रमाण–पत्र प्रदान करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

बु.त.रे.की.बी.संगठन, बिलासपुर में आयोजित कृषि मेला में इस संस्थान द्वारा लगाये गये स्टॉल पर तसर रेशम उत्पादन से सम्बन्धित गणमान्य अतिथि को जानकारी प्रदान करते इस संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का एक दृश्य ।

संस्थान में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान संस्थान की गृह पत्रिका रेशम वाणी, अंक–56 का विमोचन करते संस्थान के निदेशक डॉ.के. सत्यनाराण एवं अन्य वैज्ञानिक/अधिकारी।

संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशाला का एक दृश्य ।

संस्थान द्वारा पश्चिम बंगाल के किसानों को तसर रेशम उत्पादन के सम्बन्ध में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

राय विश्वविद्यालय, राँची के प्रशिक्षणार्थियों का संस्थान भ्रमण के दौरान तसर धागे से कपड़ा बुनाई के बारे में जानकारी प्रदान करते इस संस्थान के कर्मचारी।

स्वच्छता पखवाड़ा, 2023 के दौरान संस्थान द्वारा ग्राम हुटार (बेड़ो) में आयोजित रोड शो का एक दृश्य।

मीडिया सुर्खियाँ

रेशम वाणी के 56वें अंक का विमोचन

सेमिनार, 89 शोध पत्र प्रस्तुत किए

में रामकृष्ण मिशन की सेवा है सराहनीय

उत्कृष्ट उत्पादन के लिए 71 किसानों को मिला सम्मान

71 सर्वोत्तम उत्पादों के लिए किसान सम्मानित, सर्वश्रेष्ठ कृषक बने शंकर

तसर अनुसंधान केन्द्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम

नगड़ी में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

संवाद, पिस्कानगड़ी : केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी में सांख्यिकी आंकड़ों के विश्लेषण पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन संस्थान के निदेशक डा. के. सत्यनारायण ने दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होंने उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विभिन्न अनुसंधान प्रयोग में सांख्यिकी विश्लेषण का बहुत महत्व है। संस्थान के वैज्ञानी इसका अधिक से अधिक लाभ उठाएं। ताकि, शोध परिणामों को अधिक प्रभावी बनाया जा सके। कार्यक्रम में प्रशिक्षक के रूप में डा. एस गौड़ा (विज्ञानी सी) एवं डा. शियम मिश्र (सहायक प्रो. बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची) ने प्रशिक्षक के रूप में विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान एवं बुनियादी टसर रेशम किट बीज संगठन बिलासपुर सहित विभिन्न राज्यों में कार्यरत कुल 35 विज्ञानियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डा. विशाल मित्तल एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. एस गढ़ाद ने किया।

ମୋଡେଲ ଟସର ସଂରକ୍ଷଣ କର୍ମଶାଳା

तसर रेशम उत्पादन में व्यावहारिक अनुसंधान की जरूरत : निदेशक

स्मारिका का विमोचन करते अतिथि।

केंद्रीय तसर में एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन

नगड़ी में तसर संस्थान की राजभाषा पत्रिका रेशम वाणी का किया गया विमोचन

...स्का नगड़ी में पत्रिका रेशम वाणी का विमोचन

...स्का नगड़ी। केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी में शुक्रवार को तसर संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'रेशम वाणी' का विमोचन निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक ने राजभाषा पत्रिका के नियमित रूप से प्रकाशन पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा पत्रिका की गुणवत्ता में उत्तरोत्तर सुधार के लिए सराहना की। उन्होंने पत्रिका में प्रकाशित लेखों की चर्चा करते हुए कहा कि सभी लेख उत्कृष्ट कोटि के है। संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) कमल किशोर बड़ोला ने राजभाषा पत्रिका में रचनाएँ देने के लिए सभी रचनाकारों का आभार प्रकट किया।

पत्रिका का विमोचन

केंद्रीय तसर अनुसंधान संस्थान में कृषि मेला आयोजित, कई जानकारी दी गई

ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟରେ ମୋଡେଲ ଟସର ସଂରକ୍ଷଣ ସମ୍ପର୍କରେ ରାଜ୍ୟସ୍ତରୀୟ କର୍ମଶାଳା

ଗବେଷଣା ପାଇଁ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ ଓ କେନ୍ଦ୍ରୀୟ ରେଶମ ବୋର୍ଡ ମଧ୍ୟରେ ଏମଓୟୁ

...कीट विज्ञानियों ने 89 शोध पत्र किए प्रस्तुत

मॉडल टसर संरक्षण को लेकर राज्यस्तरीय कार्यशाला आयोजित

तसर संस्थान में कृषि मेला का आयोजन

मनरेगा में तसर की खेती की संभावनाएं : राजेश्वरी बी

सीमैप और केंद्रीय सिल्क बोर्ड-केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रांची के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

कपड़ा मंत्रालय, बेंगलुरु और लखनऊ विश्वविद्यालय, के बीच हुआ समझौता

पत्रिका रेशम वाणी का विमोचन

लविवि के इनक्यूबेशन सेन्टर को मिली सरकार से मंजूरी

एलयू व सीएसबी के बीच हुआ अनुबंध

सिल्क बोर्ड के साथ एमओयू साइन

एनबीटी, लखनऊ : सीएसआईआर-केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान (सीमैप) और रांची के केंद्रीय सिल्क बोर्ड-केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के बीच बुधवार को एमओयू साइन किया गया। सीएसआईआर-सीमैप के निदेशक डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी और केंद्रीय सिल्क बोर्ड के प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डॉ.के सत्यनारायन ने एमओयू पर हस्ताक्षर किया। करार के तहत दोनों संस्थान मिलकर रेशम उत्पादन में मदद करने वाले पौधों के साथ इंटर क्रॉपिंग सिस्टम पर शोध करेंगे। इस दौरान वैज्ञानिक

तसर रेशम कृषि मेला लगा

पिस्कानगड़ी, प्रतिनिधि। नगड़ी स्थित केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में शुक्रवार को एकदिनी तसर रेशम कृषि मेला लगाया गया। इस दौरान अतिथियों द्वारा संस्थान की प्रयोगशालाओं का भ्रमण, तसर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

संस्थान के निदेशक डॉ के सत्यनारायण ने कहा कि इस कृषि मेला

नवीनतम प्रौद्योगिकियों की जानकारी मिलेगी। वहीं अपने क्षेत्र में तसर खेती बेहतर तरीके से करके अतिरिक्त आय प्राप्त कर अपने परिवारों का भविष्य बना सकेंगे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मनरेगा आयुक्त राजेश्वरी बी झारखंड सरकार ने कहा कि मनरेगा में तसर की काफी संभावनाएं है, बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत ...

भारत में तसर संवर्धन और इसके विस्तार में कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका

विशाल मित्तल*, जगदज्योति बिकंदाकट्टी और के. सत्यनारायण

परिचय : भारत में प्रत्येक जिले में कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) स्थापित किए गए हैं ताकि ग्रामीण किसानों को नई तकनीकों को हस्तांतरित करके लाभान्वित किया जा सके। अधिकांश प्रौद्योगिकियां प्रयोगशालाओं में विकसित की जाती हैं। केंद्रीय रेशम बोर्ड (केरेबो) और भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद (आईसीएआर) द्वारा 7 मार्च 2021 को रेशम उत्पादन विस्तार के लिए सामान्य हित पर काम करने और केवीके के माध्यम से विकसित और बेहतर सेरी–प्रौद्योगिकियों के प्रसार द्वारा स्थायी रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है ताकि क्षेत्रीय मुद्दों और किसानों की जरूरतों पर अधिक–से–अधिक ध्यान केंद्रित किया जा सके।

उद्देश्य : कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण के माध्यम से तसर के विस्तार हेतु केवीके से जुड़े किसानों को कुशल बनाना।

तसर रेशम उत्पादन में केवीके का महत्व :

केवीके, रेशम उत्पादन की उत्पादकता और उत्पादन में वृद्धि, किसानों की आय और आजीविका सुरक्षा में वृद्धि के लिए आदर्श केंद्र हैं। केवीके समग्र ग्रामीण विकास के लिए प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं।

विभिन्न तकनीकों को किसानों तक पहुँचाने के लिए केवीके की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। केवीके फ्रंटलाइन प्रदर्शनों के आयोजन, ऑन–फार्म परीक्षण (ओएफटी) आयोजित करने, किसानों के ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने के लिए आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण आयोजित करने, बेहतर प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूकता पैदा करने, सहायता के लिए प्रौद्योगिकी के संसाधन और ज्ञान केंद्र के रूप में कार्य करने के लिए जमीनी संस्थान हैं।

विभिन्न अटारी एवं राज्यों में प्रशिक्षित केवीके वैज्ञानिकों की स्थिति

क्र. सं.	अटारी का नाम	राज्य	कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) का नाम एवं स्थान	प्रशिक्षित केवीके वैज्ञानिकों की संख्या
1.	अटारी–जोन III, कानपुर	उत्तर प्रदेश	कृषि विज्ञान केंद्र, सोनभद्र	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, झाँसी	1
2.	अटारी–जोन IV, पटना	झारखण्ड	कृषि विज्ञान केंद्र, पश्चिम सिंहभूम	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, गिरिडीह	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, देवघर	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, पाकुड़	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, गोड्डा	1
3.	बीएयू, राँची के तहत केवीके वैज्ञानिक		कृषि विज्ञान केंद्र, दुमका	3
			कृषि विज्ञान केंद्र, धनबाद	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, साहिबगंज	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, लोहरदगा	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, जामताड़ा	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, सिमडेगा	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, गढ़वा	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, लातेहार	1

क्र. सं.	अटारी का नाम	राज्य	कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) का नाम एवं स्थान	प्रशिक्षित केवीके वैज्ञानिकों की संख्या
4.	आरके मिशन/ केवीके राँची		कृषि विज्ञान केंद्र, आरकेएमए, राँची	1
5.	अटारी–जोन V, पश्चिम बंगाल	पश्चिम बंगाल	कृषि विज्ञान केंद्र, कल्याण	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, बाँकुड़ा	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, कल्याण	1
		ओडिशा	कृषि विज्ञान केंद्र, मयूरभंज	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, सुंदरगढ़	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, नबरंगपुर	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, क्योंझर	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, नुआपाड़ा	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, संबलपुर	1
6.	अटारी–जोन VIII, पुणे	महाराष्ट्र	कृषि विज्ञान केंद्र, गोंदिया	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, गडचिरोली	3
7.	अटारी–जोन IX, जबलपुर	छत्तीसगढ़	कृषि विज्ञान केंद्र, कोरबा	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, सिंगारभाटा	2
			कृषि विज्ञान केंद्र, केरलपाल	2
8.	आईजीकेवी, रायपुर, छत्तीसगढ़ के तहत केवीके के वैज्ञानिक	छत्तीसगढ़	कृषि विज्ञान केंद्र, दुर्ग	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, धमतरी	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, बस्तर	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, बिलासपुर	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, मैनपाट	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, अंबिकापुर	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, बलरामपुर	1
		मध्य प्रदेश	कृषि विज्ञान केंद्र, बालाघाट	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, मंडला	1
			कृषि विज्ञान केंद्र, गोविंदपुर	1
9.	अटारी–जोन X, हैदराबाद	आंध्र प्रदेश	कृषि विज्ञान केंद्र, पंडिरिमामिडी	2
		तेलंगाना	कृषि विज्ञान केंद्र, करीमनगर	2

विभिन्न राज्यों में प्रशिक्षित केवीके वैज्ञानिकों की संख्या

चर्चा :

- सार्वजनिक विस्तार प्रणाली में जनशक्ति की कमी को देखते हुए तसर रेशम उत्पादन में विस्तार, बीज उत्पादन, प्रशिक्षण और विस्तार में प्रशिक्षित केवीके वैज्ञानिक समग्र ग्रामीण विकास के लिए प्रकाश स्तंभ एवं प्रमुख भूमिका निभाने वाले संसाधन और ज्ञान केंद्र के रूप में कार्य करने के लिए जमीनी संस्थान हैं।
- इसी तारतम्य में मध्य और उत्तर क्षेत्र के 07 अटारी एवं अन्य कृषि विश्वविद्यालयों के 09 राज्यों क्रमशः झारखंड (23), छत्तीसगढ़ (13), ओडिशा (07), महाराष्ट्र (04), पश्चिम बंगाल (03), मध्य प्रदेश (03), उत्तर प्रदेश (02), आंध्र प्रदेश (02) एवं तेलंगाना (02) के 44 कृषि विज्ञान केन्द्रों (केवीके) से कुल 59 वैज्ञानिक/एस.एम.एस. को भविष्य की सेरी–विस्तार गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची द्वारा तसर संवर्धन एवं इससे सम्बंधित रेशम उत्पादन प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षित किया जा चुका है। इस प्रकार सार्वजनिक विस्तार प्रणाली में जनशक्ति की कमी को ध्यान में रखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण के माध्यम से तसर के विस्तार हेतु केवीके से जुड़े किसानों को कुशल बनाने का प्रयास किया जा रहा है ।

फील्ड प्रदर्शन और केवीके वैज्ञानिकों की सहभागिता

भविष्य की रणनीतियाँ : राज्य के रेशम उत्पादन विभागों और अन्य समानांतर संस्थानों के साथ क्षैतिज विस्तार और जनशक्ति की कमी की आवश्यकता को देखते हुए विभिन्न सरकारी योजनाओं/विकासात्मक परियोजनाओं के तहत विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्र एवं प्रशिक्षित केवीके वैज्ञानिक तसर के विस्तार हेतु एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

❐❐❐

*वैज्ञानिक–डी, के.त.अ.व प्र.सं., राँची, झारखण्ड

हिन्दी का उद्देश्य यही है, भारत एक रहे अविभाज्य

राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

सनक

इंजी. आशा शर्मा*

शेखर को सफाई बहुत पसंद है। चाहे घर हो या फिर घर के आस–पास... उसे हर जगह चकाचक चाहिए। यूँ तो इसे अच्छी आदत ही कहा जाता है लेकिन आदतें जब लत में बदलती हुई सनक के रूप में ढल जाती हैं तो फिर चाहे वो कितनी भी अच्छी क्यों न हों, परेशानी का कारण ही बनती हैं। लब्बोलुआब ये है कि शेखर भी सफाई के मामले में सनकी हो गया है। हालाँकि इस तरह की सनक महिलाओं में अधिक देखी जाती है लेकिन सनक का क्या ! वह स्त्री–पुरुष का भेद कहाँ देख पाती है। लग गई सो लग गई। शेखर को भी साफ–सफाई की लत लग चुकी थी और अब वह सनक में बदलकर उसे जकड़ती जा रही है। उसकी ये सनक इतनी अधिक बढ़ चुकी है कि मकड़ियाँ भी उसके घर का रुख करने से घबराने लगी हैं। मक्खी–मच्छर और कॉकरोच–चूहों का तो कहना ही क्या। कितनी ही तरह के स्प्रे और पेस्ट... अलग–अलग आकार के ब्रश और झाड़न... कपड़े और कागज के डस्टर–पौंछे... और भी न जाने कितने अड़गम–शड़गम... शेखर के घर में सजावट के सामान कम और पेस्ट कंट्रोल और साफ–सफाई करने के उपकरण अधिक दिखाई देते हैं। कहीं बाहर भी जाए तो शेखर की निगाहें इन्हीं सब को तलाशती रहती हैं। सनक का आलम ये है कि रात को बिस्तर पर लेटे हुए भी आँखें ऊपर छत के कोनों और पंखे को ही घूरती रहती हैं। जरा सी भी धूल नजर आ जाये या जाला दिखाई दे जाए तो जब तक वह साफ न हो जाए, उसे नींद नहीं आती। एकबार तो पंखा साफ करने के चक्कर में शेखर अपने घुटने भी फुड़वा चुका है। गनीमत रही कि सिर्फ घुटने ही फूटे जो बेटी मायरा को वीडियो कॉल पर दिखाई नहीं दिए, यदि सिर–माथा फूट जाता तो न जाने शेखर को कितने लेक्चर सुनने पड़ते। खैर ! तब से शेखर बड़े स्टूल पर चढ़ने की कोशिश तो नहीं करता लेकिन अगले दिन सुबह सबसे पहले वह कामवाली से यही धूल साफ करवाता है क्योंकि जब तक पंखा साफ नहीं हो जाता तब तक वह आँखों को चुभता रहता है। मन किसी दूसरे काम में लगता ही नहीं।

घर और स्कूल में साफ–सफाई का महत्व सभी को बताया–समझाया जाता है, शेखर ने भी इसे पढ़ा और समझा। जीवन में ढाला भी। विवाह के बाद अच्छा पति बनने के लिए शेखर ने यही तरीका अपनाया और देखते–ही–देखते पहले पत्नी मालती की निगाहों में और फिर पूरे मोहल्ले की आँखों में सबसे आदर्श पति बन गया। महिलाएं उसका उदाहरण देते हुए जब अपने पतियों को उलाहने देती थीं तो मालती का माथा गर्व से एक इंच और अधिक ऊपर की तरफ तन जाता था। बेटी मायरा छोटी थी तब कुछ समय व्यवधान अवश्य आया। उन दिनों तो घर की दीवारें मायरा के लिए चित्रकला करने का कैनवास हुआ करती थी। उसकी बनाई पेंटिंग्स को देखकर जहाँ मालती निहाल हुई जाती थी वहीं शेखर हर समय दीवारें और

दरवाजे पोंछता ही नजर आता था। इन निशानों से आसानी से निपटने के लिए उसने हजारों रुपये खर्च करके पूरे घर में ऑइल पेंट तक करवा डाला था। अब चूँकि पिछले कई बरसों से मायरा पढ़ाई, नौकरी और अब शादी के बाद घर से दूर है इसलिए घर में की गई एकबार की सफाई काफी समय तक बनी रहती है। घर में जो जहाँ है वह वहीं रहता है। मतलब ये कि व्यवस्था को बिगाड़ने वाला कोई नहीं इसलिए शेखर को अपना घर व्यवस्थित और बना–ठना देखने की आदत हो चली है। नौकरी से रिटायरमेंट के बाद उसके पास समय ही समय है इसलिए अक्सर उसके हाथ में स्प्रे की बोतल और डस्टिंग का कपड़ा ही दिखाई देते हैं। कुछ और साफ करने को नहीं दिखे तो स्प्रे बोतल लेकर पौधों पर ही छिड़काव करके उनकी धूल झाड़ता रहता है। कोई भी आदत दो मिनट वाले नूडल की तरह तुरत–फुरत में सनक नहीं बनती, यह तो धीमी–धीमी आँच पर साग की तरह पकती है यानी बहुत बरस लगते हैं किसी आदत को सनक बनने में। समय और अवसर की उपलब्धता इनके लिए उत्प्रेरक का काम करती हैं। एक तो पत्नी का साथ असमय ही छूट गया ऊपर से बच्चे भी साथ नहीं रहते इसलिए शेखर के पास अब समय की कोई कमी नहीं है। ऐसे में सनक की हद ये होने लगी कि अलबत्ता घर की कोई चीज इधर–से–उधर होती नहीं लेकिन यदि कभी हो भी जाये तो शेखर की बेचैनी तब तक कायम रहती है जब तक वह चीज वापस अपने यथास्थान पहुँच न जाए। ''पापा, आप ओसीडी के शिकार होते जा रहे हो।'' मायरा उसे आगाह करती। ऐसा नहीं है कि वह खुद अपनी मानसिक स्थिति से वाकिफ नहीं था। वह भलीभाँति जानता था कि यह एक मानसिक विकार है लेकिन वह चाहकर भी इस सनक से छूट नहीं पा रहा था, नाते–रिश्तेदारों और मित्र–परिचितों के सामने कई बार उपहास का पात्र बनने के बाद भी।

पिछले दिनों की ही बात है। मायरा की सहेली दिल्ली आई थी किसी काम से। बेटी ने आग्रह किया–''पापा, शिखा अपने परिवार के साथ दो दिन के लिए दिल्ली आ रही है। मैं आपके लिए कुछ सामान भेज रही हूँ। और हाँ ! आप उसे अपने पास

रुकने के लिए जरूर कहिएगा। इस बहाने आप के भी दो दिन अच्छे बीत जाएंगे। परिवार वाली फीलिंग आएगी।'' बेटी के कहे का मान रखने के लिए उसने शिखा से अपने घर रुकने का आग्रह किया और शिखा अपने पति और पाँच साल के बेटे के साथ वहाँ रुक भी गई। ये दो दिन शेखर ने कितने मानसिक तनाव में काटे, यह सिर्फ वही बयान कर सकता है। बच्चे के पीछे भागते–भागते उसे इतनी अधिक थकान हो जाती कि मन रोने को करता। ''कहीं दीवार पर पेन न चला दे... किसी कुशन या तकिये की जगह न बदल दे... कोई जूठा बर्तन किसी साफ से न छुआ दे... किसी पर्दे से गंदे हाथ न पोंछ ले... जैसी एक नहीं बल्कि अनेक चिंताएँ दो दिन तक उसके आगे–पीछे घूमती उसे हकलाना किए रही लेकिन बेटी की सहेली का बच्चा था इसलिए वह अपने सीने पर पत्थर रखकर सबकुछ झेलता रहा। जिस दिन शिखा विदा हुई उस रात शेखर ऐसी सपट नींद सोया कि अगले दिन अलार्म बजने पर भी नहीं उठा। ये अलग बात है कि सोने से पहले पूरे घर को व्यवस्थित करना वह नहीं भूला था। इस निगोड़ी सनक के चलते वह अकेला इस चार कमरों के मकान में पड़ा अपने हाथों से बनाई रोटियां खा रहा है वरना आराम से बच्चों के पास रहता और परिवार का आनंद लेता लेकिन उसके जीवन के आनंद को इस एक सनक ने लील लिया। शेखर जानता है कि वह बच्चों वाले घर में एडजस्ट नहीं कर पायेगा और ना ही बच्चे उसकी सनक झेल पाएंगे इसलिए ''मैं भला... मेरा घर भला...''वाली युक्ति का पालन करता है। न वह खुद कहीं जाता है और न कोई उसके पास आता है। बेटी–दामाद ने बहुत बार कहा कि मकान का पिछला हिस्सा किराए पर चढ़ा दो। किराए से मतलब नहीं लेकिन आपकी देखभाल होती रहेगी तो हम चिंता मुक्त रहेंगे लेकिन उन्हें चिंता मुक्त करने के लिए शेखर खुद अपने लिए चिंता मोल नहीं लेना चाहता इसलिए उनकी बात नजरअंदाज करता आ रहा है। मगर इस बार उसके सारे बहाने धरे के धरे रह गए। इस बार मायरा तय करके ही आई थी और जैसा वह ठान कर आई थी, उसने वैसा ही किया। घर के पिछले हिस्से में बने दो कमरे एक छोटे से परिवार को किराए पर दे दिए। किरायेदार विशाल, मायरा की पहचान का था। विशाल के परिवार में उसकी पत्नी तन्वी और एक साल की बेटी अन्या थी। मायरा ने सुथार से कहकर घर के दोनों हिस्सों के बीच एक जाली वाला दरवाजा लगवा दिया ताकि शेखर की निजता भी बनी रहे और उसकी देखभाल भी होती रहे। ''घर में साफ–सफाई का पूरा ध्यान रखना। यह मेरी पहली शर्त है। मुझे गंदगी बर्दाश्त नहीं।'' कहकर शेखर ने तन्वी को चेता दिया था। तन्वी ने हँसकर उनकी शर्त स्वीकार कर ली। एक सप्ताह के बाद ही विशाल अपने छोटे से परिवार के साथ यहाँ शिफ्ट हो गया। शेखर के घर की नीरवता में सेंध लग गई। अभी सुबह का अलार्म भी नहीं बजा था कि अन्या का अलार्म बजने लगा। घर के हिस्से बेशक दो थे लेकिन अन्या की तीखी आवाज को कोई दीवार या दरवाजा नहीं रोक पाया। उसने एक बार रोना–चिल्लाना शुरू किया तो फिर किसी साधन से नहीं बहली। शेखर ने अपने कानों में इयरफोन भी ठूँस लिए लेकिन अन्या की आवाज को नहीं रोक सका। थक हार कर वह बिस्तर छोड़कर उठ खड़ा ही हुआ। समय देखा तो अभी सुबह के चार ही बजे थे। ''अब उठ ही गया हूँ तो चलो सुबह की सैर पर निकला जाए।'' सोचते हुए शेखर फ्रेश हुआ और सैर पर निकल गया। पार्क में कई नए–पुराने परिचित मिल गए। उनसे बातचीत करना शेखर को अच्छा लगा। वापसी में पार्क के बाहर खड़े जूस वाले से ताजा लौकी का रस पिया तो सारी सुस्ती दूर हो गई। चूँकि लौकी का रस पहली बार पिया था इसलिए कुछ ही देर में पेट में गुड़गुड़ाहट होने लगी। शेखर ने तेज–तेज कदम बढ़ाकर घर हो लिया और सबसे पहले वाशरूम गया। महीनों बाद पेट इतनी अच्छी तरह से साफ हुआ था कि मन तृप्त हो गया। बाहर निकला तो अन्या की आवाज ने एकबार फिर उसका स्वागत किया। इस बार आवाज रोने की नहीं बल्कि किलकने की थी। कुछ दिनों में शेखर का नया शेड्यूल अन्या के हिसाब से सेट हो गया। सुबह जल्दी उठकर सैर को जाना और नियमित रूप से लौकी का रस पीना उनकी दिनचर्या बन गई।

दोपहर में भी उनका सोना–जागना अन्या की नींद के हिसाब से ही होता। हालाँकि उनकी दिनचर्या पर अन्या का अत्यधिक प्रभाव था लेकिन प्रत्यक्ष रूप से वे अन्या से दूरी बनाए हुए थे। अन्या की आवाजें उनके आस–पास होती थी लेकिन वे उसकी तरफ से अपने कान बन्द रखने का प्रयास करते थे। इस बीच जो एक सुकून वाली बात हुई वो ये कि तन्वी उसे सुबह–शाम स्वादिष्ट सब्जी बनाकर देने लगी। पहले–पहल शेखर ने मना किया लेकिन धीरे–धीरे स्वाद उनकी जुबान पर चढ़ने लगा और उन्हें तन्वी की बनाई सब्जी का इंतजार रहने लगा। एक दिन दोपहर को शेखर आराम करने के मूड से बिस्तर पर लेटा ही था कि अन्या के रोने की आवाजें आने लगी। ''ये रोज की नई मुसीबत अच्छी गले पड़ी।'' सोचते हुए शेखर भुनभुनाया। उसने कुछ देर सहन करने की कोशिश की लेकिन अन्या का रोना कम होने की बजाय बढ़ता ही जा रहा था। शेखर से रहा नहीं गया। वह उठकर जाली वाले दरवाजे के पास आया। ''क्या हुआ तन्वी ? बच्ची क्यों रो रही है ?'' शेखर ने आवाज लगाई। दूसरी तरफ से कोई आवाज नहीं आई। कुछ पल के इंतजार के बाद शेखर ने दरवाजा खोला और तन्वी के कमरे की तरफ जाने लगा। वहाँ देखा तो तन्वी बिस्तर पर बेसुध पड़ी है और अन्या रो रही है। छूकर देखा तो तन्वी को तेज बुखार था। शेखर ने पहले डॉक्टर और उसके बाद विशाल को फोन किया। विशाल के आने तक

वह तन्वी के माथे पर ठंडे पानी की पट्टी रखता रहा। इस बीच उसने अन्या को भी गोद में लेकर चुप करवाया। तन्वी तो खैर कुछ दिनों में ठीक हो गई लेकिन अन्या शेखर की गोद को पहचानने लगी थी। वह उसकी आवाज सुनते ही उसके पास आने की जिद करने लगी थी। अन्या अब डेढ़ साल से ऊपर हो चली थी। वह शेखर को देखते ही ''बाबा–बाबा'' कहकर मचलने लगती। तन्वी की गोद से छिटकने लगती। हारकर शेखर को उसे गोद में लेकर दुलारना ही पड़ता। इसमें भी वह पूरा ख्याल रखता था कि बच्ची उसके वाले हिस्से में न आने पाये। कहीं दीवारें खराब कर दी तो ? या हो सकता है उसके जूतों में मिट्टी ही लगी हो। फर्श गंदा हो गया तो फिर से पौंछा लगाना पड़ेगा। जिंदगी में सब कुछ हमारा सोचा कहाँ हुआ करता है और वैसे भी हारी–बीमारी भला किसके हाथ होती हैं। बढ़ती उम्र तो यूँ भी बीमारियों का बुलावा ही होता है। एक रोज शेखर सुबह उठा तो शरीर में हल्की हरारत महसूस हुई। सैर को टालकर बिस्तर पर ही पड़ा रहा। कुछ हिम्मत जुटाकर चाय बनाने रसोई की तरफ गया तो खड़ा नहीं रहा गया। किसी तरह चाय बनाई और बुखार की दवा ले ली। अकेले बुजुर्गों को इतना तो करना ही पड़ता है। दोपहर को जब तन्वी सब्जी देने आई तब उसे शेखर की तबियत का पता चला। उसने विशाल को फोन किया और विशाल डॉक्टर को लेकर आया। डॉक्टर शेखर की जाँच करने लगा। तन्वी भी अन्या की उंगली पकड़े पास ही खड़ी थी। बच्चे भला उंगली की कैद में रहने वाले होते हैं क्या ? अन्या के लिए तो घर का यह हिस्सा बिल्कुल नया था। वह कभी यहाँ तो कभी वहाँ दौड़ने लगी। शेखर का ध्यान डॉक्टर की हिदायतों की तरफ कम और अन्या की भाग–दौड़ की तरफ अधिक लगा था। अन्या के जूतों पर लगी मिट्टी शेखर को किरकिरी सी लग रही थी। उसका दिल चाह रहा था कि वह अभी उठकर पूरे घर में पोंछा फेर दे। ''इन दिनों डेंगू अधिक फैल रहा है। लक्षण भी वैसे ही लग रहे हैं। मेरे खयाल से हमें जाँच करवा लेनी चाहिए।'' डॉक्टर ने सलाह दी लेकिन शेखर ने कुछ सुना नहीं। उसका ध्यान तो अब भी अन्या पर ही लगा था। तन्वी शायद उनकी दुविधा समझ गई थी। उसने फौरन अन्या को पकड़ा और अपने वाले हिस्से में ले गई। विशाल ने एक नर्स को घर बुलाकर शेखर का ब्लड सैंपल जाँच के लिए भिजवाया। जाँच में शेखर को डेंगू की पुष्टि हो गई। विशाल ने मायरा को फोन पर सूचना दी लेकिन खुद उसकी सास भी अभी डेंगू की चपेट में थी इसलिए वह चाहकर भी पिता की देखभाल करने नहीं आ पा रही थी। ऐसे में शेखर की देखभाल का जिम्मा तन्वी ने अपने कंधों पर ले लिया। डॉक्टरी दवाओं के साथ–साथ तन्वी उसे पपीते के पत्तों का रस, नारियल पानी और बकरी का दूध पीने के लिए देती। सुबह–शाम कीवी खिलाती और हर समय उसके आस–पास बनी रहती। तन्वी की मौजूदगी शेखर को भली लगती लेकिन अन्या का अपनी माँ के साथ होना शेखर को शांतचित्त नहीं होने दे रहा था। उसका ध्यान हर समय अन्या के इर्द–गिर्द ही बना रहता। अन्या के होते वह आँखें मूँदकर आराम भी नहीं कर पा रहा था। ''तन्वी बेटा ! जरा अन्या के हाथ से पेंसिल ले लेना। कहीं दीवारों पर न चला दे... उसके जूते खोलकर ही बिस्तर पर चढ़ने देना... वो देखना, उसने खाना फर्श पर बिखेर दिया। जरा साफ कर दे...''जैसी अनेक हिदायतें वह तन्वी को देता रहता। तन्वी बेचारी शर्मिंदा सी उनके निर्देशों का पालन करती रहती लेकिन क्या करती, मजबूरी थी। अन्या को अकेला भी तो नहीं छोड़ सकती थी। ''काश ! अगर इसकी दादी–नानी हमारे साथ रह रही होती तो अन्या को उनके भरोसे छोड़ मैं बेफिक्र होकर अंकल की देखभाल कर सकती थी।'' सोचती हुई तन्वी अनायास ही संयुक्त परिवार प्रणाली की पक्षधर होने लगती।

पाँच दिन बीत गए। डेंगू की गंभीरता के कारण शेखर की प्लेटलेट्स कम होती जा रही थी। सब चिंतित हो उठे। प्लेटलेट्स चढ़ाने की संभावना पर विचार होने लगा। ''डेंगू में ऐसा होता है। शुरुआत में तीन–चार दिन प्लेटलेट्स कम होती हैं लेकिन फिर अपने–आप इनमें सुधार होने लगता है। पेशेंट को दवाओं के साथ–साथ इनके पूरे आराम का भी ध्यान रखा जाये तो स्थिति में जल्दी सुधार संभव है।'' डॉक्टर ने अपना मत दिया लेकिन शेखर निश्चिंत होकर आराम भी तो नहीं कर पा रहा था। अन्या की मौजूदगी उसकी शांति का हरण जो कर रही थी। उसकी इस हालत के लिए तन्वी कहीं न कहीं खुद को दोषी समझकर ग्लानि और अपराध बोध से भरी जा रही थी। उसने राहत की साँस ली जब मायरा ने फोन पर बताया कि उसकी सास की तबियत अब ठीक है और वह शेखर की देखभाल के लिए आ रही है। अगले दिन सुबह ही मायरा अपने मायके आ गई। शेखर ने देखा कि मायरा अकेली ही आई है। अपने बेटे को साथ नहीं लाई। शेखर के भीतर कुछ चटक सा गया। उसे अपनी सनक पर शर्म भी आई कि उसके कारण नाती अपने ननिहाल के लाड़–प्यार से वंचित हो रहा है। ''बिट्टू तुम्हारे बिना रह लेगा ? उसे भी साथ ले आती।'' शेखर ने मायरा से कहा। ''उसे ले आती तो उसी में उलझी रहती। फिर आपकी देखभाल कैसे होती ?'' मायरा ने मुस्कुराते हुए कहा लेकिन शेखर को न जाने क्यों यह तंज सा लगा। मायरा के आने के बाद अब अन्या का इधर आना बंद हो गया। तन्वी आती है तब भी बच्ची को विशाल के पास छोड़कर ही आती है। विशाल भी ऐसा ही करता है। मायरा पिता के लिए वह सब कर रही थी जो डॉक्टर ने कहा था। समय पर दवा और खाना देना शेष समय आराम करवाना। मायरा उससे अधिक बात नहीं करती थी। फोन पर भी बात करनी हो तो छत पर चली जाती थी। खाली समय में मायरा

घर की साफ–सफाई में जुटी रहती। उसकी कोशिश रहती कि पापा को कोई मानसिक बेचैनी न हो। दो ही दिन में घर बिल्कुल शीशे की तरह चकाचक दिखाई देने लगा। घर में वैसी ही शांति भी वापस हो गई जैसी शेखर चाहता था लेकिन पता नहीं उसे ऐसा क्यों लग रहा था कि घर चुप सा हो गया हो। दीवार के परली तरफ से आती अन्या की आवाजें उसे बुलाती सी प्रतीत होने लगी। उसका मन अन्या की उपस्थिति के लिए तरसने लगा। शेखर को मन की शांति अब भी नहीं मिल पा रही थी। बड़ी अजीब शै है ये मन भी। गणित की तरह इसकी चाहत का कोई एक तयशुदा फॉर्मूला नहीं है। पहले अन्या के होने से वह बेचैन था और अब उसकी अनुपस्थिति उसे खल रही है। अन्या वहाँ न होकर भी वहीं बनी हुई थी। दवा और देखभाल के प्रभाव से शेखर अब पूरी तरह से स्वस्थ हो गया था। मायरा ने भी वापस जाना चाहा। जाने से एक रात पहले उसने शेखर से कहा– 'पापा, मैं चाहती हूँ कि विशाल से यह घर खाली करने को कह दूँ। खामख्वाह आपको परेशानी होती है।'' मायरा की बात सुनते ही शेखर चौंक गया। ''उनसे भला मुझे क्या परेशानी होने लगी ? बल्कि उनके यहाँ रहने से तो मुझे फायदा ही है। बेचारे कितना खयाल रखते हैं मेरा।'' शेखर ने कहा। ''लेकिन अन्या अभी बहुत छोटी है पापा। समझती नहीं है। आपकी तरफ आने से मना करो तो रोती–चीखती है और आने दें तो पूरे घर को अस्त–व्यस्त कर देती है। तो बेहतर होगा हम वो हिस्सा खाली ही करवा लें।'' मायरा ने झिझकते हुए कहा। शेखर कुछ जवाब नहीं दे पाया लेकिन उसके दिमाग में एकाएक पिछले दस–पंद्रह दिन घूम गए। मन आईना बनकर सामने तन गया। ''न नाखून कटे, न दाढ़ी बनी। बालों का तो कहना ही क्या। और तो और शुरू के तीन दिन तो वह नहाया भी नहीं था। अंदर के वस्त्र तक नहीं बदल पाया था। तब मुझे अपने–आप से तो घिन नहीं आई थी।'' शेखर सोचने लगा। अचानक आईना उसे आने वाले कल की झलक दिखाने लगा। वह बीमार है। उससे उठकर चला भी नहीं जा रहा। दैनिक कर्म भी बिस्तर पर ही हो रहे हैं। कमरे की साफ–सफाई तो बाई कर देती है लेकिन खुद उसकी सफाई ? उसके लिए तो उसे नर्स के आने तक इंतजार करना ही पड़ता है। कभी देर–सबेर हो जाये तो उसके आने तक नरक में सड़ रहा है। शेखर अपने चारों तरफ गंदगी महसूस कर रहा है। शेखर को उबकाई सी आई। मायरा ने उसे पानी का गिलास थमाया। ''क्या सोच रहे हैं पापा ? ''मायरा ने पूछा। ''कुछ नहीं। जा, तू जाकर अन्या को लेकर आ। वह कितनी देर से ''बाबा–बाबा'' की रट लगाए हुए है।'' कहते हुए शेखर मुस्कुराया। मायरा आश्चर्य से उसे देखती अन्या को लेने चली गई। अन्या आते ही जूतों सहित बिस्तर पर चढ़कर शेखर के पास बैठ गई। उसके हाथ चॉकलेट से चुपड़े हुए थे। शेखर ने उसके माथे को प्यार से चूम लिया। ''हम ये हिस्सा खाली नहीं करवाएंगे। अन्या यहीं रहेगी। मेरे पास।'' शेखर ने अन्या को अपनी गोद में बिठाते हुए कहा। ''लेकिन, साफ–सफाई ? आपको ऐसे रहने की आदत नहीं है ना।'' मायरा ने शंकित होते हुए जानना चाहा।

''आदतों का क्या है बेटा, जैसी डालो डल जाती हैं। कोशिश करो तो बदल भी जाती हैं। बस सनक नहीं बननी चाहिए।'' शेखर ने कहा और हँस दिया। मायरा ने देखा कि अन्या ने अपने चॉकलेट वाले हाथ शेखर की बेडशीट पर पोंछ दिए। शेखर अब भी मुस्कुरा रहा था।

❐❐❐

*ए–123, करणी नगर (लालगढ़), बीकानेर–334001, राजस्थान

रचनाकारों के लिए सूचना

रेशम वाणी के सभी सम्मानित रचनाकारों से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाओं के साथ अपना बैंक विवरण यथा-बैंक का नाम, खाता संख्या, IFSC कोड एवं मोबाइल नम्बर भी भेजें ताकि रचनाओं के मानदेय का भुगतान केवल ऑन-लाइन माध्यम से उन्हें समय पर किया जा सके। साथ ही रचना के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ तथा अपना पूरा डाक पता भी भेजें।

रचनाकारों से अनुरोध है कि रचनाएँ साफ-साफ हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टंकित रूप में भेजें तथा यदि संभव हो तो रचना की सॉफ्ट प्रति ई-मेल (ctrtihindi@gmail.com) के माध्यम से भेजें। रचनाएँ यथा समय रेशम वाणी में प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा तथापि अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जाएंगी।

संपादक

घर वापसी

महेश कुमार केशरी*

ईद आने में कुछ ही दिन बाकी थे। लगभग सालभर पहले फरहाना, उस्मान, अकीदा और अकील अपने दादा–दादी से अलग होकर शहर में रहने का फैसला करके चले आये थे। शहर में जब वे आये तो गाँव भूलने लगे और भूलने लगे थे अपने माँ–बाप बख्तियार मियाँ और जुबैदा बानो को, लेकिन शहर आने के बाद उस्मान को एक बात बार–बार कचोटती और वो बात थी अकील की। अकील बात–बात पर या खेल–खेल में अपने अम्मी और अब्बू से कहता कि मैं भी जब बड़ा हो जाऊँगा तो मैं भी आप लोगों को छोड़कर बहुत दूर चला जाऊँगा। जैसे आप दादा–दादी को छोड़कर चले आये हैं। हालाँकि, ये बात वो खेल–खेल में ही कहता लेकिन ये बात जहर भरे तीर की तरह उस्मान के सीने में चुभती। अकील, अक्सर ये बातें खेल–खेल में कहता। कभी–कभी वो ये भी कहता कि वो उसके पड़ोस में ही रहने वाली नूरी के साथ शादी करेगा और उसके साथ हमेशा–हमेशा के लिये विदेश चला जायेगा। नूरी मेरी दुल्हन है। मैं उससे ही शादी करूँगा। अकील की उम्र अभी दस–बारह साल थी। उसकी बातों को वैसे तो गंभीरता से लेने की कोई जरूरत नहीं थी लेकिन ये बात उस्मान और फरहाना के दिल में फाँस की तरह धँस जाती। अकील कहीं बाहर से खेलकर अभी आ रहा था। उसने बैट और बॉल किनारे अलमारी में रखा और आते ही उसने एक अजीब सा सवाल कर दिया। उस समय उस्मान अपनी पैंट को उतारकर लुँगी पहनकर कुर्सी पर बैठे ही थे कि अकील बोला–''अब्बा, मुझे, दादाजी और दादी की बहुत याद आती। हम लोग उनसे मिलने क्यों नहीं जाते ? मैं जब बड़ा हो जाऊँगा तो उनसे मिलने जाऊँगा और मुझे कहीं कोई नौकरी मिल गई तो उन्हें मैं अपने साथ लेकर रहूँगा। मुझे उनकी बहुत याद आती है। आपको नहीं आती ? हम दादा–दादी से मिलने कब जायेंगे ? साल भर तो होने वाला है, हमें दादा–दादी से अलग होकर रहते हुए। दादी के हाथ की बिरयानी और खुरमे की बहुत याद आ रही है, अब्बू ! आप दादी के साथ चलकर क्यों नहीं रहते ?'' उस्मान ने सालन पका रही फरहाना की तरफ नजर फिराकर देखा। फरहाना उनकी बातें सुनकर उनकी ओर ही देख रही थी। तभी, होमवर्क कर रही अकीदा भी उस्मान से बोली–''हाँ, अब्बू चलो ना दादा–दादी से मिलने, बहुत दिन हो गये, मुझे भी उनकी बहुत याद आती है।'' ''हाँ बेटा चलेंगे।'' उस्मान बोला। ''अकील जब तुम बड़े हो जाओगे तो और किसको–किसको साथ लेकर रहोगे ?'' फरहाना ने ऐसे ही पूछ लिया। अकील मासूमियत के साथ बोला–''बस, अपने दादा–दादी को साथ लेकर रहूँगा और किसी को नहीं।''

''हमें अपने और नूरी के साथ लेकर नहीं रहोगे ? ''फरहाना ने पूछा। ''नहीं, मैं केवल अपने दादा–दादी और नूरी के साथ रहूँगा। आपके साथ नहीं रहूँगा। आपको तो पता है दादी के पैरों में कितना दर्द रहता है। वो ठीक से चल भी नहीं पातीं। लेकिन, बिरयानी और खुरमें बहुत बढ़िया बनाती हैं। उनके साथ ही रहूँगा। मैं उनकी खूब सेवा करूँगा। उनके पैर दबाऊँगा। तेल से उनके घुटने मालिश करूँगा। बाजार से दौड़कर सौदा–सुलफ ले आऊँगा। उनको कोई तकलीफ नहीं होने दूँगा, मैं।'' ''बिरयानी और खुरमे तो मैं भी बनाती हूँ। क्या मेरी बिरयानी और खुरमें तुम्हें पसंद नहीं हैं, और जब तुम इतना काम करोगे तो थक नहीं जाओगे ?''

''बिरयानी और खुरमें तो तुम भी बनाती हो लेकिन, दादी वाले खुरमें की बात ही निराली है। वैसे खुरमें तो पूरी दुनिया में कोई नहीं बना सकता जैसी मेरी दादी बनातीं हैं और काम का क्या है, जब मैं थक जाऊँगा तो फिर से आराम कर लूँगा और फिर से दादा–दादी के कामों में जुट जाऊँगा।''

''मुझे और अपने अब्बू को कहाँ रखोगे ?''

''तुम दोनों को मैं छोड़कर चला जाऊँगा। जैसे तुमने दादा–दादी को छोड़ दिया।''

''ये, इस ढँग की बातें तुम्हें कौन सिखाता है कि तुम अपने माँ–बाप के साथ ना रहकर अपने दादा–दादी के साथ रहो। क्या बख्तियार और जुबैदा तुमसे मिलने स्कूल में आते हैं या उनसे तुम्हारी फोन पर बातें होती हैं। बताओ मुझे।''

''अम्मी बड़ों को उनके नाम से नहीं बुलाते। आपको पता होना चाहिए। ना तो दादा–दादी मुझसे मिलने स्कूल में आते हैं और ना ही मुझसे फोन पर उनकी बातें होती है। दरअसल दादा–दादी और माँ–बाप के कदमों में तो जन्नत होती है और माँ के पैरों में तो स्वर्ग होता है।''

''अरे, वाह ! तुम तो दो तरह की बातें एक साथ कह रहे हो। एक तरफ तो तुम कहते हो कि माँ–बाप के पैरों में जन्नत होती है। वहीं दूसरी तरफ तुम ये कहते हो कि तुम अपने माँ–बाप के साथ रहना भी नहीं चाहते। आखिर, तुम चाहते क्या हो ? तुम्हारी बातें मेरी समझ में नहीं आती हैं।'' ''जिस समय दादा–दादी को आप लोगों की सबसे ज्यादा जरूरत है, उस समय आप लोग यहाँ अलग रह रहे हैं। सोचिये उन बुजुर्गों को

शेष पृष्ठ 37 पर...

बारिश थमने के बाद

डॉ.देवांशु पाल*

शाम को दफ्तर से घर लौटने के लिए जैसे ही बाहर गेट के पास पहुँचा, आसमान पर काले बादल गुड़गुड़ाने लगे थे। रास्ते में ही बारिश शुरू हो गई थी। अगस्त का महीना था, बारिश का महीना। लेकिन इन दिनों बारिश पहले जैसी कहां होती है। वैसे भी शहर के हालात ऐसे हैं कि कंक्रिटों की बनी ऊँची इमारतों के बीच बहुत कम पेड़ देखने को मिलते हैं। आसमान पर बादल का बनना मुश्किल हो गया है। ऐसे समय में बारिश के मौसम में भी बारिश न होना या कम होना आश्चर्य की बात नहीं है। छह–सात साल पहले जब मैं गाँव से शहर नौकरी के लिए आया था, उस वक्त यह शहर इतना व्यस्त और फैला हुआ नहीं था। राज्य के बँटवारे के बाद जिस तेजी से शहर का विकास हुआ वह अकल्पनीय है। देखते ही देखते इन वर्षों में मल्टी परपज दुकानें, कॉम्प्लेक्स, मॉल तथा बहु–मंजिला मकानों के बनने से शहर का नक्शा ही बदल गया। घर पहुँचते ही बारिश तेज हो गई थी। रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। बहुत दिनों के बाद शहर में ऐसी बारिश हो रही थी। दस बाई बारह के किराये के कमरे में पिछले तीन सालों से रह रहा हूँ। कमरे में पहुँचकर बत्ती जलाई फिर कपड़े बदल कर जैसे ही बाथरूम की ओर जाने लगा तभी बिजली चली गई। हवा तेज चलने लगी थी। घरों के साथ–साथ बाहर सड़कों की बत्तियाँ भी चली गई थीं। चारों तरफ घुप्प अंधेरा छा गया। मैं बिस्तर पर बैठ गया और बिजली आने की प्रतीक्षा करने लगा। पन्द्रह–बीस मिनट गुजर जाने के बाद भी जब बिजली नहीं आई तब मोमबत्ती जलाई। तभी अचानक मेरी नजर खिड़की के बाहर शेड के नीचे खड़ी उस औरत पर पड़ी, जो उस वक्त वहाँ अकेली खड़ी थी। मैंने खिड़की से उसे कमरे के अन्दर बुलाना ठीक नहीं समझा। दरवाजे से बाहर निकलकर उसे आवाज दी। वह औरत वहीं ठिठककर खड़ी रही। मैंने फिर कहा–''बारिश में बाहर क्यों खड़ी हो अंदर आ जाओ.....''। औरत तब भी चुप खड़ी थी। ज्यादा कुछ कहना उचित नहीं समझा, दरवाजा खुला छोड़कर मैं कमरे में लौट आया। थोड़ी देर बाद वह औरत दरवाजे की चौखट पर आकर खड़ी हो गई। –''अंदर आ जाओ..... बिजली आने पर चली जाना.....'' मैंने कहा। औरत कुछ देर तक खड़ी रही। फिर वहीं चौखट के पास बैठ गई। उसकी गोद में दुधमुँहा बच्चा था। जिसे उसने आँचल में ढाँककर अपने दोनों हाथों से पकड़ रखा था। वह औरत पूरी तरह से भीग चुकी थी। उसका कपड़ा गीला होकर बदन से चिपक गया था बच्चे के पाँव आँचल से बाहर निकले हुए थे। बाहर अंधेरा था। वह औरत डरी हुई सी थी। इस भीषण बारिश में फँसी, घुप्प अंधेरे कमरे में वह अपने–आप को एकदम अकेली और असुरक्षित महसूस कर रही थी। वह एक ही मुद्रा में बैठी हुई थी और उसकी आँखें मेरी तरफ गड़ी हुई थी। इस भीषण बारिश में भीगने के बाद भी उसके हाथ–पाँव काँप नहीं रहे थे और न ही उसकी आँखें जल्दी–जल्दी झपक रही थीं। मुझे वह औरत पास की झोपड़पट्टी की लगी। एकबार मैंने सोचा कि उससे बातें करूँ, यही पूछूँ कि कहाँ से आ रही हो ? पर कोई बात पूछने के लिए जब मैं उसकी तरफ देखता हूँ उसकी निष्पलक आँखें मेरी तरफ गड़ी रहती हैं। मैं उससे कुछ नहीं कह पाता हूँ और अपनी नजर हटा लेता हूँ। वह औरत मुझसे बहुत ज्यादा डरी हुई थी। मैं भी यह तय नहीं कर पा रहा था कि इस वक्त उसकी क्या सहायता करूँ। पूछूँ कि वह भूखी तो नहीं है, सुबह से कुछ खाया कि नहीं, या फिर बचा हुआ खाना रसोई से निकालकर उसके सामने रख दूँ और कहूँ–''इसे खा लो, बासी नहीं है''। कहीं वह बीमार तो नहीं ! दवाई के लिए पूछूँ या किसी डॉक्टर का पता बता दूँ। ऐसा भी हो सकता है कि उसके आदमी ने शराब के नशे में इसकी खूब पिटाई की हो और वह घर से भाग आई हो या बदचलन भी हो सकती है, इसका यह बच्चा नाजायज भी हो सकता है, पुलिस के डर से भाग आई होगी। ऐसे ही अनेक सवाल मेरे अंदर उमड़ने लगे थे। लेकिन मुश्किल यह थी कि मैं उससे कोई सवाल नहीं कर पा रहा था। कहीं वह डरकर भाग तो नहीं जाएगी। इसलिए चुप रहना ही बेहतर समझा। यहाँ तक कि तकिए के पास रखे सिगरेट के पैकेट से भी हाथ खींचना पड़ा, कि कहीं वह सिगरेट पीने के अंदाज को गलत न समझ बैठे। कमरे में दाखिल हुए उसे पन्द्रह–बीस मिनट हो गए थे। अब तक वह अच्छी तरह से जान गई होगी कि मैं किराए के इस मकान में अकेले रहता हूँ। इस वक्त कमरे में मेरे और उसके अलावा और कोई नहीं है। वह मेरे सामने बैठी हुई है और मैं उसकी तरफ देखने की हिम्मत भी जुटा नहीं पा रहा हूँ। उसकी चुप्पी और निष्पलक आँखें मेरी तरफ लगातार घूर रही थीं। क्या सोच रही होगी वह अभी इस वक्त मेरे बारे में। कोई अच्छी बात तो सोच नहीं रही होगी। सोच रही होगी कि मैंने उसे इस बारिश में घुप्प अंधेरे कमरे में क्यों बुलाया है। थोड़ी सी सहानुभूति व हमदर्दी का नाटक दिखाकर कोई कुत्सित षड्यंत्र रचने की तैयारी तो नहीं है। इस वक्त वह कुछ भी सोच सकती है मेरे बारे में। मेरा उठना, बैठना, चलना, हाथ–पाँव हिलाना यह सभी हरकतें उसे शक के दायरे में ला सकती है। दीवार पर टँगी तस्वीरें, टेबल पर रखी वह संगमरमर की मूर्ति, मेरा कुर्ता, मेरा रूमाल, मेरा चश्मा, मेरी चप्पल यह सब कुछ उसे अटपटे और बेमतलब से लग रहे होंगे, यहाँ तक कि

मेरे साँस लेने की आवाज भी उसे डरा रही होगी। मुझे मालूम है कि थोड़ी देर के बाद जब बिजली आ जाएगी और बारिश थम जाएगी तब वह उठकर चली जाएगी। एक पल के लिए मुझे लगा कि मैं उसकी तरफ देखकर चिल्लाकर कहूँ–'' मैं इतना गिरा हुआ इंसान नहीं हूँ जो तुम्हारे साथ कोई गलत हरकत करने की सोचूँ.....''। एकाएक सारी बत्तियाँ एक साथ जल उठी। कमरे में रोशनी फैल गई। बारिश भी थम चुकी थी। वह औरत उठकर खड़ी हो गई। तभी उसका आँचल बच्चे के शरीर से सरक गया। मैं यह देखकर आश्चर्य चकित रह गया कि बच्चे के शरीर पर एक भी कपड़ा नहीं है। वह बच्चा हिल–डुल नहीं रहा है, पूरी तरह अकड़ गया है। शायद वह मरा हुआ है। बहुत समय पहले ही मर गया था, शाम होने से पहले या फिर बारिश होने से पहले। वह औरत अपना मरा हुआ बच्चा गोद में लिए दरवाजे से निकलकर सीधे सड़क पर तेज चलने लगी। उसे मैं रोक नहीं सका, न ही कुछ पूछ सका। मेरी नजर बहुत देर तक उस औरत का पीछा करती रही। उस वक्त बारिश थम चुकी थी।

❐❐❐

*गायत्री विहार, विनोबा नगर, बिलासपुर–495004, छत्तीसगढ़

चाहता हूँ बचपन में लौट जाना...

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव*

कभी कभार शहर में बने अपने घर के
फर्श में लगे पत्थरों को निहारता हूँ
बरबस मुझे माँ की याद आती है
मुझे वो बचपन याद आता है
कहाँ गया वो प्यारा बचपन का जमाना
फिर उसी बचपन में
मैं चाहता हूँ लौट जाना
माँ को चाहता हूँ जीना
अपने गाँव में बने मिट्टी के घर में
चाहता हूँ खूब नींद भर सोना...
जब कोई त्योहार आता था
माँ का घर के हर कमरे को गोबर से लिपवाना
कभी–कभी तो खुद भी लीप देना
होली दीवाली आने पर मिट्टी के दीवारों को
मिट्टी से पुतवाना
मिट्टी के चूल्हे पर माँ का खाना बनाना
हम सभी भाई–बहन का
लकड़ी के पीढ़े पर बैठकर
चौके में साथ–साथ खाना
तब वो खाने में रोटी की मिठास
साथ में सरसों का साग
माँ का वो निश्छल प्यार, दुलार और मनुहार
कितना बदल गया अब हमारा संसार
आज महँगे होटल के व्यंजनों में
रहता न वो स्वाद
तावे पर एक–एक रोटी बनाना
हम सभी को देते जाना
गाँव के स्कूल में लकड़ी के तख्ती को पहले घोइटना

फिर धागे से दुद्धी लाइन खींच कर
लिखना
दूसरी तीसरी कक्षा में पहुँचने पर
नरकट की कलम से सीसी में बनाई
स्याही से
कॉपी पर लिखना और याद करना
मुंशी जी को सबसे पहले सुनाना
कक्षा में मॉनिटर बनने पर कितना खुश हो जाना
बीस तक पहाड़ा एकबार में सुनाना
याद आता है वो बचपन का प्यारा जमाना...
दोस्तों संग कंचे, गिट्टक, गुल्ली डंडा
कबड्डी व छुपम–छुपाई खेलना
माँ से कितनी चिरौरी कर बाबूजी से
चवन्नी–अठन्नी मिल पाना
मिठ्ठी गोली खरीद कर खाना
न जाने कितने यादों का पुलिंदा
याद आता है वो प्यारा बचपन का जमाना
कैसा था सच में बहुत ही सुहाना...
काश लौट आएं वो बचपन के दिन
माँ अपने हाथों से मुझे रोटी खिलाएँ
दूध का भरा गिलास पीने को दे जाएँ
न कोई चिंता न ही फिक्र
दोस्तों संग खेलकर आऊँ
कभी–कभी बाबूजी से मार खाना
काश ! लौट आए वो प्यारा बचपन का जमाना...

❐❐❐

*ग्राम–कैतहा, पोस्ट–भवानीपुर, जिला–बस्ती–272124, उ.प्र.

सौदा

राम नगीना मौर्य*

जैसा कि हम सब भली–भाँति वाकिफ हैं, मकान बनवाने के काम में अमूमन आक्रिटेक्ट, मजदूर, राजमिस्त्री, प्लम्बर, इलेक्ट्रीशियन सहित बालू, सीमेण्ट, सरिया, ईंट, गिट्टी, मोरम, के साथ–साथ बाँस, बल्ली, चाहली, सीढ़ी, पटरों आदि बिल्डिंग–मैटेरियल्स की भी आवश्यकता पड़ती है। हमारे मकान के निर्माण कार्य की देख–रेख एवं उससे जुड़े सारे काम–काज पिताजी ही देख रहे थे। साथ ही इंजीनियर होने के नाते आक्रिटेक्ट सम्बन्धी कार्य भी उन्हीं के मार्ग–दर्शन में चल रहा था। भूतल की छत पड़ जाने के उपरान्त, लिण्टल से सम्बन्धित ढ़ाँचे को अमूमन महीने–भर के अन्दर खोल देना था लेकिन शहर में अचानक कर्फ्यू लग जाने के कारण बाँस, बल्ली, चाहली, सीढ़ी, पटरों की देख–रेख, चौकीदारी के लिए हमारे राजमिस्त्री हीरालाल और एक मजदूर को छोड़कर, बाकी सभी मजदूर अपने–अपने गाँव चले गये। इन्हीं सब कारणों से लगभग ढ़ाई महीनों से छत की ढ़लाई में प्रयुक्त किये गये बाँस, बल्ली, चाहली, सीढ़ी, पटरे, आदि बिल्डिंग–मैटेरियल्स भी नहीं हटाये जा सके। शहर में कर्फ्यू लगा होने की वजह से इनका किराया दिन–ब–दिन बढ़ता ही जा रहा था। तिस पर कोढ़ में खाज ये कि सरन बिल्डिंग मैटेरियल्स के मालिक का लड़का सुरेन्द्र लगभग आये दिन ही इन बिल्डिंग–मैटेरियल्स के किराये के लिए तगादा करने हमारे प्लॉट पर चला आता। हमारे समक्ष अजीब पशोपेश वाली स्थिति थी। पिताजी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि इस आकस्मिक विपदा से कैसे निबटा जाये ? एक दिन दोपहर में अर्द्धनिर्मित अपने मकान के आगे स्थित नीम के पेड़ के नीचे, मन्द–मन्द चल रही मलय–समीर के बीच चारपाई पर लेटे–लेटे ही पिताजी ने कुछ गुणा–भाग किया।

उन्होंने अंदाजा लगाया कि छत की ढलाई में प्रयुक्त इन बिल्डिंग–मैटेरियल्स का अब तक जितना किराया हो गया होगा, उतने में तो हम ये सारा बिल्डिंग–मैटेरियल्स नये सिरे से भी खरीद सकते हैं। यही सब जोड़–घटाव, गुणा–भाग लगाते हुए अगले दिन दोपहर को पिताजी सरन बिल्डिंग–मैटेरियल्स की दुकान पर ही जा पहुँचे। ''सरन साहब, नमस्कार।'' दुकान पर काउण्टर के पीछे अपनी कुर्सी की पुश्त से सिर टिकाए सरन साहब लगभग उँघ से रहे थे। छत से टँगा सीलिंग–फैन, जो आवाज ज्यादा कर रहा था, लेकिन हवा धीमें–धीमें दे रहा था, हौले–हौले घूम रहा था। ''जी, बाउजी ! नमस्कार। आप सहाय साहब है न ?'' अधखुली नींद से जागते हुए सरन साहब ने पिताजी से लगभग अकबकाते हुए पूछा। ''जी, सही पहचाना आपने।'' पिताजी ने उन्हें मुस्कुराते हुए आश्वस्त किया। ''कैसा चल रहा है, आपके मकान का कार्य ?'' सरन साहब को जैसे कुछ याद आया हो। उन्होंने ये औपचारिक सा प्रश्न दागा। ''अजी, कैसा चलेगा ? आप तो जानते ही हैं कि हमारे मकान के भूतल की छत की ढलाई का कार्य जैसे ही पूरा हुआ, उसके सातवें दिन ही शहर में कर्फ्यू लग गया। मजदूर भी सभी काम छोड़–छाड़ कर अपने–अपने गाँव चले गये। अब ऐसे में जो लिण्टल लगभग महीने–भर के अन्दर खुल जाना चाहिए था, मजदूरों के अभाव में लगभग ढ़ाई महीने से अटका पड़ा है। तिस पर बिल्डिंग–मैटेरियल्स का आपका किराया अलग से दिन–ब–दिन बढ़ता ही जा रहा है। आप तो जानते ही हैं कि निर्माण सम्बन्धी कार्यों में सब कुछ आपके सोचे–समझे अनुसार नहीं होता। वो कहावत तो आपने भी सुनी होगी...'ये मिस्त्री, कारीगर लोग काम पर आते तो हमारी इच्छा से हैं, लेकिन जाते अपनी मर्जी से हैं।'' ''सहाय साहब, ये तो आपने एकदम सही बात कही। स्थितियाँ–परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी बन जाती हैं लेकिन, मकान बनवाने के काम में तो ये सब घट–बढ़ चलता ही रहता है। लागत हम यदि एक मान कर चलते हैं, तो खर्चा अमूमन उसके डेढ़ गुने से ज्यादा ही हो जाता है। अब हमें ही देखिये ! कोई भी बिजनेस कीजिए, ढ़ेरों अनिश्चितताओं से भरा होता है लेकिन मुझे लगता है कि ये बिल्डिंग–मैटेरियल्स के बिजनेस का काम तो और भी अनिश्चितताओं वाला है।'' सरन साहब ने पिताजी की बातों को निरपेक्ष–भाव लेते, अपना ही रोना रोते, अपनी तरफ से ये बहुमूल्य विचार व्यक्त किये। ''सही कह रहे हैं सरन साहब।'' पिताजी ने महसूस किया कि मजदूरों के अभाव में महीनों से अटके काम और दिन–ब–दिन बिल्डिंग–मैटेरियल्स के बढ़ते किराये में किसी तरह की रियायत देने के मुद्दे पर, सरन साहब किसी भी तरह के समझौते के मूड में नहीं हैं और न इस दिशा में अपनी तरफ से उन्होंने कोई दिलचस्पी ही दिखाई। ''अब देखिये न सहाय साहब ! इस काम को शुरू करने से पहले मैं भी आपकी ही तरह सरकारी सेवा से रिटायर हुआ था। रिटायरमेण्ट के समय लड़के–बच्चे अभी छोटे ही थे। किसी काम–धंधे में नहीं लगे थे। ऐसे में परिवार चलाने, बच्चों के खाने–कमाने की व्यवस्था होने तक के लिए मुझे रिटायरमेण्ट के बाद भी कोई–न–कोई बिजनेस तो शुरू करना ही था। दोस्तों से सुझाव के बाद ये बिल्डिंग–मैटेरियल्स का काम शुरू किया तो ढ़ेर सारा बिल्डिंग–मैटेरियल्स उधार में ही लाना पड़ा। अजीब टेढ़ा काम है यह। दसियों बार तगादा करने पर भी आज–कल करते, लोग समय पर पूरे पैसे नहीं देते।

हमेशा सिर पर किसी–न–किसी का उधार चढ़ा ही रहता है।'' इस बार हाव–भाव से सरन साहब कुछ निराश–हताश से भी दिखे। ''अब ये तो कमोबेश हर बिजनेस में लगा रहता है। कोई भी बिजनेस करेंगे, उधार–खाता तो चलता ही रहता है।'' पिताजी ने उन्हें बीच में ही टोकना चाहा। ''मेरी पूरी बात तो सुनिये ! बिजनेस से जुड़े ऐसे बहुत सारे काम हैं, जहाँ उधार–खाता नहीं भी चलता। आखिर, दुकान का किराया, दुकान की देख–रेख के लिए रखे गये दो–दो मजदूरों के नियमित वेतन का खर्चा तो देना ही पड़ता है न ? साथ ही ये बिल्डिंग–मैटेरियल्स, सड़क किनारे रखे जाने के बावजूद प्राधिकरण, पालिका वालों के रोक–टोक, हेन–तेन, अटर–पटर अन्य खर्चे आदि मिलाकर महीने में जितनी कमाई होती है, लगभग उतना ही खर्च भी हो जाता है।'' ये कहते सरन साहब छत्तीस कोण का मुँह बनाते, चेहरे पर ऐसे हाव–भाव लाए, मानो वे बिल्डिंग–मैटेरियल्स के अपने बिजनेस से पूरी तरह ऊब चुके हों। ''यानी कि आपका बिजनेस भी 'नो प्रॉफिट, नो लॉस' पर ही चल रहा है ?'' ''जी, यही समझ लीजिए। ऊपर से मेरे साहबजादे की आवारागर्दी में कोई कमी नहीं आ रही है। वो तो सुधरने का नाम ही नहीं ले रहा।'' ''अरे हाँ ! आपके साहबजादे की बात पर याद आया। सुरेन्द्र नाम है न उसका ?'' ''जी हाँ, क्या कोई गड़बड़ी की उसने ?'' यह पूछते, सरन साहब के चेहरे पर चिन्ता और परेशानी के भाव उभर आए। ''नहीं ऐसा कुछ नहीं है। सुरेन्द्र अक्सर मेरी उपस्थिति में या अनुपस्थिति में मकान की सुरक्षा के लिए रखे गये मजदूर से छत की ढलाई में प्रयुक्त बिल्डिंग–मैटेरियल्स का किराया आदि माँगने आ धमकता है। कभी–कभी हमारे उस मजदूर से जद्द–बद्द भी बोलने लगता है। मुझे उसके हाव–भाव से उसकी गतिविधियाँ तो संदिग्ध लगती ही हैं, इरादे भी नेक नहीं लगते। मैं सोचता हूँ कि जब उन मैटेरियल्स के किराये का सौदा मैंने आपसे किया है, तो मैं आपके लड़के को कोई धनराशि या किराये के पैसे क्यों दूँ, आपको ही क्यों न दूँ ?'' पिताजी ने सरन साहब को विस्तार से समझाना चाहा। ''जी, बिल्कुल। आपको उसे पैसे देने भी नहीं चाहिए। बल्कि मैं तो आपको आगाह करने वाला था कि यदि सुरेन्द्र आपके पास उन बिल्डिंग–मैटेरियल्स के किराये के पैसे आदि माँगने या तगादा करने आये तो आप उसे तत्काल मना कर दीजियेगा।'' ये कहते, इस बार सरन साहब की आँखों में खास तरह की चमक दिखी। ''धन्यवाद, सरन साहब। आपने मेरी समस्या का समाधान तो किया ही, सिर से एक बोझ भी कम कर दिया।'' पिताजी भी थोड़ा आश्वस्त हुए। ''वैसे, सच बताऊँ सहाय साहब, मैं तो रोज–रोज की ग्राहकों, मजदूरों की इन चिक–चिक, झिक–झिक से बिल्डिंग–मैटेरियल्स के इस बिजनेस से आजिज आ चुका हूँ। सोचता हूँ कि ये सारे मैटेरियल्स किसी को बेच–बाच कर कोई दूसरा ढंग का काम–धंधा शुरू करूँ। मैंने महसूस किया है कि मेरे साहबजादे सुरेन्द्र को भी यह काम पसन्द नहीं है, तभी तो वो जनाब नित–प्रति दुकान पर न बैठने के बीसों बहाने खोजते रहते हैं।'' इस बार सरन साहब ने अपनी दिली व्यथा कह ही डाली। ''अच्छा ! ऐसा है ?'' मानो पिताजी को मन–वांछित मुराद मिल गयी हो। ''हाँ, मेरे पुत्र जनाब तो लगभग रोज ही कोई नया बिजनेस स्टार्ट करने के आइडिया पर बतियाते, ये अल्टीमेटम भी देते रहते हैं कि अगर हमने जल्द ही कोई नया बिजनेस नहीं शुरू किया, तो वो खुद ही बैंक से या दोस्तों से लोन लेकर कोई नया बिजनेस शुरू कर देगा। कहता है कि मोबाइल, एसेशरीज या जनरल–स्टोर्स की कोई दुकान खोलिए ताकि कम मेहनत में ही अधिक पैसे बनाए जा सकें। ये लड़के मेहनत भी तो नहीं करना चाहते।'' सरन साहब ने अपने पुत्र की कार्य–योजना का खुलासा किया था। ''पर सरन साहब, आप ये क्यों भूलते हैं कि बिजनेस कोई भी हो, बिना मेहनत के तो कुछ भी सम्भव नहीं। फिलहाल, ये तो आप पिता–पुत्र का व्यक्तिगत निर्णय होगा, इसमें भला मैं क्या कह सकता हूँ ? बहरहाल, आपके पास रखे इन सब बिल्डिंग–मैटेरियल्स की कुल कितनी लागत होगी ? मेरे एक जान–पहचान वाले बिल्डिंग–मैटेरियल्स का ही बिजनेस शुरू करना चाहते हैं।'' बातचीत के इस चरण में पिताजी ने विस्तार से जानना चाहा। ''ज्यादा नहीं, जो थोड़ा–बहुत बिल्डिंग–मैटेरियल्स एक–दो साइट्स पर मौजूद हैं, और जो यहाँ आपको दिख रहे हैं, इन्हें लेकर यही कोई सात या आठ हजार के मैटेरियल्स बचे हैं। हाँ याद आया, कुछ हमारे मकान के अहाते में भी रखे हैं।'' सरन साहब को जैसे कुछ याद आया हो। ''यानी मोटा–मोटी आपको कुल दस हजार रुपये तक दिलवा दिये जायें, तो आपका काम आसान हो जायेगा ?'' पिताजी के मन–मस्तिष्क में आशा का संचार हुआ। ''जी, सहाय साहब। आपने एकदम सही हिसाब–किताब लगाया।'' ये कहते सरन साहब की आँखों में भी खास तरह की चमक दिखी। ''तो ठीक है, मैं कल अपने दोस्त को लेकर आपके पास हाजिर होता हूँ। तब–तक आप इन मैटेरियल्स को अपने मजदूरों से इकट्ठा करवाकर, एक साथ बँधवा दीजिए और हाँ ! जो मैटेरियल्स आपके घर पर अहाते में रखे पड़े हैं, वो भी मँगवा लीजियेगा।'' जी, ठीक है।'' सरन साहब से ये सौदा तय करके पिताजी खुशी–खुशी प्लॉट पर वापस आ गये। ''मकान बनने के बाद आप इन बिल्डिंग–मैटेरियल्स का क्या करेंगे ?'' शाम को पिताजी ने हम सबके सामने जब सरन साहब के नये बिजनेस–ऑइडिया व अपनी भावी योजना के बारे में राज खोले तो हमने पूछा। ''देखो बेटा, मैंने पूरा हिसाब–किताब लगा लिया है। छत की ढलाई में हमारे यहाँ सरन साहब के यहाँ से अब तक जो भी मैटेरियल्स लगे हैं,

उनका आज के दिन तक का किराया रुपये छिहत्तर सौ हुए। अभी हमारे मकान का भूतल ही बना है। प्रथम और द्वितीय तल भी बनना है। इनकी अभी हमें कम–से–कम तीन बार जरूरत पड़ेगी। यानी कि एक ही सामान के लिए हमें तीन–तीन बार किराया देना पड़ेगा। गाहे–बगाहे ऐसी आकस्मिक व आपदा वाली परिस्थितियाँ भी आ सकती हैं जैसी कि अभी आयी हुई है। सरन साहब की दुकान, उनके घर और एक–दो साइट्स पर जो कुछ भी मैटेरियल्स पड़ा है और जो हमारी साइट पर लगे हैं, मैंने इन सभी का सौदा दस हजार रुपये में तय कर लिया है।'' ''यानी, उनके बिल्डिंग–मैटेरियल्स पर अब हमारा मालिकाना अधिकार होगा ? किराया देने के झंझट से भी मुक्ति ?'' मैंने उत्सुकता जाहिर की। ''बिल्कुल।'' पिताजी ने आश्वस्त भाव से कहा। ''लेकिन, ये प्रश्न तो अभी भी अनुत्तरित है कि मकान का कार्य पूरा हो जाने के बाद हम इन बिल्डिंग–मैटेरियल्स का क्या करेंगे ?'' मैंने आशंका जताई। ''देखो बेटा। ये तो सामान्य सी बात है कि मकान का काम पूरा होते–होते इन मैटेरियल्स में कुछ टूट–फूट होगी ही। फिर भी हमारे पास इनमें से लगभग सत्तर फीसद मैटेरियल्स दुरूस्त हालत में तो बचे मिलेंगे ही।'' ''हाँ, वही तो। हम उन सत्तर फीसद मैटेरियल्स का भी क्या करेंगे ?'' इस बार मैंने लगभग खीझते हुए पिताजी से पूछा। ''बताता हूँ। बताता हूँ। तनिक धैर्य रखो। हमारे राजमिस्त्री हीरालाल जी कह रहे थे कि उम्र हो जाने के कारण अब वे राजगिरी के काम में दिक्कत महसूस करते हैं। ऊँची बिल्डिंग्स में काम करने में दसियों तरह के खतरे रहते हैं। वो बिल्डिंग–मैटेरियल्स से ही जुड़ा कोई हल्का–फुल्का काम–धाम शुरू करना चाहते हैं। मैंने उनसे बात कर ली है। मकान का कार्य पूरा हो जाने के बाद मैं ये सारे मैटेरियल्स उन्हें दे दूँगा। वो तो अपनी मजदूरी में इनकी कीमत को एडजस्ट करने की बात कह रहे थे लेकिन मैंने ही उन्हें ये कहते मना कर दिया कि इन मैटेरियल्स से मिले थोड़े से पैसों से हम क्या कर लेंगे ? हमारे मकान का निर्माण कार्य आपके सुपरविजन में बड़ी ही अच्छी तरह से चल रहा है। अतः ये मैटेरियल्स हमारी तरफ से आपको बतौर इनाम होगा।'' प्रत्युत्तर में पिताजी ने विस्तार से खुलासा किया। ''वाह ! यानी, हर्रे लगे न फिटकरी, रंग चोखा–ही–चोखा।'' ''यही समझ लो...।'' ''हाँ, अंकल जी। क्या सोचा है ? हमारे किराये के कुछ पैसे आज दे रहे हैं या नहीं ?'' हम पिता–पुत्र के बीच अभी बातचीत चल ही रही थी कि सरन साहब का लड़का सुरेन्द्र वहाँ अपनी बाइक पर सवार हो पहुँचा। ''अभी तो कुछ नहीं सोचा है बेटा।'' पिताजी ने निश्चिन्त–भाव उत्तर दिया। ''क्यों ?'' सुरेन्द्र ने जिज्ञासा की थी। ''इस बारे में तुम अपने पिताजी से जाकर पूछना।'' ''ठीक है, अंकल जी। आप लोग ऐसे नहीं मानेंगे। लगता है अब मुझे ही कुछ करना होगा।'' सुरेन्द्र ने इस बार तनिक तल्खी दिखाई। ''बेटा, इस विषय में पहले अपने पिताजी से जाकर बात तो कर लो। हमारे उनके बीच इन बिल्डिंग–मैटेरियल्स के सम्बन्ध में सौदा पक्का हो गया है। कल तुम्हारी दुकान पर आकर सारे पैसे चुकता भी कर दूँगा।'' पिताजी ने उसे इत्मिनान से समझाया। ''कैसा सौदा ? किसके बीच ? आप ये किस सौदे की बात कर रहे हैं ?'' ''इस बारे में भी तुम्हें कल पता चल जायेगा।'' पिताजी, सुरेन्द्र के सामने अपनी योजना का खुलासा नहीं करना चाहते थे। ''ठीक है। मैं कल आप लोगों का अपनी दुकान पर इन्तजार करूँगा।'' कहते–भुनभुनाते हुए सुरेन्द्र अपनी बाइक पर सवार हो, हमारे प्लॉट से वापस चला गया। ''ई सुरेन्दरवा पूरा अबलह ही है। उसे पता ही नहीं कि ई बेवकूफ जउने स्कूल में पढ़े होगा, सहाय साहब उहाँ के प्रिंसिपल रहे होंगे...हें–हें–हें।'' पास ही खड़े राजमिस्त्री हीरालाल जी ने टहोका–सा लिया। यह सुनकर पिताजी, हीरालाल जी और मेरे चेहरे पर खास तरह की मुस्कुराहट तैर गयी। सरन साहब का लड़का सुरेन्द्र, फिर कभी हमारे प्लॉट पर नहीं आया। शहर में कर्फ्यू खत्म होने के बाद हमारे मकान का प्रथम, द्वितीय तल भी शीघ्र बनकर पूरा हो गया। हाँ ! बताता चलूँ, हीरालाल राजमिस्त्री का बिल्डिंग–मैटेरियल्स का काम भी आजकल ठीक–ठाक चल रहा है।

❐❐❐

*5/348, विराज खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010, उ.प्र.

जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं, आपका कोई राष्ट्र नहीं

मुंशी प्रेमचंद

हिन्दी में भारत की आत्मा है।
हिन्दी की वाणी में भारत बोलता है, भारतीय संस्कृति बोलती है

भाई योगेन्द्र जी

झारखण्ड राज्य के जल पुरुष पद्मश्री साईमन उराँव

नवीन कुमार सिन्हा*

यह कहानी है अपने जीवन काल में ही किंवदंती बन चुके जल पुरुष के नाम से जाने वाले पद्मश्री साईमन उराँव की। आज से छियासी–सतासी वर्ष पहले इनका जन्म झारखण्ड की राजधानी राँची से लगभग 40–42 कि.मी. दूर राँची–गुमला मार्ग पर स्थित बेड़ो नामक कस्बे के एक छोटे से गाँव खक्सी टोली में हुआ था। इनके पिता एवं चाचा बहुत गरीब किसान थे। इन्होंने अपने गाँव एवं परिवार की गरीबी छुटपन से ही देखी थी और स्वयं भी वर्षों गरीबी की मार से परेशान रहे। कई–कई दिन इनका परिवार फाकाकसी में गुजारा करने को अभिशप्त था। उस समय पूरे साल में केवल एक ही फसल धान उपजता था; किन्तु सूखा पड़ने पर वह भी मार खा जाता था। इनके पिता एवं चाचा रोजी–रोटी के जुगाड़ में जब मजदूरी करने चाले जाते तब खेतों का काम एवं परिवार की जिम्मेवारी यही संभालते थे। पूरे गाँव में एवं आस–पास भी अभाव ही अभाव था। जंगल माफिया इनके जंगलों की लकड़ियाँ बेच–बेच कर मालामाल हो रहे थे और इन सबकी स्थिति बद–से–बदतर होती जा रही थी। ये सब देख इनका मन चीत्कार कर उठा और उन्होंने कुछ ऐसा करने का प्रण लिया जिससे लोग गरीबी के दंश से छुटकारा पा सकें। अगर मन में सच्ची लगन एवं निष्ठा हो तो कठिन से कठिन काम आसान हो जाता है और रास्ता भी खुद–ब–खुद बन जाता है।

राह में कठिनाइयाँ तो आती हैं मगर लगन एवं संकल्प से व्यक्ति इच्छित लक्ष्य प्राप्त कर ही लेता है। हम सबने अपने जीवन में बहुत सारी प्रेरक कथाएँ पढ़ी हैं और सुनी हैं। बुद्ध, महावीर, ईसा, मूसा, सुकरात, पैगम्बर, अरस्तू, लाओत्से, कनफ्यूसियस आदि अनेक महापुरुषों ने अपने कार्यों से जगत को प्रकाशित किया है और मानव मात्र को जीवन की राह दिखाई है। आधुनिक काल में गाँधी का उदाहरण हमारे सामने है। कुछ ही वर्ष पहले लक्ष्मी बाई, चाँद बीबी, तात्या टोपे, राजा राम मोहन राय, सुभाष चन्द्र बोस, जिने–डी–आक्र, मार्टिन लूथर किंग और न जाने कितने और भी महान लोगों ने मानव मात्र को रास्ता दिखाया। मदर टेरेसा ने ममता का जो बेमिशाल आदर्श प्रस्तुत किया उससे कौन वाकिफ नहीं है ? अपने लिए तो हर व्यक्ति जीता है मगर कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो बड़ी सोच रखते हैं और समाज बदलने की क्षमता रखते हैं। श्री साईमन उराँव भी कुछ कर गुजरना चाहते थे ताकि उनका गाँव एवं आस–पास खुशहाली का जीवन पा सके। कुछ खास करने की चाहत ने श्री राजेन्द्र सिंह एवं सुश्री मलाला यूसूफजई को आम से खास बना दिया और इसी खास करने की ख्वाहिश ने श्री उराँव को झारखड का जल पुरुष बना दिया। जंगल माफियाओं से टकराना आसान नही था; इसमें जान जाने का भी खतरा था पर साईमन ने हिम्मत नहीं हारी। अपने पास–पड़ोस में लोगों को जागरूक करना आरम्भ किया और जंगल एवं जल की महत्ता बतायी। वर्षों की मेहनत रंग लाई और इन्होंने लोगों की मदद एवं एकजुटता से जंगल माफियाओं को पूरी तरह खदेड़ दिया। जल की निरंतर उपलब्धता के

लिए इन्होंने कई तालाबों–पोखरों की स्वयं खुदाई की; धीरे–धीरे इस कार्य में उन्हें लोगों का साथ मिलने लगा। बरसात का पानी जो संरक्षण के अभाव में बह जाता था और बर्बाद हो जाता था, उसको उन्होंने रोकने का कार्य शुरू किया। इन्होंने छः लम्बी नहर बनाने का कार्य किया और कई छोटे–छोटे बाँध भी बनवाये ताकि वर्षा जल से पीने एवं खेती का काम लिया जा सके। बाँध कच्चा होने से बरसात में पानी का दबाव नहीं सहने के कारण पानी बह जाता था। इन्होंने सरकार से सहयोग माँगकर बाँधों को कंक्रीट का बनवाया और इस तरह इनके इलाके में जल की कमी दूर हो गयी। जंगलों को बचाने के लिए इन्होंने प्रत्येक वर्ष हजार वृक्षारोपण का संकल्प लिया जो वे आज भी निरंतर कर रहे हैं। जल की समस्या जब हल हो गई तो खेतों से तीन–तीन फसल लोग लेने लगे और जंगलों से बेशकीमती लकड़ियाँ भी मिलने लगीं। इनके कारण आस–पास के 51 गाँवों जैसे हरिहर टोली, जाय टोली, झरिया, गायघाट, नरपटना, खरिया, देशबली आदि में समृद्धि का द्वार खुल गया। इन गाँवों में करीब 1750 परिवार रहते हैं और इनके पास 2500 एकड़ से ज्यादा खेती योग्य भूमि है। अब यहाँ के ग्रामीण पच्चीस से तीस हजार मीट्रिक टन सब्जियाँ राँची, जमशेदपुर एवं कोलकाता तक भेज रहे हैं और उत्तरोत्तर अपनी आमदनी में वृद्धि कर रहे हैं। बिहार में दशरथ मांझी ने अकेले 25 वर्षों तक लगातार छेनी–हथौड़ा के बल पर पहाड़ काट डाला और सर्व–साधारण के लिए सुगम पथ का निर्माण कर दिया। श्री उराँव के प्रयास से जंगल एवं खेतों में जान आ गई। आज जब बेड़ो से बढ़ते इनके गाँव की ओर जायेंगे तो साफ–सुथरे मिट्टी से लिपे–पुते घर, घर–घर में गायें, बकरियाँ, मुर्गियाँ, बत्तखें और पेड़ों पर चहचहाते पक्षियों के मीठे स्वरों को सुन आपका मन नाच उठेगा। ऐसे वातावरण को देख आपके मन में इच्छा अनायास जाग उठेगी कि आज वहीं बस जाएँ। आप यहाँ बहुतायत से आम, कटहल, जामुन, पाकड़, बड़, पीपल, नीम एवं बाँस के झुरमुट देख सकते हैं। आज यहाँ चारों ओर हरियाली का साम्राज्य है। साईमन जी की आज भी दिनचर्या वही है यानी सुबह चार बजे उठ जाना; खेतों में निकल जाना; गाँव के लोगों से मिलना; उनसे वार्तालाप कर उनकी समस्याओं का निदान करना। वे आज भी वृक्षारोपण अनवरत् कर रहे हैं।

ये दृढ़ इच्छाशक्ति के धनी हैं और अपना काम पूरी निष्ठा और लगन से करने में विश्वास करते हैं। इनके द्वारा पूरे समाज को प्रेरित करने, उनके उत्थान के लिए पूरा जीवन समर्पित करने का नतीजा है कि इन्हें पद्मश्री पुरस्कार से भारत के राष्ट्रपति ने सम्मानित किया। सम्मान मिलने के बाद भी इन्हें अहंकार छुआ तक नहीं। जब इनसे इस सम्मान के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बड़ी सादगी से कहा यह पुरस्कार इस पूरे इलाके का है जिनके सहयोग के बिना इस महती कार्य को करना असंभव था। झारखण्ड सरकार ने इन्हें अन्य ग्रामों को प्रेरणा देने के लिए अपना जल दूत बनाया है ताकि अन्य अनेक गाँवों के लोग इनके अनुभव का लाभ उठायें और खुशहाल बनें। इनके कार्यों ने इन्हें इतिहास पुरुष बना दिया है। आखिर मंगल पाण्डे, महामना मदन मोहन मालवीय, राजेन्द्र बाबू, जवाहर लाल नेहरू, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण आम से खास अपने कर्मों के कारण ही बने। जब एकदम साधारण कद काठी, अल्प शिक्षित साईमन उराँव खुशहाली ला सकते हैं तो फिर हम सब ऐसा क्यों नहीं कर सकते ? सही सोच, लगन एवं मेहनत समाज में क्रांति ला सकती है और अदने को भी शिखर पर पहुँचा सकती है जिसके जीते–जागते उदाहरण हैं श्री साईमान उराँव जिन्हें लोग 'बाबा' के नाम से जानते हैं। इनकी स्फूर्ति देख आज भी युवा अचंभित रह जाते हैं। इन्हें व्यस्त, गाँव के लोगों के बीच आज भी आप देख सकते हैं। जब भी आप इनके इलाके में जायेंगे इन्हें लोगों के दुःख–सुख में हमेशा साथ पायेंगे। ऐसे कर्मयोगी सपूतों को उत्पन्न कर धरती फूली नहीं समाती। ऐसे लोग सतत् प्रेरणा स्रोत बने रहते हैं।

❐❐❐

*फ्लैट सं.2–सी, अंजली अपार्टमेंट, हातमा, काँके रोड,
राँची–834008, झारखएड

समय का घोड़ा

नीलोत्पल रमेश*

समय की नब्ज
टटोलती बातें
कभी–कभी अचंभित
तो कभी–कभी भ्रमित
करती रहती हैं

ये बातें जेहन में
ऐसी पैबस्त हो जाती हैं
कि निकलने का नाम ही नहीं लेतीं
लाख कोशिश की जाए
पर कील की तरह
चुभती ही चली जाती हैं

कुछ ऐसी बातें हैं
जो समय शिला पर
खरी उतरती हैं
पर कुछ वैसे लोग हैं
जो उसे खरी कहने पर भी
कतराते हैं

समय का घोड़ा
जब बेलगाम हो जाता है
तो फिर किसी के वश में
आने का नाम ही नहीं लेता

समय का घोड़ा
जब व्यक्ति के ऊपर
सवार हो जाता है
तो वह किसी के
काबू में नहीं आ सकता है
और वह
दौड़ता ही रहता है।

❐❐❐

*पुराना शिव मंदिर, बुध बाजार गिद्दी–ए,
जिला–हजारीबाग – 829108, झारखण्ड

मंसूबा

श्यामल बिहारी महतो*

उन दिनों पत्नी के साथ मेरी भारत चीन जैसी ताना तनी चल रही थी। तभी मैंने पाकिस्तान जैसा एक नापाक चाल चली थी। घर में गाय और माय के अभेद्य किले को तोड़ने की चाल... ! गाय का दाम कल शाम को ही तय हो चुका था। दाम दूध–दुधारू और देह देखकर तय हुआ था। जुमन मियां बूढ़े–बांझ और ''ऐब'' वाले मवेशियों को बेचने का धंधा पिछले कई वर्षों से करता चला आ रहा था। इसके पहले उसका बाप इस धंधे में लगा हुआ था। कहा जाता है एकबार एक बूढ़े बैल ने बौखला कर अपनी दोनों लम्बी सींग को जुमन के बाप के पेट में घूसेड़ दी थी। अस्पताल जाते–जाते रास्ते में उसने दम तोड़ दिया था। इसके बावजूद जुमन ने इसी धंधे को चुना था। वह सुबह तड़के उठता और गाँव–गाँव में घुमता, चक्कर लगाता रहता, बिना खाये–पिये ! जैसे ही कहीं सौदा पट जाता, वहीं गमछी बिछा देता और अल्लाह को याद करने बैठ जाता। मानो अल्ला मियां ने ही यह सौदा तय कराया हो। जुमन मियां पक्का कारोबारी आदमी था। उसके धंधे में आज तक कोई दाग नहीं लगा था। जो बात तय होती, उसे वह खुदा का फरमान समझता था। तय समय पर लोगों को पैसे देकर अपनी ईमानदारी का सिक्का जमा रखा था उसने। यही जान कर हमने भी उसके साथ उधार ही सौदा तय कर गाय दे देने का मन बना लिया था। गाय छः माह पहले ही खरीदी थी मैंने। काली गाय और खैरा उसका बछड़ा, दोनों ही मेरे मन को भा गये थे।

तब मन में दूध से ज्यादा ''गो–सेवा की भावना थी। गाय लेने के वक्त मुझसे कहा गया था कि यह गाय इतनी सुधवा अर्थात् अच्छी स्वभाव की है कि इसे औरतें भी बड़ी आसानी से दूध दूह लेती हैं। औरतें भी से मैंने समझा था कि मर्द तो इसका दूध दूहते ही होंगे, औरतें भी आसानी से दूध निकाल लेती होंगी। आज मुझे गाय के पहले मालिक को बड़ी–बड़ी गालियां देने का जी कर रहा था–कमीने ने कमाल का झूठ बोला था और एक ऐब वाली गाय को मेरे गले बाँध दिया था। दो दिन पहले अपनी कुछ बातों को मुद्दा बनाकर पत्नी ने झगड़ा किया और फिर मायके चली गयी। जाने से पहले तंज कसते हुए कहा था–''कहते हो यह हमारी खरीदी हुई गाय है, दूध निकाल लेना इसके थान से तो जानू....तुम्हारी गाय है... !'' पत्नी की अहम वाली बात और गाय की लात ने मुझे एकदम से पागल कर दिया था। गाय को गोहाल से बाहर कर देने का जैसे मुझ पर भूत सवार हो गया था और इसी जुनून ने जुमन मियां से मिला दिया था। इसके पहले जुमन मियां से मैं कभी मिला नहीं था। नाम के साथ बुलावा सुनते ही वह दौड़ा चला आया था। गाय–गोबर और दूध दूहने के नाम पर हर दिन पत्नी की चख–चख से भी मैं निजात चाहता था। गो सेवा का भूत भी अब सर से पूरी तरह उत्तर चुका था। दो दिन में ही लगा यह गाय मुझे परेशान करके छोड़गी, इससे छुटकारा अब केवल जुमन मियां ही दिला सकता था। पर कैसे ?

अभी तो वह खुद गोहाल के बगल में बनी पक्की नाली में पसरा पड़ा हुआ था। सीधे छाती पर गाय की ऐसी लात पड़ी थी कि जुमन मियां सात जन्मों तक उसे भुला नहीं पायेगा। कहूँ तो गाय मरखनी बन चुकी थी। दो दिन में ही उस पर जैसे लात मारने का भूत सवार हो चुका था। उसकी आँखों में अंगारे दहक रहे थे। जो भी उसके सामने जाता–दुश्मन नजर आता, उसमें मैं भी शामिल हो गया था और उसकी लातों का पहला भुक्त भोगी भी मैं ही बना था। पत्नी का मायके जाने के बाद गाय की थान से दो दिनों में दो बूंद भी दूध निकाल नहीं पाया था। उल्टे अब तक हम उसकी कई लातें खा चुके थे। गुस्साये–तिलमिलाये गाय की दूध की जगह अपनी छठी का दूध याद कर रहा था। यहाँ तक तो किसी तरह सह लिया था, बल्कि दिन की लात भी भुला देने का मन बना लिया था और सोचने लगा आखिर हमारे साथ गाय का यह भेदभाव क्यों ? सुबह कुट्टी के साथ दररा–चारा मिलाकर मैं इसे खिलाता हूँ। गुड़–पानी मैं पिलाता हूँ। फिर दूध देने में इतना भेदभाव क्यों ? दूध की जगह हमें लात क्यों खानी पड़ रही है !

उस दिन शाम को भी गाय से दूध नहीं ले सका। खाली लोटा देख मन तो भड़का परन्तु कुछ सोचकर शांत हो गया था। दूसरे दिन सुबह तो गजब ही हो गया। सहन शक्ति एकदम से जवाब दे गयी। हुआ यूँ कि बछड़े की रस्सी बेटी पिंकी को पकड़ा दी और खुद दूध दूहने बैठ गया। अभी मैंने गाय की थान पर अपना हाथ भी नहीं लगाया था, बस हाथ आगे बढ़ा ही रहा था कि जोर की लात सीधे बांयें पिछबाड़ा पर पड़ी ! यह देख पिंकी डर से चीख पड़ी। तभी बछड़े ने उसे जोर का झटका दिया। वह धम से जमीन पर गिर पड़ी। रस्सी उसके हाथ से छूट गयी। उठने की कोशिश की, वह उठती इसके पहले गाय उधर घूम गयी और कब एक लात उसे भी जमा दी–''बप्पागोबप्पा.... !'' वह चिल्ला उठी तो उसे उठाने दौड़ पड़ा। इसके बाद तो मेरा क्रोध जैसे जाग उठा था। बगल कोने में पड़ा डंडा उठाया और तड़तड़ाकर दो–तीन ठंडे गाय पर चला दिए। अब गाय रंभाने लगी। पिंकी मुझसे लिपट गई। बोली–''छोड़ दो पापा... !'' इधर जुमन मियां फिर उठ खडा हुआ था। लेकिन अभी तक वह

गाय गोहाल से निकाल नहीं पाया था। परन्तु वह भी जानवरों का पक्का लतखोर और थेथर आदमी था। सो पुनः आगे बढ़ा था। उस वक्त हमारा गोहाल एक रणक्षेत्र में बदल चुका था। एक छोर में मै था, मेरी बेटी पिंकी थी और अपने अल्ला को याद करता जुमन मियां था। वहीं दूसरी ओर काली गाय और उसका खैरा बछड़ा था। युद्ध शुरू हो चुका था। जुमन मियां को बिगड़ैल जानवरों की जानकारी थी। जिद्दी भी था। किस जानवर को कैसे काबू में किया जाये, इसका बपौती हुनर था उसके पास। वह आगे बढ़ा था, अपनी सारी शक्तियों को समेट कर अपने मरहूम बाप और खुदा को याद कर। पगहा उसके हाथ में था और गाय ठीक उसके दो हाथ दूर खड़ी थी। जुमन मियां ने एक कदम आगे बढ़ाया। गाय ने जुमन मियां को कसाई की तरह आगे बढ़ते देखा। उसकी क्रोधित आँखें लाल अंगारों की तरह दहक रही थी और रह–रह कर उसके आगे के दोनों पैर आगे–पीछे हो रहे थे। मतलब साफ था। वह जुमन मियां के लिए एक ललकार थी। जैसे कह रही थी–''आओ.. आज हम जीवन का आखरी दांव लगाते हैं.. ! इस घर में या तो मैं रहूँगी या फिर तुम जाओगे..!'' और जुमन मियां ने गाय की गर्दन को लपक लिया था। जिस तेजी से जुमन गाय की गर्दन पर सवार हुआ था। पगहा फँसाता कि अगले ही पल वह दीवार से जा टकराया था। गाय ने दुगुनी ताकत से उसे उछाल दिया था। उसे जोर का चक्कर आया और माथा पकड़ वहीं बैठ गया। उसके सर पर गहरी चोट लगी थी। मेरी आँखों के सामने का यह दृश्य किसी सिनेमायी से कम नहीं था। सोचा कुछ उपचार कर दूं उसका। यह सोच मैं घर के अंदर गया। इतने में सत बजिया कमांडर गाड़ी से पत्नी मायके से वापस लौट आयी। आँगन में उसे जुमन मिल गया ''तुम मेरे घर में.... ?'' आवाज रौबदार थी। रूई और डिटॉल लिए बाहर निकला तो देखा जुमन मियां गायब ! पत्नी हवलदार की तरह आँगन में हाजिर है, अपनी पूरी हसरतों के साथ।

❐❐❐

*तारमी कोलियरी, कार्मिक विभाग, सीसीएल, पोस्ट–तुरीयो
जिला–बोकारो, झारखंड।

... पृष्ठ 28 का शेष

इस नाजुक समय में यानी कि उनके बुढ़ापे में हम लोगों की कितनी जरूरत होगी और हमलोग उनसे कोसों दूर शहर में रह रहे हैं। सोचिये, उन लोगों के दिलों पर क्या बीतती होगी।''

''मैं खुद उनसे अलग होकर यहाँ नहीं आई हूँ बल्कि तेरे अब्बू मुझे यहाँ लेकर आये हैं।'' ''नहीं, ये बिल्कुल झूठ है। आप लड़–झगड़कर कर दादा–दादी से अलग रहने की जिद करके यहाँ आईं थीं।''

रात के दो बज रहे थे। पूरे घर में जैसे सोता सा पड़ गया था लेकिन उस्मान और फरहाना की आँखों से नींद कोसों दूर चली गई थी। पहलू बदलते हुए उस्मान ने फरहाना से कहा–''एक बात कहूँ ?'' '

'हूँ...।''

''मुझे तो बहुत डर लग रहा है।''

''किस बात से ?'' ''उसी बात से जो बात आज अकील शाम को कह रहा था।''उस्मान बोला। ''अरे ! अकील अभी बच्चा है। ऐसे ही कह रहा है। ऐसा करेगा थोड़ी ही।'' ''नहीं, वो जो देख रहा है वही तो सीख भी रहा है। कल को अगर वो सचमुच में हमें छोड़कर चला गया तो मैं, तो उसके बिना रह ही नहीं पाऊँगा। अकील तो मेरी जान है।'' ''भला मैं कैसे रह पाऊँगी ? उसके बिना।'' ''तो सोचो, हमारे अम्मी–अब्बू हमारे बिना कैसे रहते होंगे ? आखिर हम भी तो उनकी जान ही हैं।'' ''क्या, सचमुच ऐसा होगा।'' ''हो भी सकता है। नहीं भी हो सकता।''

''मैं, उसे कहीं जाने नहीं दूँगी।''

'कैसे नहीं जाने दोगी ? मेरे अम्मी–अब्बू भी तुम्हारे साथ मुझे यहाँ आने से कहाँ रोक पाये थे।'' ''फिर, कल को हम अकीदा को भी ब्याह देंगे। फिर हमारा ये घर भी तो सूना हो जायेगा। बच्चों के बिना घर तो भूतों का डेरा बन जाता है।'' ''बूढ़ों के बिना भी तो घर सूना–सूना लगता है।'' ''हूँ, फिर.. ?'' ''फिर क्या हमें वापस अपने घर चलना चाहिए। अम्मी–अब्बू के पास।'' ''और कोई रास्ता भी नहीं है।''

अगले दिन ईद थी। सुबह फरहाना ने सामान पैक किया और बच्चों को जगाया। भारी–भरकम लगेज देखकर अकीदा ने पूछा–''अम्मी हम कहाँ जा रहे हैं.. ?'' जब उस्मान और फरहाना ने कोई जबाब नहीं दिया तो अकील व्यग्र होकर बोला–''सचमुच में हम कहीं जा रहे हैं क्या... ?'' फरहाना ने ''हाँ'' में सिर हिलाया। ''लेकिन, कहाँ.. ?'' ''वहीं, जहाँ तुम चाहते थे।'' ''कहाँ दादा–दादी से मिलने।'' ''हाँ ..हमेशा के लिये।'' ''नहीं..बिरयानी और खुरमे खाने'' उस्मान हँसते हुए बोले।

अकीदा और अकील दोनों फरहाना से एक साथ लिपटकर बोले–''लव यू मॉम... ! आज एक साल बाद हम अपने दादा–दादी से मिलने जा रहे हैं। थैंक्यू मॉम ... !''

❐❐❐

'श्री बालाजी स्पोर्ट्स सेंटर, मेघदूत मार्केट, फुसरो
बोकारो–829144, झारखण्ड

फेसबुक : निर्धनों का समृद्ध अखबार

ओम प्रकाश मंजुल*

सन 2004 की 4 फरवरी को यानी, 4/2/2004 को जुकरबर्ग ने फेसबुक (एफ.बी.), जो आज विश्व में सोशल मीडिया का सर्वाधिक प्रयुक्त एवं लोकप्रिय एप है, को शुभ मुहूर्त में जन्म दिया था। इस एप की क्रियाविधि की भाँति ही इसकी जन्म तिथि भी कम विलक्षण नहीं है। इसमें 2 शून्य, 2 दो तथा 2 चार हैं और अंको का योग 12, यानी 12 महीने सतत् चलते रहने की याद दिलाने वाले प्रतीक के रूप में हैं। कह नहीं सकते, यह जुकरबर्ग का जुगाड़ है या कुदरत का कमाल है। प्रेम के मामले में फरवरी जितना पाक–पवित्र मास माना जाता है, उतना रमजान और सावन का महीना भी नहीं माना जाता। 'प्रेम दिवस', जिसे 'वैलेंटाइन डे' भी कहते हैं, पवित्र फरवरी की ही 14 तारीख को आता है। प्रेम–प्रचार का आजकल सोशल मीडिया से अधिक सस्ता, सशक्त और लोकप्रिय अन्य कोई माध्यम नहीं है। अब वह जमाना जा चुका है, जब प्रेमी–प्रेमिका कबूतर के गले में प्रेम पत्र लटका कर 'कबूतर जा जा जा' कहते हुए उन्हें गंतव्य की ओर सी आफ कर देते थे। पहले अपुन ने भी दो–चार बार ऐसा किया था। पर, अब, जब सोशल मीडिया की सुविधा प्राप्त है, तो अपुन भी अपने प्रेम–पैगाम एफ.बी. के माध्यम से प्रेषित करते हैं।

सोशल मीडिया से संदेश अति शीघ्र पूरी दुनिया में पहुँच जाता है और 'अपना पैगाम मोहब्बत है, जहाँ तक पहुँचे'। प्यार ही क्यों, किसी भी प्रकार के प्रचार–प्रसार के लिए एफ.बी. से अधिक शीघ्रगामी और सुदूरगामी अन्य कोई माध्यम नहीं है। अब मात्र स्थानीय व क्षेत्र के कागजी अखबारों में छपने के लिए माइक, मंत्री, दरी, फर्नीचर, चाय, समोसा, श्रोता, वक्ता आदि को जुटाकर पुस्तक विमोचन आदि के कर्मकांड लगभग मूर्खता के पर्याय बन चुके हैं। समझदार लोग अब इन कार्यक्रमों का उद्यापन कर चुके हैं। आज के ऑनलाइन्स पेपर्स ने लाइन्सऑन पेपर को काफी अंशों में निष्प्रभावी कर दिया है। पूर्व जैसे 'विमोचन', 'समर्पण' में एक और खतरा है। कोई मुझ जैसा मूर्ख यदि लेखक से कहे,'भाई साहब ! संचालन मुझसे ही कराना। मुझसे अच्छा संचालन कोई नहीं कर सकता' और आपने उससे संचालन नहीं कराया, तो अगला जीवन भर के लिए खुन्नस मान बैठेगा। वास्तव में एफ.बी. विश्व भर के उन लोगों का अखबार है, जिन्हें कोई कागजी अखबार, यानी, न्यूज पेपर छापने का साहस और मन नहीं करता है। कम–से–कम भारत के सारे अखबार इतने अच्छे हैं कि मेरे जैसे घटिया लेखक को नहीं छाप सकते। संभव है साम्यवादी तंत्र में कोई ऐसे लेख छापने वाला समाचार पत्र हो। पर, बेचारे साम्यवादियों की भी धारणाओं, मान्यताओं तथा पूर्वाग्रहों की सीमाएँ इतनी अच्छी हैं कि वे भी अच्छे अखबार ही हैं। वे भी हम जैसों को नहीं छाप सकते। अलबत्ता वे कितने ही अच्छे अखबार हों, तब भी पूँजीपति स्वामियों के द्वारा निकाले जाने वाले अखबारों जितने अच्छे नहीं हो सकते। पूँजीवादी पत्रों के सम्पादकों की स्वामिभक्ति दर्शनीय होती है। सम्पादक, जो अमूमन वेतनपाई ही होता है, मार्क्स पर फर्स्ट क्लास फर्स्ट मार्क्स लेकर आया हो या लेनिन पर डी.लिट. करके, लेकिन वह गीत व गीता पूँजीवाद की ही गाएगा। अन्यथा बेचारे पर उसी दिन गाज गिर जाएगी। पत्रकारिता को लोकतंत्र का 'चतुर्थ स्तंभ' और पत्रकार व सम्पादक को कितना ही 'स्वतंत्र', 'निष्पक्ष' और 'निडर' कहा जाए, पर 'दास कैपिटल' का भक्त सम्पादक भी पूँजीपति अखबार मालिक का क्रीतदास होता है। यह नियति व विडम्बना लगभग सारे सामयिकों के सम्पादकों की है। दैनिक, जो अधिकतर पूँजीपतियों के ही होते हैं, अपवाद को छोड़कर, निकलते ही इसलिए हैं कि अखबार के बहाने उनका सरकार व अधिकारियों पर दबदबा बना रहे और उनके अनेक प्रकार के अनैतिक, अनियमित, और अवैध काम निर्विरोध, निर्विघ्न और निर्बाध गति से चलते रहें। कोई लेखक उन्हीं काले कारनामों पर लिखेगा, तो अखबार उसे कैसे छापेगा ? आपने सुना है, आज तक किसी अखबार वाले के यहाँ छापा पड़ा है ? अखबार से देश के शीर्ष अधिकारी प्रभावित रहते हैं, तो नीचे वालों की क्या औकात है।

मुझे एक दैनिक समूह के स्वामी का यह कथन याद आ रहा है, 'मुझे दैनिक के सम्पादक की हैसियत से प्रधानमंत्री (अटल जी) से मिलने में कोई परेशानी नहीं होती थी। जब से सांसद बना हूँ, उनसे (अटल जी से) मिलने में परेशानी हो रही है।' दुनिया का कोई ऐसा सही–गलत काम नहीं है, जो अखबार की आड़ में न हो सके। अखबार सारे काले कारनामों का रक्षा कवच है। आज के जमाने में कागजी अखबार निकालने से अच्छी व बड़ी कोई बहु–उद्देशीय योजना नहीं हो सकती। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा स्व–प्रमाणीकरण (सेल्फ अटेस्टेशन) को मान्य किए जाने जैसी क्रांतिकारी सुविधा आज का सोशल मीडिया का अखबार है। एक जमाना था, प्रपत्रों के प्रमाणीकरण के लिए बहुत परेशान होना पड़ता था (गत सदी के आठवें दशक में जिस विद्यालय में मैं शिक्षक था, उसका प्रिंसिपल प्रत्येक प्रपत्र के सत्यापन के लिए 50 पैसे लेता था। बाद को उसने ₹1 कर दिया जबकि कंपेयरिंग व चेकिंग मेरे जैसे उल्लू अध्यापक किया करते थे)। अब न करो सत्यापन, न लगाओ सत्य प्रतिलिपि प्रमाणित की सील और न बिठाओ उस पर चिड़िया। हम खुद अपने पत्रों को

सत्यापित कर लेंगे, कर ही रहे हैं। न छापो हमारे लेखों को, हम एफ.बी. के स्क्रीन पर अपने लेख खुद प्रकाशित कर लेंगे। कर ही रहे हैं। तुम्हारा कागज का अखबार सीमित क्षेत्र तक ही जाता है, जबकि हमारा एफ.बी. पूरी दुनिया में जाता है। कागजी पेपर पर एफ.बी. पेपर का एक अन्य बड़ा लाभ यह है कि कागजी पेपर का सम्पादक जिन चीजों को छिपाता है, उन्हीं को इस पर धड़ल्ले से छापा जा सकता है। छापा ही जा रहा है। अखबारों के मालिक 'सम्पादक धर्मांध ठेकेदारों की धमकियों से बहुत डरते हैं। (हालाँकि अब मोदी–योगी के जमाने में मजहबी खतरावादियों की 90% धमकियाँ स्वयमेव खत्म हो चुकी हैं) मोदी–योगी युग से पूर्व कोई दैनिक इस तरह का एक भी वाक्य नहीं छाप सकता था जिसमें 'कुरान' और 'आग' शब्द साथ–साथ आएँ। भले ही वे कुरान के हित में ही क्यों न हों। जैसे, 'कुरान आग से दूर रखें'। अब कोई सचानवादी, यानी सचानात्मक (सचान की आत्मा वाला) सम्पादक निर्दोष लेखक रूपी पक्षियों को यह कहकर परेशान नहीं कर सकता– 'इस टॉपिक पर नहीं, उस पर भेजो। इसका टाइम निकल चुका है। 'इसे भेजो, तो कहता है,' इसका अभी टाइम नहीं आया। टाइम आने पर छापेंगे। 'व्यंग्य भेजने पर कहता है,' यह मामला हल्का–फुल्का नहीं है। इस पर गम्भीर लेख भेजो और गम्भीर लेख भेजने पर कहता है, 'यह मामला गम्भीर नहीं है।

इस पर हल्का–फुल्का व्यंग्य भेजो' और छापता कभी नहीं है। सचानवादी सम्पादक की इन हरकतों पर अपुन को प्रसिद्ध लेखक, बेकन की यह उक्ति याद आ रही है–एक युवक एक शादी–सलाहकार के पास अपनी शादी के बारे में सलाह लेने गया। सलाहकार ने कहा, 'अभी नहीं, अभी तुम्हारी शादी योग्य आयु नहीं है। कुछ समय बाद आना।' युवक जब कुछ समय बाद सलाहकार के पास पहुँचा, तो वह बोला, 'अब नहीं, विवाह की आयु निकल चुकी है।' (हालाँकि सचानवादी सम्पादकों से स्वामियों की ही अंदर–अंदर बहुत क्षति होती है क्योंकि अच्छे लेखक, पाठक तथा लोग इनसे कतराने लगते हैं)। कुछ स्वामी सम्पादक अपनी ही तुकबंदियों को मेकअप करके (ताकि वे कविता जैसी कमनीय लगें) अपने दैनिक में छापते रहते हैं। इससे उनका मन भी बहलता है और दैनिक भी नियमित बना रहता है। ऐसे ही कुछ सम्पादक दैनिक की नियमितता न टूटे, इसलिए जब दूसरों के अच्छे लेख नहीं मिलते, तो अपने ही लेख लगा देते हैं (जो वास्तव में अच्छे भी होते हैं)। मन बहलाने और आत्मा को शांति देने वाले ये कार्य एफ.बी. पर थोक के भाव हो रहे हैं। यदि जुकरबर्ग साहित्यकारों को कोई मानदेय नहीं देते, तो 90% दैनिक भी मानदेय तो दूर, दिहाड़ी भी नहीं देते। एफ.बी. पेपर बस दो कामों में कागजी पेपर से कमजोर पड़ जाता है–एक, इस पर कोई सम्पादक दूसरे के द्वारा टाइप लेखों को अपने नाम से नहीं छपाता, जैसी कुछ स्वनामधन्य दैनिकों में आद्य परंपरा रही है। उनके यहाँ पूर्व सम्पादक के भूतपूर्व बनते ही उनका लेखक पुत्र यशस्वी सम्पादक बन जाता है (भले ही वह मूर्ख नंबर वन क्यों न हो)। दूसरा, कागजी अखबारों को सालों–साल मालामाल करने वाले विज्ञापन इसे नहीं मिलते। (एक जमाना था, जब पेपरों को देशभक्त और राष्ट्रवादी लोगों व संस्थानों से ही एड मिला करते थे। आज साल के 365 से अधिक दिनों और 12 से अधिक महीनों में एड के बहाने अखबारों को सर्वाधिक एड ठेकेदारों, कोटेदारों, नेताओं, पुलिसियों, बीमा–एजेंटों तथा पंचायत व सहकारी समितियों के सचिवों से मिला करती है। आज टीबी, कैंसर, आँख, कान, घृणा, प्रेम, मूर्ख, मास्टर, स्तनपान, तम्बाकूपान आदि सभी दिवसों का विवरण तैयार किया जाए, तो साल में 365 से बहुत अधिक दिन बैठेंगे। ऐसे ही 12 महीनों में 1 महीना से अधिक विज्ञापन दिवस निकलेंगे, तो साल में 13 महीने बैठेंगे)। एफबी पर एक विशेष सुविधा यह भी है कि किसी वस्तु या भाव का नाम याद न आने पर इमेजों व इमोजिओं से काम चला सकते हैं। मसलन–पप्पू, लुल्ल, शेखचिल्ली आदि शब्द याद न आएँ, तो इनके लिए इनको चरितार्थ करने वाले दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश के बच्चे व बचकाने (भी) नेताओं के चित्रों को छापा जा सकता है। अलबत्ता जुकरबर्ग जी यदि अकिंचन से राय लिए होते, तो वह उन्हें यह राय अवश्य देता कि एप का नाम 'फेसबुक' न रखकर 'फेस–टू–फेस' रखें। 'बुक वक्र' 'वुड क्रैफ्ट', 'बुक कीपिंग', बुकिंग विंडा' जैसे शब्द बोलते–बोलते मेरी आदत ऐसी पाजी पड़ गयी कि हम अक्सर 'फेसबुक' न कहकर 'बुक फेस' कह जाता हूँ। यदि यह 'फेस–टू–फेस' होता, तो आगे या पीछे किधर से भी कहता, कोई गलती नहीं होती। हम ऐसी गलती लालू जी की तरह कई बार कर चुके हैं। मसलन–एकबार एक कार्यक्रम में अपुन भाषण देते समय सी.डी.ओ. को डी.सी.ओ. कह दिया था, तो बहुत लज्जित होना पड़ा। एकबार तो ऐसी गलती के कारण बेटे के ब्याह से हाथ धोना पड़ गया। लड़की वाले को लड़के की शिक्षा बताने पर ऐसा हो गया। मैंने बताया उसकी शिक्षा आई.आई.टी. है। उन्होंने वेतन पूछा, तो मैंने कहा 4–5 हजार मिल जाते हैं। इस पर लड़की का बाप झल्लाकर बोला, 'उल्लू ! यह क्यों नहीं कहता कि तेरा बेटा आई.आई. टी. नहीं, आई.टी.आई. है।' हमारे सम्मान की सर्वाधिक धज्जियाँ तब उड़ी, जब हम एक शादी के मामले में अपने एक रिश्तेदार की शैक्षिक योग्यता डी.पी–एच.(डिप्लोमा) की जगह पी–एच.डी. (डिग्री) बता गया। बहरहाल मानवता की सेवा में समर्पित श्री जुकरबर्ग एण्ड उनके फेसबुक को करबद्ध कर फेस–टू–फूट, नाइट एण्ड डे, गुड नाइट एण्ड गुड डे !

❑❑❑

'प्रधानाचार्य, कामायनी काय स्थान, पूरनपुर–262122, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

हाय ! बेचारा पति !

गीता चौबे गूँज*

आज सुबह से ही यह दुनिया कुछ बदली–बदली सी लग रही थी। मैं समझ नहीं पा रही थी कि यह बदलाव किस प्रकार का था परंतु ऐसा लग रहा था कि कुछ तो हुआ है ! दाल में कालिमा की झलक मुझे आते–जाते लोगों की मुख–मुद्रा से साफ दिख रही थी। मैं सोकर उठी तो एक निरे अजनबी ने मुझे हौले–से जगाया। मैं अचकचा गयी कि यह अजनबी मेरे कमरे में कैसे आया ! मेरे पति कहाँ गए ? मैं हड़बड़ा कर उठी और सँभलते हुए कहा, ''आपको इतनी भी तमीज नहीं कि किसी के बेडरूम में इस तरह नहीं जाते हैं और यदि जाना जरूरी हो तो दरवाजे को खटखटाते हैं। फिर इजाजत मिलने पर ही अंदर आ सकते हैं।'' वह अजनबी हाथ में चाय की प्याली लिए भौंचक हो मुँह ताकने लगा। फिर तुरंत मैंने फिर से चिल्लाते हुए कहा, ''अब भी यहीं खड़े हैं ? चलिए ड्राइंग रूम में प्रतीक्षा कीजिए, मैं तैयार होकर आती हूँ।'' ''अरे भई ! मैं तो रोज...'' उसकी बात को पूरी भी नहीं होने दी और दुगुने जोर से चिल्ला उठी, ''रोज आते रहने से क्या आपको बेडरूम में आने का लाइसेंस मिल गया ?'' वह शख्स थोड़ा डर गया, हकलाते हुए बोला, ''म.. मैं तो त.. तुम.. मेरा मतलब आ.. आपका पति.....'' ''माना कि आप मेरे पति के दोस्त हैं, परंतु इतना शिष्टाचार तो आना ही चाहिए कि कब और किससे घनिष्ठता दिखानी है। मुझे ऐसे लोग कतई पसंद नहीं। आज के बाद अपनी शक्ल मत दिखाइएगा मुझे कभी.... !'' मेरी धौंस सुनकर उस शख्स ने वहाँ से जाने में ही अपनी भलाई समझी। इधर मुझे अपने पतिदेव पर इतना गुस्सा आ रहा था कि इतनी सुबह–सुबह कहाँ चले गए ? थोड़ी देर के बाद घर की घंटी बजी। शायद कामवाली आयी हो, सोचकर दरवाजा खोला तो सामने एक अपरिचित कामवाली खड़ी थी। उसे देखकर मैंने सोचा कि मेरी कामवाली आज व्यस्त होगी, सो किसी को भेज दिया होगा काम करने के लिए। अंदर आकर बिना बताए किचेन की ओर जाते देखकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि यह तो ऐसे जा रही है जैसे इसी घर में काम करने की अभ्यस्त हो। फिर भी अपनी सोच को मैंने झटक दिया कि क्या पता मेरी कामवाली के साथ कभी आयी हो, मुझे ध्यान नहीं आ रहा हो। वैसे भी शहरों की सारी कामवालियाँ इतनी ट्रेंड होती हैं कि उनके साथ ज्यादा माथापच्ची नहीं करनी पड़ती। मुझे एक साहित्यिक गोष्ठी में जाना था। पतिदेव अभी तक नहीं आए थे। मेरा गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। मैं भुनभुनाने लगी..... ''इनको पता था कि आज गोष्ठी में जाना है, फिर भी अभी तक नहीं आए ! क्या करूँ ? समय तो हो गया है।'' तभी याद आया कि एकबार इन्होंने ही कहा था कि ''मेरा इंतजार न कर, तुम ताला लगाकर चली जाया करना। मैं अपने हिसाब से आकर खा लूँगा।'' मैंने घर को ताला लगाया और गोष्ठी के लिए ओला बुक कर निकल पड़ी। गोष्ठी में एक भी परिचित चेहरा न देखकर मुझे भ्रम हो आया कि मैं कही गलत जगह तो नहीं आ गयी! एक भी सखी नजर नहीं आ रही। कहाँ गयीं सारी ? सारिका जी तो इतनी समयनिष्ठ हैं, वे भी दिखाई नहीं दे रहीं। मेरा माथा ठनका कि आज सुबह से मेरे साथ यह क्या हो रहा है ? हालाँकि गोष्ठी में शामिल सभी सदस्यों ने मुझे हाथोंहाथ लिया। मैं सोच रही थी कि कितनी अच्छी हैं ये सारी ! पहली बार मिलने पर भी मुझसे ऐसे मिल रही हैं, मानों बरसों की जान–पहचान हो। उनकी आत्मीयता को देखकर मुझे भी वैसी ऐक्टिंग करनी पड़ी कि मैं भी उन्हीं में से एक हूँ। सब कुछ बहुत बढ़िया से हुआ। मुझे अपनी कविता भी अच्छी तरह याद थी। पूर्व की तरह काव्य–पाठ किया और घर आ गयी। थकान महसूस होने पर थोड़ी देर लेट गयी जिससे नींद आ गयी। नींद में ही मुझे ऐसा अहसास हुआ कि कोई किसी से कुछ कह रहा था..... शायद ब्रह्मा जी थे जो देवशिल्पी विश्वकर्मा जी को डाँट रहे थे, ''देव विश्वकर्मा ! इस औरत के दिमाग का स्क्रू ढीला हो गया था। तुम्हें कसने के लिए बुलाया तो तुमने कसना तो दूर इसका दिमाग ही उल्टा–पुल्टा कर दिया। कितनी परेशान रही यह दिन भर..... !'' ''हाँ तात! स्क्रू ठीक से बैठ नहीं रहा था। शायद मेमोरी चिप तिरछी हो गयी हो, यह सोचकर स्क्रू खोल दिया। तभी लगा कि औरत अब उठने वाली है तो जल्दी–जल्दी मैंने दिमाग की सारे उपकरण सेट किए। आँखों को मस्तिष्क से जोड़ने वाला मेमोरी–विजन–तार जुड़ नहीं पाया। मैंने सोचा एक दिन की तो बात है, ऐसे ही फिट कर देता हूँ। ज्यादा–से–ज्यादा क्या होगा ! यही न कि इसकी आँखें जो भी देखेंगी, मष्तिष्क उसे पहचान नहीं पाएगा। एक दिन किसी तरह निकल जाए फिर जब सोने आएगी तो दुबारा सही ढंग से सेट कर दूँगा। अब तो कर भी दिया।'' इस पर ब्रह्मा जी ने कहा, ''वो सब तो ठीक है, पर मैं यह सोच कर परेशान हूँ कि और सब तो कुछ ज्यादा नहीं बिगड़ा किन्तु अब यह औरत अपने पति को कैसे मनाएगी ?''

❐❐❐

*फ्लैट नं. 1013 आर.आर. सिगनेचर अपार्टमेंट, बालाजी लेआउट, चौकन्ना हल्ली थानीसंद्रा, मेन रोड, बेंगलूर–560064, कर्नाटक

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार के मंच पर विराजमान मुख्य अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार, श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.व.से., सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर, इस संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

सेमिनार की मुख्य अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण।

दीप प्रज्वलित कर सेमिनार का उद्घाटन करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार।

सेमिनार के दौरान संस्थान द्वारा लगाये गये स्टॉल का उद्घाटन करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार।

संस्थान के कीट विज्ञान अनुभाग के नये प्रयोगशाला का उद्घाटन करते श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.व.से., सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर।

सेमिनार के दौरान प्रकाशित शोध–पत्र संकलन का विमोचन करते मुख्य अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार, श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.प्र.से., सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर, इस संस्थान के निदेशक डॉ.के.सत्यनारायण एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

संस्थान की गतिविधियाँ

राष्ट्रीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार में उपस्थित वैज्ञानिकों/अधिकारियों/ कर्मचारियो/किसानों एवं अन्य को सम्बोधित करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार ।

सेमिनार में उपस्थित वैज्ञानिकों/अधिकारियों/ कर्मचारियो/किसानों एवं अन्य को सम्बोधित करते श्री राजित रंजन ओखंडियार, भा.व..से., सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर।

सेमिनार में इस संस्थान के निदेशक डॉ.,के.सत्यानारायण का सम्बोधन।

सेमिनार में उपस्थित गणमान्य अतिथ/वैज्ञानिक/ अधिकारी/कर्मचारी/किसान एवं अन्य।

सेमिनार में अपना शोध–पत्र प्रस्तुत करते संस्थान के वैज्ञानिक–डी डॉ.कर्मवीर जेना।

सेमिनार में अपना शोध–पत्र प्रस्तुत करते संस्थान के वैज्ञानिक–सी डॉ. जितेन्द्र सिंह।